आलोक तीर्थ
ALOKA TIRTHA

RAMANUJAN COLLEGE
University of Delhi

रामानुजन महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

Srinivasa Ramanujan
22 December, 1887 - 26 April, 1920

THE MAGAZINE HAS BEEN EDITED, DESIGNED & CONCEPTUALISED BY THE IN-HOUSE EDITORIAL TEAM.

THE ILLUSTRATIONS & THE IMAGES HAVE BEEN CREATED BY THE SOCIETIES OF THE CULTURAL COMMITTEE (BRUSHSTROKES & FIRST CUT).

COVER ARTWORK BY PROF. MADHU BATTA

COVER DESIGNED BY AADITHYA BALACHANDRAN

All Copyrights are reserved with Ramanujan College, University of Delhi.
The document may not be copied, scanned, or duplicated in whole or in part.

CHAIRMAN'S MESSAGE

Dear students and teachers, I am extremely proud and happy with the new edition of our college's annual magazine, "Aloka Tirtha". This publication not only reflects the creativity of the students, teachers and administrative staff of the college, but also mirrors their buoyant spirit and laudable conceptualisation.While going through the pages, I'm left amazed by the diverse skills, passions and interest areas that our students own. Multiple voices echoing through divergent tales enchant the mind to see things differently, yet the magazine as a whole is a symbol of our collective endeavour and zeal.

The Editorial team and the writers have delved deep to present varied insightful perspectives on one of the major themes of the magazine: 'Vishwaguru Bharat'. From having a rich cultural heritage to being an enlightened land, from having an unparalleled knowledge system to being ready to become the global leader, the articles of the magazine capture unprecedented vigour and potentiality of our nation, Bharat.

I once again congratulate the students, teachers and the Editorial team for offering such an illuminating and exuberant experience through this edition of "Aloka Tirtha".

Best Wishes,
Dr. Jigar Champaklal Inamdar

प्रिय छात्रों और शिक्षकों,

मैं अपने कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'आलोक तीर्थ' के नए संस्करण से प्रसन्न और गर्वित अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिका के इस अंक में न केवल कॉलेज के छात्रों, शिक्षकों और प्रशासनिक कर्मचारियों की सृजनात्मकता के दर्शन होते है, अपितु इनके द्वारा प्रस्तुत नवीन संकल्पनाओं के भी दर्शन होते है। पत्रिका के माध्यम से मुझे विद्यार्थियों की योग्यता, उत्साह और विषय के प्रति उनकी रुचि से अवगत होने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। पत्रिका भिन्न–भिन्न किस्सों, आलेखों और उपाख्यानों के माध्यम से विद्यार्थियों के भावों, विचारों और व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती है। साथ ही उन्हें चीजों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने एवं समझने के लिए भी प्रेरित करती है। वास्तव में यह पत्रिका हमारे सामूहिक प्रयास और उत्साह का प्रतीक है।

संपादकीय मंडल और लेखकों ने पत्रिका के महत्वपूर्ण विषयों में से 'विश्वगुरु भारत' की संकल्पना को विविध दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पत्रिका में प्रस्तुत कलात्मक अभिव्यक्तियाँ और आलेख भारतवर्ष की महान सांस्कृतिक विरासत से लेकर उसकी वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने वाली अप्रतिम ज्ञान प्रणाली की संपूर्ण संभावनाओं को अभूतपूर्व ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

मैं पुनः 'आलोक तीर्थ' के इस संस्करण के लिए छात्रों, शिक्षकों और संपादकीय मंडल को बधाई देता हूँ जिन्होंने इसके माध्यम से विपुल ज्ञानवर्धक और उत्साहजनक अनुभव प्रदान किया है।

शुभकामनाएँ
डॉ. जिगर चंपकलाल इनामदार

PRINCIPAL'S MESSAGE

Dear students and teachers, it gives me immense pleasure to share with you the new edition of our annual college magazine, "Aloka Tirtha". This magazine has served as a platform to express the diverse and vibrant voices of the student-teacher community and administrative staff of the college. These voices have been captured through powerful words, thought-provoking narrations and mesmerising art. The magazine encapsulates the immense talent, creativity, hard work and dedication of our students.

"Aloka Tirtha" also celebrates the glory of India through the theme of 'Vishwaguru Bharat'. The dynamic and animated pages are a witness to our efforts, achievements, accomplishments and growth as an institution in contributing to the further progress of our country.

I wholeheartedly appreciate the commitment and sincerity of the Editorial team for weaving together the conversations, memories, experiences, thoughts and ideas of the entire college in one tapestry: "Aloka Tirtha".

Best Wishes
Prof. S. P. Aggarwal

प्रिय छात्रों और शिक्षकों,

हमारे कॉलेज की वार्षिक पत्रिका "आलोक तीर्थ" के नए संस्करण को आपके साथ साझा करते हुए मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है। यह पत्रिका हमारे कॉलेज के छात्र–शिक्षक और प्रशासनिक समुदाय के विविधतापूर्ण जीवंत स्वरों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य कर रही है। इसी के साथ–साथ इन स्वरों को अर्थपूर्ण शब्दों, विचारों और आख्यानों द्वारा मंत्रमुग्ध करने वाली कला के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका हमारी अद्वितीय प्रतिभा, रचनात्मकता, परिश्रम और संपूर्ण समर्पण को समाहित करती है।

"आलोक तीर्थ" विश्वगुरु भारत विषय के माध्यम से अप्रतिम और गौरवशाली भारतीय परंपरा का उत्सव मना रही है। इस पत्रिका के जीवंत और रंगीन पृष्ठ हमारे देश की उन्नति में हमारे संस्थान के योगदान, उपलब्धियों और विकास के साक्षी हैं।

मैं हृदय से संपादकीय मंडल के प्रयासों, समर्पण और निष्ठा की सराहना करता हूं, जिन्होंने पूरे कॉलेज की स्मृतियों, संवादों, आख्यानों, अनुभवों और विचारों को 'आलोक तीर्थ' में संजोया है।

शुभकामनाएँ
प्रो. एस. पी. अग्रवाल

संपादकीय

''आलोक तीर्थ'' परिवार की ओर से अभिवादन !

'संपादकीय लेखन' अपने आप में एक यात्रा की कहानी को कहने जैसा ही है, जो उन क्षणों, अनुभवों और भावनाओं की अमिट तस्वीर के रूप में हृदय पर अंकित हो जाता है। 'सामग्री संकलन' से लेकर 'प्रकाशित' होने तक की यात्रा में बहुत से शिक्षक, छात्र जुड़ते रहे। लगता था जैसे कुछ अभिव्यक्तियों ने प्रतीक्षा का एक लंबा समय तय किया हो। रचनाकार का रचा हुआ जब तक लोग पढ़ नहीं लेते तब तक शायद उसे एक प्रतीक्षा ही रहती है, प्रतिक्रिया की। रचने और प्रतिक्रिया के संबंध को हम कितनी बार भीतर ही जी लेते हैं और बाहर जीने की आकांक्षा बनी रहती है। तो चलिए अब इस इच्छा की पूर्ति करें।

मुझे इस बात की खुशी है कि रामानुजन महाविद्यालय की पत्रिका "आलोक तीर्थ" अब प्रकाशित होने जा रही है। पत्रिका के इस संस्करण को तैयार करने में छात्रों ने न केवल महत्वपूर्ण योगदान दिया है बल्कि जो तकनीकी कौशल आप देख रहे हैं, उसे भी रूपाकार देने में इनकी महत्ती भूमिका रही है। इस यात्रा में महाविद्यालय के छात्रों ने अपने साहित्यिक कौशल को निखारकर इस पत्रिका को विशेष बनाया हैं। उनकी रचनात्मक और साहित्यिक अभिव्यक्ति ने इस पत्रिका को एक सुंदर, साहित्यिक और सशक्त अनुभव प्रदान किया है।

"आलोक तीर्थ" पत्रिका एक माध्यम है जिसके द्वारा शिक्षकों, छात्रों और प्रशासनिक कर्मचारियों के विचारों, कलाओं, साहित्यिक क्षमता और विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियों को दर्शाया जाता है। यह पत्रिका हमें महाविद्यालय के विकास और विद्यार्थी जीवन की जटिलताओं के एक अद्वितीय पहलू से परिचित करवाती है। इसमें भारत की महान संस्कृति और कला की झलक का अवलोकन है। साथ ही इसमें विश्वगुरु भारत की झलक भी उपस्थित है। यही कारण है कि पत्रिका का विषय "विश्वगुरु भारत" रखा गया है।

भारत, विविध संस्कृतियों, प्राचीन ज्ञान और उल्लेखनीय उपलब्धियों की भूमि रहा है। एक वैश्विक नेता के रूप में भारत का उदय इसकी ज्ञान प्रणालियों और प्राचीन ज्ञान में निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संसार एक परिवार है) की अवधारणा से लेकर महान दार्शनिकों और आध्यात्मिक गुरुओं की शिक्षाओं तक, भारत ने हमेशा एकता, करुणा और सद्भाव पर बल दिया है। नवाचार, उद्यमशीलता और अनुसंधान को बढ़ावा देकर, तकनीकी प्रगति और वैज्ञानिक खोजों में सबसे आगे रहना 'विश्वगुरु भारत' का लक्ष्य है। इस पत्रिका में आपको सभी का दिग्दर्शन करने का अवसर मिलेगा। इसी संकल्प के साथ "आलोक तीर्थ" पत्रिका रामानुजन महाविद्यालय के परिवार की प्रतिभाओं, कलाओं, और संवेदनाओं को आगे लाने में प्रयासरत है।

मैं महाविद्यालय के शासी निकाय के अध्यक्ष डॉ॰ जिगर चंपकलाल इनामदार जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने एक पथप्रदर्शक की भूमिका के रूप में हमारा उत्साहवर्धन किया। पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो॰एस॰पी॰ अग्रवाल जी का विशेष आभार अभिव्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के बिना यह संभव नहीं था। साथ ही समय–समय पर मिलने वाले सतत सहयोग और परामर्श के लिए प्रो॰ के॰ लता और डॉ॰ निर्माल्य सामंता को धन्यवाद करती हूँ।

संपादक मंडल के सदस्यों के विविधतापूर्ण ज्ञान, एकाग्रचित्तता और परिश्रम ने इस पत्रिका को साकार रूप में हमारे समक्ष रखा है। इसके लिए मै संपादक मंडल के समस्त शिक्षकों और छात्रों के साथ–साथ सभी रचनाकारों, प्रशासनिक कर्मचारियों/अधिकारियों और आलोचकों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ क्योंकि आप सभी के सहयोग से ही यह कार्य संपन्न हो पाया है। साथ ही किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

प्रो॰ मधु कौशिक
संपादक, आलोक तीर्थ
संयोजक, पत्रिका समिति
हिंदी विभाग
रामानुजन महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

FACULTY EDITORIAL BOARD

(L-R) Dr. Abhishek Kumar Singh, Dr. Moirangthem Jiban Singh, Dr. Nirmalya Samanta, Prof. S.P. Aggarwal, Dr. Jigar Champaklal Inamdar, Prof. K Latha, Prof. Madhu Kaushik, Dr. Hem Lata, Ms. Arzoo Saha, Dr. Megha Sharma

Faculty Editorial Board in a meeting with the Student Editorial Team.

STUDENT EDITORIAL TEAM

SAMAR KHAN
B.A. (HONS.) PHILOSOPHY,
2ND YEAR

DANIYA SHAMEEM
B.A. (HONS.) ENGLISH,
2ND YEAR

PANKHURI GUPTA
B.A. (HONS.) ENGLISH,
2ND YEAR

MAHESH SINGH
B.A. (HONS.) HINDI,
2ND YEAR

AADITHYA BALACHANDRAN
B.A. (HONS.) APPLIED PSYCH. ,
2ND YEAR

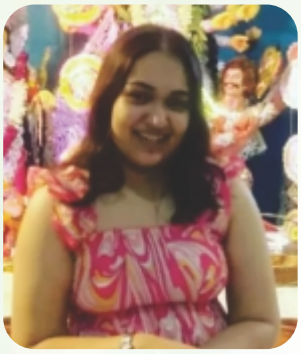

BYAPTI SIDDHANTA
B.A. (PROG.) POLITICAL SCIENCE
AND PSYCHOLOGY, 1ST YEAR

MANGALYA SINGH
B.A. (PROG.) ECONOMICS
AND PSYCHOLOGY, 1ST YEAR

KIRAN SHARMA
B.A. (ECONOMICS + PSYCHOLOGY)
1ST YEAR

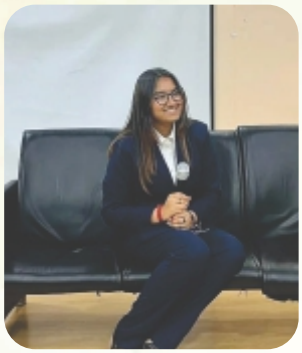

SAMRIDDHI AGARWAL
B.COM (PROG.),
1ST YEAR

VANSHIKA RAWAT
B.COM (HONS.)
1ST YEAR

PRANJUL SALUJA
B.A. (HONS.) PHILOSOPHY,
2ND YEAR

AYAN HAMID
B.SC (HONS.) STATICS,
2ND YEAR

YOGITA MAHANANDA
B.A.(HONS.) PHILOSOPHY,
2ND YEAR

CHANDRAPRAKASH
B.A. (HONS.) HINDI,
2ND YEAR

CONTENT

English Prose and Poetry	1
Hindi Prose and Poetry	27
Punjabi Prose and Poetry	52
Performing and Fine Arts	58
Layataal	60
DNA	61
The Bhangra Regiment	62
Shivranjani	65
Jazba	68
Brushstrokes	70
First Cut	71
Panache	72
Pramana	73
Tark	73
NAAC Visit	74
Alumni Section	77
College Highlights	82
Principal's Interview	83
TLC	84
IQAC	85
Artificial Intelligence and Robotics Centre	86
Placement and Career Development Cell	88
Institution's Innovation Council (IIC)	89
National Outreach Programme	90
School of Happiness	93
Josh X Sequoia	94
International Yoga Day	96
Enactus	96
Tatva	97
Women Development Cell	98
Equal Opportunity Cell	99
Antha Prerna Cell	100
Environmental Initiatives	101
Sports	102
Library	104
Media Lab	105
Neev	105
NSS	106
Yuva Chapter	108
NCC	109
Exhibition of Professor Madhu Batta's Paintings	110
Exhibition of Postage Stamps on Martyrs' Day	111
Newspaper Features	112

PROSE AND POETRY

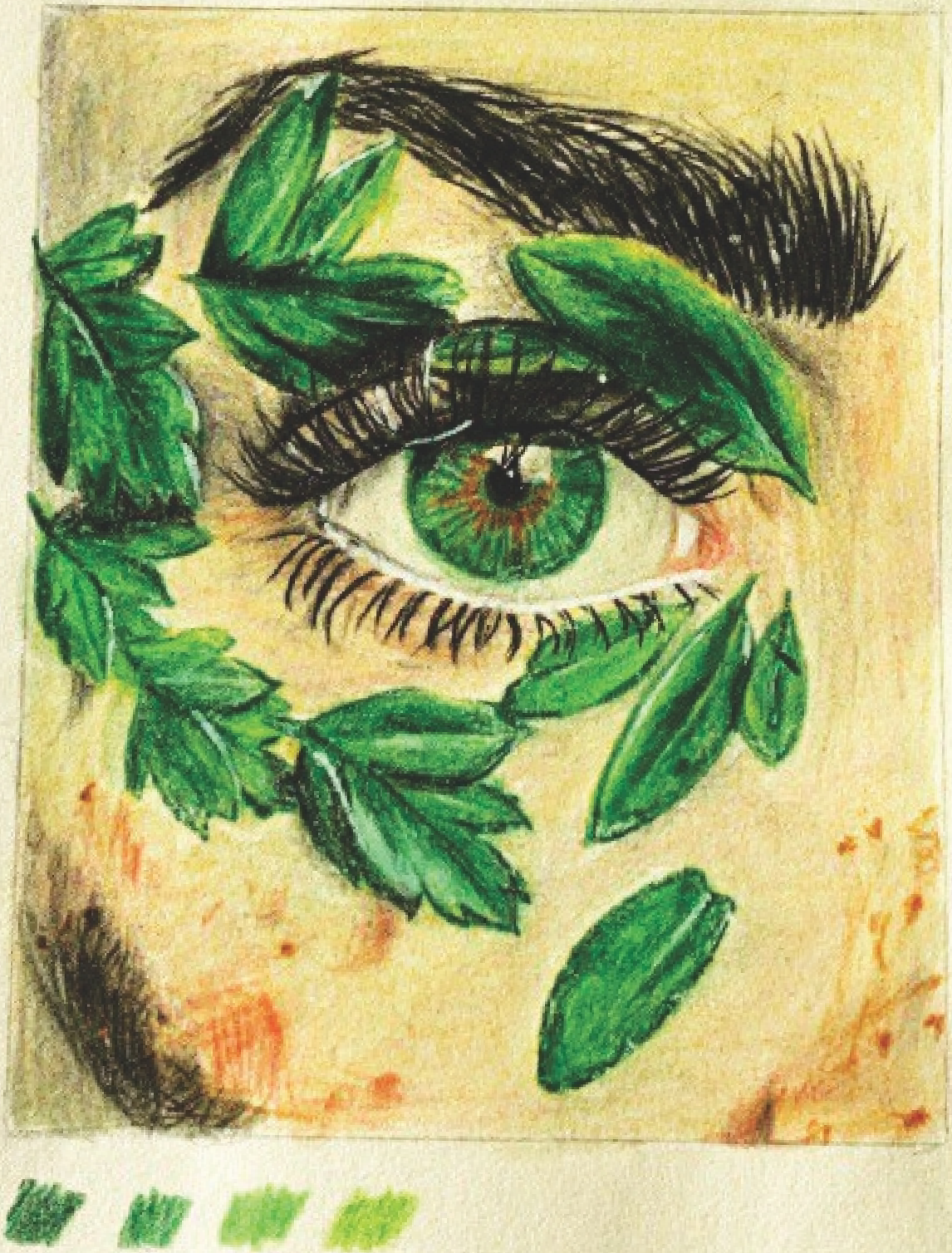

ILLUSTRATION BY RUPITA GUPTA
BRUSHSTROKES, THE ART AND CRAFT SOCIETY

A FALLEN BOWL

Falguni Kaushik, 3rd year, B.A. (H) English

There is a man for that:

For that open front door and that ongoing channel

Running loud at 10 am in the morning.

Those papers peeking out of files on the table and

The displaced antimacassars just touching the floor.

For that dining table decorated not with some leftover plates

But with groceries from last night.

There too is a bed layered with dust on the headboard and washed

But crumpled clothes on the footboard.

Bedsheet with morning crinkles and a wet towel and pillows

With elbow squeezes in the middle.

No, it's not a crime scene in a household

But an average day in any.

But there is no worry for there is a woman with that man too.

There is a woman too:

For that sweet smell of fresh food cutting through this mess

That the running fans send spreading.

There is a woman we don't know of.

Mother, daughter or house help, she could be any.

She is there in those closed walls behind that locked gate,

In the stillness of her bedroom fan,

In the wiped dust of the furniture,

In the ironed clothes inside the cupboards,

In the wet towel on the balcony,

In the flat bed sheet and fluffy pillows of the room.

She is in all that until that is all she is.

But tonight, with them is a fallen bowl too

Slipped from the woman's hands

And rolled into the dining room from the kitchen.

There is a man and a woman for it.

But the man passes by it and the woman passes over it too.

Photograph by Aman Raj, 2nd year, B.A. (H) Political Science

A SOUL SO PURE

Vaibhav Gupta, 1st year, B.A. (H) Appl. Psychology

Amidst the bustle of society's throng,
There sits a child, different and withdrawn.
A soul so tender, so pure, and so fair,
But shy, anxious, and riddled with care.
This child is a wonder, so quiet and meek,
Lost in a world of his own to seek.
With books for friends and dreams to keep,
A heart so full, but so hard to read.
Yet, in this child, a beauty abides,
A gentle grace, that softly glides.
A spirit unbroken, though often tried,
A light that flickers, but never dies.
In crowds, this child may seem so small,
But in solitude, he stands so tall.
For he has a voice, so sweet and true,
That speaks to the heart and touches it too.
So do not judge this child, so shy and coy,
For in him lies a heart full of joy.
A mind so bright, a soul so pure,
That only in quietude, can it truly endure.
Let us cherish this child, so introvert and frail,
For he may hold secrets, we cannot unveil.
And let us learn from him, a lesson so dear,
That to be truly heard, we must first learn
to hear.

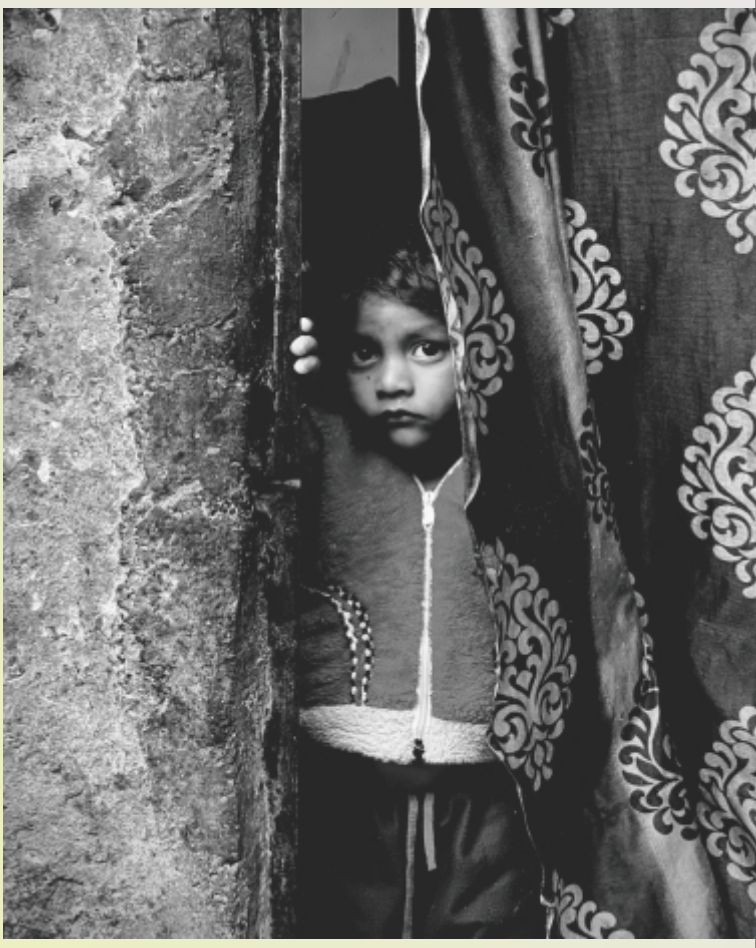

Photograph by Armaan Aziz Ansari, 2 year, B.Com (Prog.)

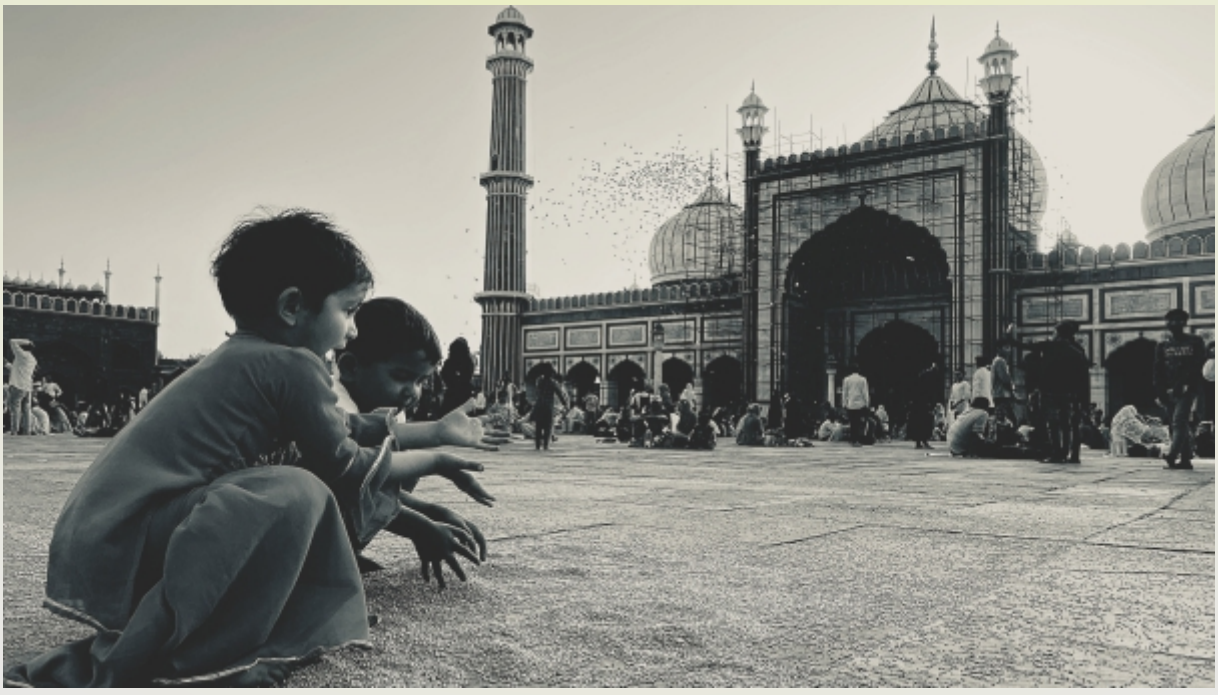

Photograph by Sudhish Singh, 3rd year, B.A. (H) Hindi

GIRLHOOD, GOODNIGHT!

Kriti Sharma, 2nd year, B.A. (H) English

From baby steps to long routes.
From school shoes to heel boots.
From every house you left,
Or promises you never kept.
It's been such a delight.
But its time,
Girlhood, Goodnight!

From every time you slipped,
And every coin you flipped
To the roads you took,
And your love for that book.
It's been a long night.
So, Girlhood, Goodnight!

From choosing hell for
The guy you fell for.
To leaving this town
In search of a sound.
Your chaos has reached a quiet
So, Girlhood Goodnight!

For the high school you hated,
For the times you waited,
For the nights you cried,
For your dog who died,

For every friend you lost in a fight,
I hereby bid my farewell,
Dear Girlhood, Goodnight!

Illustration by Soumya Rout, 3rd year, B.Sc. (H) Environmental Science

THE STORY OF ME

Arya Tiwari, 3rd year, B.A. (H) English

If I could have written about all that I see around me, I would have.
I often find myself appreciating the mundanity of things,
So, I spend my days finding beauty in normality-
A half-finsihed cup of iced tea from a friend,
That cute note on the napkin from another,
And that pleasant smile from the classmate you are not friends with.

I have found myself through others
Because lately, I have been more about others than me.
The air of obscurity that glazes through each person I see is attractive,
I wish I was like the girl I saw on the metro station that Tuesday,
Long curly hair, alone, in a short dress, her mask on, wearing Chelsea boots.

Is this what it is to be young?
To know so much and yet not know enough,
So, I spend my evenings trying to construct my own definitions,
Not knowing if it's the right one or not,
And I sob noiselessly into the void when I have realisations
About the wrongs I did and the wrongs that were done to me.
know it's all slipping away each second,
I wish to hold on to so much that it all falls out of my hand like sand.

What will I be without the monotony, I don't wish to know.
What makes me "me" is the silliness of conversation
Turning meaningful when I sit cross-leggedwith my friend at the metro station,
Or the walk to the grocery store at ten in the night
Because you have nothing to do, or a thirty rupees coffee
At the small, hidden cafe near my college.

The picture on my college ID card is a bittersweet reminder
Of what all I was, and what I am now.
The angst has stayed within,
But with the years and the change I have lost apart of my strength
To the world around me.
And I like myself this way.
I am a little bit of everything - confident yet powerless,
Full of feminine fragility with activism waiting to be unleashed,
Sometimes like poetry that calls for revolution but other times ordinary,
Like any other girl in her twenties.

Illustration by Rupita Gupta, 3rd year, B.Com (H)

MIRROR, MIRROR ON THE WALL

Nandani Mishra, 1st year, B.A. (H) English

Mirror, mirror on the wall
Who's the prettiest of them all?
Please say the name I want to hear
And put an end to all the crippling fear.

Mirror, mirror on the wall
Say my name before I fall
And like you, break into a thousand pieces
And like those pieces the anxiety increases.

For I need to be pretty, I need to be good
That's what I've been taught since childhood.
To be fair and to be polite
Stay thin and on a diet.

Drinking tea makes you dark
When the sun is above no going to the park
Don't you dare get your face bruised
Nobody will like you and you'll be accused.

Apply face masks day after day
To get fair, it's the only way
Hide away those craters underneath your eyes
You need to be as pretty as the skies.

Your body is so weak, your hair so thin
How dull is the tone of your skin.
Mirror, mirror on the wall
Please answer my call.

Tell me, oh please, tell me, that it is me
From these humiliations, set me free.
What is wrong with you all?"
Asked the mirror with an eyebrow raised high
And it seemed like his brain was about to fry.

"What is this human obsession to look a certain way
Don't you all have better things to do or say?
Am I pretty, am I beautiful is all you ask
Hiding away with your heart in a mask.

Since when did physical beauty
Take over the world's duty?
It is the brain that matters and matters the heart
Nothing else should set you apart.

Not the colour of your skin or your shape
What are you? An ape?
Still waiting to evolve from the society's
Standard of beauty and its mean remarks?
Oh, you humans are worse than sharks!

The superior species being pulled from greatness because their amazing brain
Is pecking for validation as if it is grain.
To birds, who by the way are better too
With wings in the air they fly
No beauty standards to comply.

You are human and that's what makes you the most beautiful everyday
Not dolls made in a factory to look a certain way.
Oh, there's so much I could say!

If only you'd understand
The power of your hand.
You are beautiful only if you believe you are.
Every aspect of you is pretty
Even your scar."

Photograph by Simarjeet Singh, 2nd year, B.A. (H) English

BREAK THE GLASS

Aroonika Kole, 1st year, B.A. (H) English

Neighbouring sounds passing through my brain
Men and women two single creature,
Here is their pain.
Men aren't the cook,
But for the book
Women can't read,
Born to sow seed.
Men are born to be tough,
Women can't be rough
Men can't cry,
Born to be dry.
Women must be in the loft,
Born only to be soft
Men have to learn,
born only to earn.
Women can't be loud,
born only to shut their mouth
Man can't obey her,
born only to rule over.
You are a woman, not a pet
Could you wake up and make them regret?
You are a man, not a stone
You are born not only for the throne.
Stop... Stop following these silly rules,
Stop behaving like fools
Come on... Come out from your bills,
You and I made by nature,
Start building over them huge hills.
How dare society be a rule-maker?
Who are they to make laws?
Let's stop them with our claws.
Gender inequality is such a big issue
It can't be thrown around like a tissue.
Gender is just a biological character
Not a judging factor
Society's biggest illusion
For women, marriage is the only solution.
You are the leader of your life
You don't need to be someone's wife.
Men and women are two creatures,
Who are we to be their leaders.
Who are we to tell,
Stop making their life hell.

Illustration by Bipasha Gosh, 3 year, B.A. (H) Economics

IF IN THE END WE'RE JUST STORIES

Nandani Mishra, 1st year, B.A. (H) English

If in the end we're just stories
Telling the tales of our glories
Then hold my hand one more time
Come help me commit the forbidden crime.
Dance with me on the bed of coal
Being perfect is not my goal.
I dream of stars falling from the sky
Push me off the cliff so I can fly
And catch one of them in my hand
Before it shatters and hits the land.
I know the star is not as small as it seems
But it is one of my unattainable dreams.
Help me put together a story so wild
Help me pacify my inner crying child
She wants to be free from the clutches of reality
And the unbearable sufferings of mortality.
Come walk with me barefooted on the freshly dewed grass
And sit with me on the edge of a cliff as we watch the time pass.
For we won't be here for long
Sing with me, break out in a song
To the beats of my beating heart
There'll come a day when we'll need to part.
But until then it's you and I and the sun
I want to hold, in my hands, a gun
And shoot away whatever causes pain
Watch a peacock dancing in the rain.
And when the time comes for us to tell our story
We will recite it with all ecstatic glory
The things we did, the things we said
All the beautiful things we read
From Jane to Shakespeare, from Dickens to Green
We'll enact our adventures like a beautiful movie scene.
And we'll stop not before we've done all things great
Won't have life served to us on a plate.
But a life full of mysterious agony and adventure
For we need to find the quencher
Need to find the luminescence
The very core of human essence
Find the answers to questions that were asked

Illustration by Tannu Pathak, 3rd year, B.Com (H)

Like how the birds get to fly and when the sun will blast.
So come with me so we can write
Our version of the world a little too bright
Plot including things we want to do or say
It's okay, we'll end up dead anyway.

SPLENDID BEAUTY OF NATURE DURING MONSOON

Suhani Gupta, 1st year, B.A. Prog.

Wish I was a frog
With flowers blooming all across
Hopping from one place to another.
Wish I was a peacock
With water running from the vault of heaven
Dancing with my feathers on.
Wish I was a pied cuckoo
With those beautiful green frond
Giving the farmers a signal to sow the seeds.
Wish I was a coral snake
With all those vibrant colours
Forgetting my venomous nature.
O friend! Doesn't the smell of clay change your melancholic mood to cheerfulness
Captivating the beauty of nature around the town
Softening the rock
Giving the sun a day off.
With the raindrops rolling down on someone's cheeks
A farmer in some corner of the world waiting for scotch mist like an old thief
rees shining with their bright green eyes
Must be desiring to claim the prize
Green meadows bowing down to the mighty Zeus
For lending them the bright shine.
Adam's ale creating a benevolent cycle
To remove impurities of humankind
Vagabond feeling a less forlorn
Beau monde slamming the doorway to preserve their estate
And then loathing the season
For the dirt it causes.
Well then, at last!
Begins the monsoons retreat
Sun coming up again
Snakes crawling back into their endless deep holes
Frogs keeping quite waiting for the next downpour
Peacocks weeping over their ugly feet
But I believe merciful Zeus is infuriated
Acid rain is an outcome of his furiosity.
It's not his fault either, right?
Chemicals rising into the Heaven
Reacting with water
Revealing the indiscretion of mankind.
Considering we can neither be a frog nor a peacock nor a pied cuckoo or a coral snake,
So, let's just be humans and harbour our humanity.

Photograph by Aman Khan, Alumni, B.A. (H) Political Science

THE PARTS OF A WHOLE

Mangalya Singh, 1st year, B.A. Prog. (Eco and Psych)

I've heard these stories so many times, I can see it with closed eyes.
I've seen crazed pursuits for lost gold
I've witnessed the soft decay of empires enfold.
Lost wars, waded seas, conflicts and ease
But somehow, I've never known peace.

I've seen far too many centuries to take pleasure in the decadence of tensions.
My thrill is but the violence of the south-west winds
My aliveness is fed by the allure of warm Decembers.
My comfort is in endless summer skies
And my people?
My elixir,
And more.

My people
My children, they call themselves
Have dearly paid for the right to be
To live fast and live free
They adorn me in gold, paint me in tricolour and honour me in blood
And proclaim I am loved
But they forget
I have lived far too many centuries
To believe in these eccentricities.

The flame of my renown has burned long and bright
Every flicker speaks of my people, so disparate and beguile.
They have no idea what disparity births
And I watched with silent eyes as crooks made my people perverse
And I could do nothing but watch them drift
And feed into their rift
My people?
My poison.

The seat of ancient knowledge, the one earthly paradise- it's all here
Then why, my people so beautiful and diverse,
So welcoming and giving, not see what's clear?
Why would they close themselves off in enclaves when
They can hold the gaze of the sun over the mountains?
When they can run across the plains and walk in the rains?
When will my people understand what we are?

I am not a piece of the earth, or a sample of the soil
I am not some mere territory to be passed around like a child's toy.
I am encapsulating, unrestrained, unbridled
And as long as my people live, I am immortal
To know that I reside within will halt their quarrel
For even though their disparity breeds detachment
And detachment begets animosity,
My people need to know
That all they are is parts of a whole.

Illustration by Rupita Gupta, 3 year, B.Com (H)

BROKEN REKINDLED HOPE

Zubia Khairi, 1st year, B.A. (H) Economics

Motifs of anguish,
Abrasion of emotions,
Fervor of vanquish
And the warmth of coldness,
The tender heart sores.
A roller coaster, it is
An emotional turbulence!

He said, I miss you mother,
Where are you?
"Flying up high,
In the sky,
With angel wings!
Passing through the skies, all seven!
Diving into the gateway of heaven!
Like you once dived into the lake during the time of spring!

God accepts with open arms,
True spirits and soulful hearts
Like you once threw the dart
With all strength in your forearms
And it struck the bullseye!

I will be gazing at you,
Grinning and waving,
One day my child,
We all will be reconciled
And smiled upon."

The brightness of the sky
Where we all lie,
The glimmer of the night,
The allure of the sight,
Combined and refined
The beauty of her phase.

Wondering, he sighs,
"The drops rolling from the eyes,
As big as a ball in size,
Running through the cheeks,
As the nerves freak.
It felt so low, gloomy aches,
As if the grief was striking through.

All that hurt gathered up inside,
No matter how much I hide,
They march in crowds
Yet I stand alone.
Words become loud,
Heavy is their tone."

When everything around you seems dull
And the shiver goes right into your skull,
It is the moment to accept the loneliness
And become a symbol of fierceness.

Be a fighter who fights with scars,
Shine up bright like the spark in the stars,
Leave behind the sorrowful past,
Continue your journey on the same path
And make your heart steadfast.

"I can notice a flash,
A flash of hope.
Trekking up the slope,
I will be able to cope!"

They say,
"To know the ideal appeal,
is to let go and deal,
with life on your own
as you have grown."

Feeling better, feeling smiley,
Now they wonder how to get him,
Back down from above,
But he has learnt now
How to be in love
With his own self.

"It is not me who is weak,
I am stronger than this,
My mind explores the answers it seeks,
As the problem gets dismissed,
Oh! I am getting better at this!"

It is never too late
to own up to mistakes.
Chances you take,
decisions you make,
define your destiny.

Don't lose your heart,
If you're feeling low,
Give it a re-start.
Don't allow yourself to fall apart!
We're strong, we're hopeful,
We wait for our time to shine!
Like the stars in the sky,
Deep down,
We are all gold mines.

Don't lose yourself along the way
As every morning is a new day.
Trust yourself and your ability to do better,
Accept your lone self,
Write a letter!
"Whirl and twirl, oh dear soul,
Pin your hopes on you alone.
Let go of complexity,
To know what it feels like,
To be in ecstasy.
Be strong, be hopeful
and don't forget to be soulful"

"As I see through the window
The morning sunshine flickers
A glimmer of hope shimmers."

Illustration by Dhananjay,
1st year, B.A. (H) English

INDIA AS A POTENTIAL "VISHWAGURU"

By Kriti Sharma, 2nd year, B.A. (H) English

After gaining independence in 1947, India has never looked back. In these seventy-six years, this incredible country has developed a great deal, with a population of more than 1.3 billion; and on its way to becoming the world's third-largest economy, the country has come a long way. However, it cannot change the fact that there remain a lot of challenges that India has to deal with, major ones of them being poverty and economic development. Although India is a great example of a diverse democracy, it still struggles to promote itself to the world on a broader scale. All these challenges, however, do not mean that this great nation does not have the potential to become a 'Vishwaguru'.

The term 'Vishwaguru' is a Sanskrit word which translates to "global teacher". India's possession of such a quality is seen as a possibility in the recent years, under the leadership of Prime Minister Narendra Modi's nationalist government in India. This essay talks about the presence of rich culture, diversity, developmental measures, and harmony in this country, to discuss whether the aspirations of being a global teacher are a genuine representation of India's true potential.

Photograph by Aanchal Jain, 3rd year, B.A. Prog.

Cultural Foundation and Diversity in India

The cultural foundation of India dates long back and is a heritage of various social norms and technological advancements that originated in India or in some way or the other, are associated with it. India is a diverse country not just on a linguistic level, but on an ethnic level as well. Something one should always keep in mind is that when we talk about the cultural foundation in India, it is not just limited to the cultures currently present in the country, but the term also applies beyond India, to those countries and cultures that have their histories strongly connected to India in one way or the other. For instance, through immigration, influence or colonisation, particularly in South Asia and Southeast Asia.

Photograph by Afrah Naayaab, 2nd year, B.A. (H) Economics

It is important to understand that when we talk about diversity in India, it is not even close to inequality but rather emphasises differences that are there in the country on various levels. India succeeds in functioning as a country that is home to a huge population with people belonging to various different religious, racial, linguistic, caste, and cultural groups. It sets a remarkable example of a strong nation in front of the whole world by functioning as a united nation and maintaining its diversity despite facing foreign invasions multiple times. India's fighting spirit becomes another advantage that makes this strong nation a potential teacher for the whole world.

Photograph by Shreya Rana, 3rd year, B.A. Prog.

Diversity in India is not just cultural. India is termed as a diverse nation because of different factors such as its linguistic, religious, and geographic diversity. Spreading across an area of 3.28 million square kilometers, this country has various physical features ranging from fertile plains, mountain ranges, deserts to rainforests and so on. This geographical diversity makes India a country rich in flora and fauna and at the same time, allows for different cultures to be followed in different geographical regions in which an important factor is the environmental condition.

Developmental Measures in India

The incredible progress that India has made over the years exemplifies its potential as a global teacher. There are several advancements in various fields such as technology, healthcare, agriculture, education among many others. India has also taken serious measures to implement and promote sustainable practices considering the environment. M.S. Swaminathan, who is known as the "Father of the Green Revolution in India", set a great example of India's contribution towards developing agricultural practices, keeping in mind that agriculture falls under the primary sector in India.

With the help of these advancements in the agricultural sector as well as sustainable practices, India has successfully enhanced its food production and has addressed several challenges in the agricultural sector. When we consider these achievements in addition to the democratic institutions in India, the vibrant media, the rule of law, and an actively functioning civil society, they establish a strong foundation for the nation to build a leadership role on and become an idolised figure of knowledge for the whole world.

In addition to these developments within the nation, the country has actively engaged in addressing global challenges which further promotes its potential as a 'Vishwaguru'. Prime Minister Narendra Modi's proposal of a group known as G-All, which is similar to G7 and G20 showcases India's focus and commitment to collaborating with other nations in order to tackle global problems. India, over the years, has collaborated with different nations and participated in various summits, high-profile events, and important partnerships such as the Quad, G7 summits, India-EU summits, collaboration with the United Kingdom as well as US president Biden's Summit for Democracy.

All of these come together as an example of India's willingness to collaborate with the global community in order to ensure international harmony. The nation has a very high potential for bringing out innovative solutions to global problems. India's experience, advancements, and knowledge in various sectors which include technology, agriculture, healthcare, renewable energy, and most importantly, space exploration serve as a great example of why this diverse nation has a high potential for being a great teacher to the world.

To conclude, from Miss Universe titles and Oscars to Olympics, SAF Championships, and Booker Prizes, India has proved itself as a country that deserves a lot more recognition than it has received in the past years. It is a nation that accomplishes every milestone with its personal touch, making it authentic and one-of-a-kind; a great example of this being the"Mission Mangal" by ISRO.

Other than being a nation with an immense amount of talent and leading potential, India is a country that highly believes in harmony and whole-heartedly follows the slogan "Vasudhaiva Kutumbakam," which means considering the world as one family. This idea lies in the heart of India's culture. Considering the world as one family is a philosophy that emphasises various values integral to the role of a Vishwaguru, such as shared progress, cooperation and support, the interconnectedness of humanity, and so on. All these values can be seen in the steps taken by India over the years, making it a potential world teacher as well as a leader.

ATMANIRBHAR BHARAT- A WAY TOWARDS SELF RELIANCE

By Sahil Jain, 3rd year, B.Com (H)

Photograph by Simarjeet Singh, 2nd year, B.A. (H) English

> *Self-reliance makes us glorious and empowered, so come one step towards self-reliance.*

'Atmanirbhar Bharat' is our Prime Minister, Mr. Narendra Modi's vision for making India self-sufficient. The main aim of this vision is to spur growth and build a self-sufficient India. As a result, the entire initiative is known as 'Atmanirbhar Bharat Abhiyan'. It was announced with the aim of giving a boost to the Indian economy which has been hit hard by the Covid-19 Pandemic.

This campaign is an important mission for the economic revitalisation and advancement of the Indian economy. The Indian economy has great potential for self-sufficiency, but this requires proper implementation of the laws enacted as well as careful allocation of the funds provided by the government. An economic package of Rs 20 Lakh crore was announced by Prime Minister Narendra Modi as part of 'Atmanirbhar Bharat Abhiyan' in May 2020, to anticipate a possible deterioration in the economy during the global pandemic and to turn disasters into opportunities. This package is estimated at 10 percent of GDP.

The real meaning of 'Atmanirbhar Bharat' is self-dependent India. It can be said that atmanirbhar implies promoting and favouring local products and ensuring that these products are equal in cost and quality to their imported counterparts. Self-dependency, hence, implies the globalisation of our industries. India relies on a lot of imports from many countries around the world and pays huge import bills compared to its exports. During the time of the pandemic, all import and export activities worldwide had been suspended and the transport of goods and services had ceased, so, at that point of time it was very difficult to live without these goods. In such a time, only the implementation of the 'Atmanirbhar Bharat' Policy was required.

The most desired outcome is India becoming a prosperous country. The beneficiaries of the Self-India campaign program are farmers, poor citizens, migrant workers, small industries, tenants and people working in the organised sector and more. India is very talented, can make the best products and can become a flourishing country using the abundant resources the country possesses. We, as its citizens, must strengthen our supply chains to become an Atmanirbhar Bharat. The more people encourage the native entrepreneur, the more society as a whole will produce and scale. Production of goods in our country will increase industries, unemployment will be eliminated to a great extent and the poverty rate will also be reduced. The country's economy will also become stronger as imports will decrease and exports will increase. If the production of goods in the country increases, these can also be exported to other countries, leading to an increase in foreign currency.

‘Moreover, self-sufficiency is a positive term and it is very important to a person, family or a country. If the person is self-sufficient, they will need the least help of others to make a living. Being self-sufficient is the best quality for both the individual and the country. It is based on five pillars: first, the economy will not bring gradual changes, but a quantum leap. Second, is that the infrastructure becomes the symbol of modern India. Third, states that the system will be driven by technology and not based on last century politics. Fourth, is that demographics is our forte, securing us the energy resource status for self-sufficient India. Fifth, India’s cycle of supply and demand would improve the economy and allow it to reach its full potential.

Recently, the government has taken further steps to create a self-sufficient India but in the race for self-dependency we also have some important things to be mindful of. Before starting an industry, it is important to understand the impact it will have on the environment. Together with the industry, citizens must also pursue the environmentally friendly policy of the country. Furthermore, India is working on many programmes to boost its economy such as the creation of new industries, many new technologies or new machines that are used in Indian factories, along with enhancements in educational policies, like the new National Education Policy and hospital equipment. India is, as is evident, fully committed to becoming self-sufficient as the government runs various kinds of programs for the country and its citizens to make them independent, efficient and reliable. The country will soon play a key role in the global technology market and various other products. There is great potential not only in urban areas but in rural areas if appropriate policies are formulated and implemented. This plan also encourages the youth to start their own businesses and become employers, not employees.

Our development indicates the development of our nation so we should do our best to develop ourselves, first. The government can only put in place a plan, but it remains our duty to implement it.

Stills from FirstCut: The Filmmaking and Photography Society's documentary 'KAAGAZ' - a story of change, hope and a thousand smiles.

Photograph by Shreya Rana, 3rd year, B.A. Prog.

THE SELFIE AND THE PORTRAIT: EXPLORING ARTISTIC EXPRESSION IN THE DIGITAL AGE

By Deepshikha Chauhan, 2nd year, B.A. (H) English

The emergence of the selfie as a popular form of self-portraiture has sparked a debate on its impact on the traditional portrait as an art form. While the selfie has democratised self-representation and provided accessibility to self-expression, concerns have been raised about its potential degeneration of portrait art. This article examines the historical significance of portraiture, the challenges faced by portrait artists throughout history, and the evolution of self-portraiture in the digital age.

The traditional portrait has a rich history dating back to ancient civilisations, serving as a means of capturing the likeness, personality, and status of individuals. It has influenced society, shaping perceptions of self and others, and has been commissioned by rulers, the wealthy, and prominent figures to commemorate their significance. However, portrait artists today face new challenges, including declining demand for traditional portraiture, increased competition from digital media, and the struggle to find clients.

On the other hand, the selfie has become a popular means of self-expression and documentation in contemporary culture. With the advent of smartphones and social media platforms, individuals can easily capture and share self-portraits. Selfies offer advantages such as accessibility, flexibility, convenience, and affordability, allowing individuals to control their self-representation.

However, the selfie has also been criticised for promoting a culture of superficiality and self-obsession, and concerns have been raised about its impact on mental health and even accidental deaths. Selfie is linked to a number of psychological disorders such as Selfie Syndrome – A Mental Disorder, named as selfitis , defined as the obsessive compulsive desire to take photos of one's self and post them on social media as a way to make up for the lack of self-esteem and to fill a gap in intimacy. Chicago, Illinois – The American Psychiatric Association (APA) has officially confirmed what many people thought all along: taking 'selfies' is a mental disorder. The APA made this classification during its annual board of directors meeting in Chicago. The selfie culture is also responsible for accidental deaths worldwide. The quest for extreme selfies killed 259 people between 2011 and 2017, a 2018 global study has revealed.

There are contrasting opinions on the artistic value of selfies. Some consider selfies a legitimate art form, highlighting their potential for self-expression and personal creativity. Others criticise selfies for their focus on vanity and the proliferation of low-quality, uninspired images.

The conclusion emphasises the need to continue exploring the artistic potential of selfies while acknowledging the challenges they pose. As long as creators approach selfies with authenticity and artistic vision, the portrait as an art form can evolve and thrive in the digital age. The democratisation of self-portraiture through selfies has opened up new avenues for artistic expression and personal creativity, despite the concerns surrounding their impact.

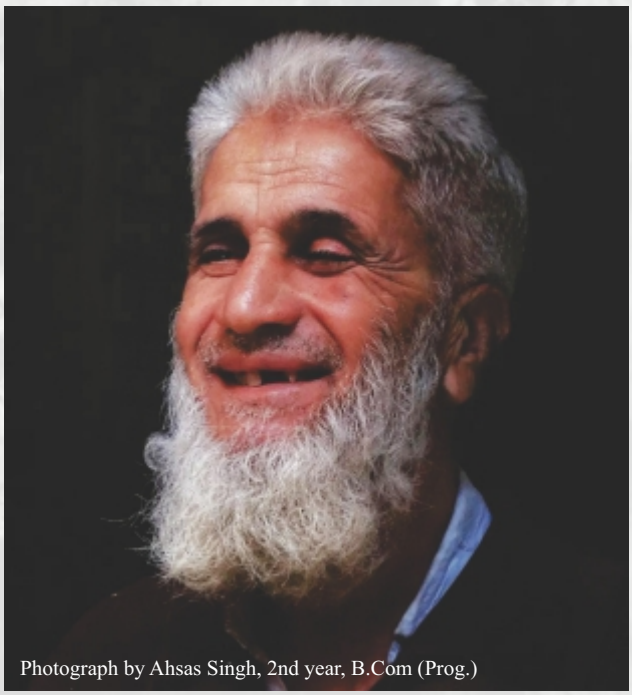

Photograph by Ahsas Singh, 2nd year, B.Com (Prog.)

Illustration by Saffiya, 3rd year, B.Com (H)

INDIA OF MY DREAM VISION

By Simarpreet Kaur, 3rd year, B.A. (H) English

Photograph by Aman Khan, Alumni, B.A. (H) Political Science

I have a lot to ask from the future, not just for me, but also for those who may be imagining no future for themselves. My vision is a dream wherein all thoughts of living in a utopian view of life are self-explainable and easily attainable. My idea is to paint a canvas with a stroke of shimmer and fill it with all the colours I can lay my hands on. Because, why not? Now is the time to think because the future of our youth lies in the palm of our hands. We, as the upcoming future of our nation, can bring in a myriad of unthinkable possibilities by channelling our energies along the right path.

My first step in making a difference would be to pen down these thoughts and create a picture wherein people may feel sad or happy at times, but they keep it together for the ones they love, because it would be of no use to stay in a country with no one by your side. Hence, I continue my dream. I want time to slow down so that people can see the beauty of my country and join me in my task to preserve and take it to new heights. To make India a country with not just better material benefits and wealth, but an even better place than it is today.

Therefore, I dream for an India with economic and political stability, where people get the chance to be in a stable and peaceful environment and not in a state of constant need to fight for their survival. I want to be a part of a future where no one sleeps with an empty stomach, and everyone has a roof over his or her head. I wish for equal rights for all and injustice prevailed on none. Such a view is difficult to imagine and might seem unrealistic, but thinking about possibilities, albeit seemingly unattainable, is much better than waiting for others to make a difference towards a world I want to be a part of.

EMERGENCE OF UTTAR PRADESH AS A MEGA EXPORT HUB

By Aditya Madhwal & Rishit Mittal, 1st year, B.A. (H) Economics

Even after 75 years of independence, many farmers and small businesses are still struggling to meet their necessities. The giant companies are still paralysing the growth of small businesses and many facilities provided by the government are still not within the reach of farmers. To tackle all these problems and increase the growth of the economy, the Uttar Pradesh government came up with a scheme, 'One District One Product Programme (ODOP)'. This scheme was launched under 'Make in India' in 2018 and it is regarded as one of the most important schemes for regional economic revitalization.

This concept of ODOP is very similar to the Japanese model of 'One Village One Product' programme which was implemented to ensure economic development at the local level. 'One District One Product' is implemented under the present leadership of the Chief Minister of UP, Mr. Yogi Adityanath to make all the 75 districts of UP an export hub by scaling up their manufacturing and finding the potential buyers for the product. The basic aim of ODOP programme is to identify one product with export prospects and develop a cluster for the product which can produce the product with fine, world class quality and a brand, then finding the potential buyers outside India with the aim of promoting export.

This will help the economy by scaling up the manufacturing of small industries and will create many employment opportunities in the district. The government will eliminate the tailback in exporting the product so that more manufacturers take part in the manufacturing of the product to earn profits. The UP government aimed to solve the problem of farmers and manufacturers of these products which included miscellaneous but major problems like lack of access to hot markets, lack of marketing, lack of technology and need of government consultation and subsidies.

Photograph by Sumit Kumar, Alumni, B.Com (H)

A classic example is kalanamak rice, which is naturally scented rice with countless health benefits. It contains anthocyanin, which is anti-inflammatory, antioxidant and has anti-cancer properties. The rice is rich in protein, iron, vitamin-e and natural fibres, making kalanamak rice a wonderful product for weight loss and natural detoxifier. Despite being such a miraculous product, it has almost zero demand in India but has been growing popular in countries like the USA, UK and New Zealand. However, until 2018 the production of this rice was very less and farmers were not willing to cultivate it due to less demand. This is where One District One Product scheme became a game changer for this product. It was made the ODOP of Siddharth Nagar and within four years the number of farmers increased from 15-20 in 2018 to 750-800 in 2022. In Siddharth Nagar alone, the land under cultivation of kalanamak rice went from 2,805 hectares in 2019 to 10,000 hectares in 2022. The farmers' income has increased manifold as the wholesale price of kalanamak rice has increased from Rs. 40 in 2018 to Rs. 135 in 2021. It is now being exported to other countries with a vision to make it a major export commodity of India.

The government changed the fate of kalanamak by identifying the problem it faced. First problem that the government identified was the identity, access and marketing of the product. For this the government gave a marketable and more appealing name to kalanamak rice to attract foreign audiences and thus, the Buddha rice came into existence. This also gave it a huge export opportunity to Buddhist countries like Korea, Japan, Vietnam and China.

The name 'Buddha rice' was adopted as it is believed that Lord Buddha broke his fast with the pudding made from this rice and the government promoted farmers to sell this rice in packaging with Lord Buddha's picture on it. Government also gave assistance to its value chain which included demonstration of cropping systems, distribution of high yielding variety seeds, improved farm machine, integrated nutrient and pest management, harvest equipment and tons of training. The government also organised special festivals to give market access to farmers like a three-day kalanamak fest in March 2021 in collaboration with the export promotion department. This festival brought farmers and buyers to the same platform. Similar strategies were taken for all 137 unique products under ODOP to transform their value and supply chain. The government also opened a common facility centre to integrate all the activities from training, finance, storage, processing, grading, packaging to bar coding under one roof.

Photograph by Sudhish Singh, 3rd year, B.A. (H) Hindi

These centres are being developed for all products under ODOP with 90% of the centre cost being borne by the UP government along with financial assistance worth Rs. 8200 crore to farmers and entrepreneurs under this scheme. The government has also signed an MOU with e-commerce giant Flipkart to sell the products and the ODOP products from the state have garnered Rs. 1600 crore sales on the platform since Flipkart's partnership with the state in 2018, providing digital footprints to these local entrepreneurs. Thus, with the identification of problems and provision of remedy, the UP government's ODOP initiative is not only increasing employment but also giving limelight to long-lost treasures of India by helping farmers and craftsmen in getting their due rights as well as a vision to make Uttar Pradesh a manufacturing and exporting hub.

MY HOLLOW TREASURES

Riya Agarwal, B.A. (H) English, (Alumnus, Batch of 2022)

In childhood's innocence, I yearned for things so bright
Material pleasures I craved with all my might,
A world of plenty beyond my grasp
Where all my wants were unfulfilled, my needs unasked.

Now as an adult, my eyes see clear
Those once-coveted treasures are no longer dear
Action figures and blurays, once a desperate plea,
Now hold no value, no longer do they bring glee.

Pirated disks bought by my father's hand,
Their absence once brought me to weep and stand
But now they sit with in difference and neglect,
A once-prized possession no longer does it reflect.

A gift from my mother, given last summer
But it was a reminder of a life of clutter,
A time of unbridled selfishness and greed,
A past that haunts me with its vain misdeeds.

I wonder now, what drove me then,
To chase empty dreams and forsake true friends,
I see the cost of my youthful obsession,
And mourn the loss of my past innocence with solemn reflection.

Oh, how I yearn for the naivety of youth,
Before the world consumed me with its ruthless truth,
Before I learned the cost of desire,
Before I was consumed by its burning fire.

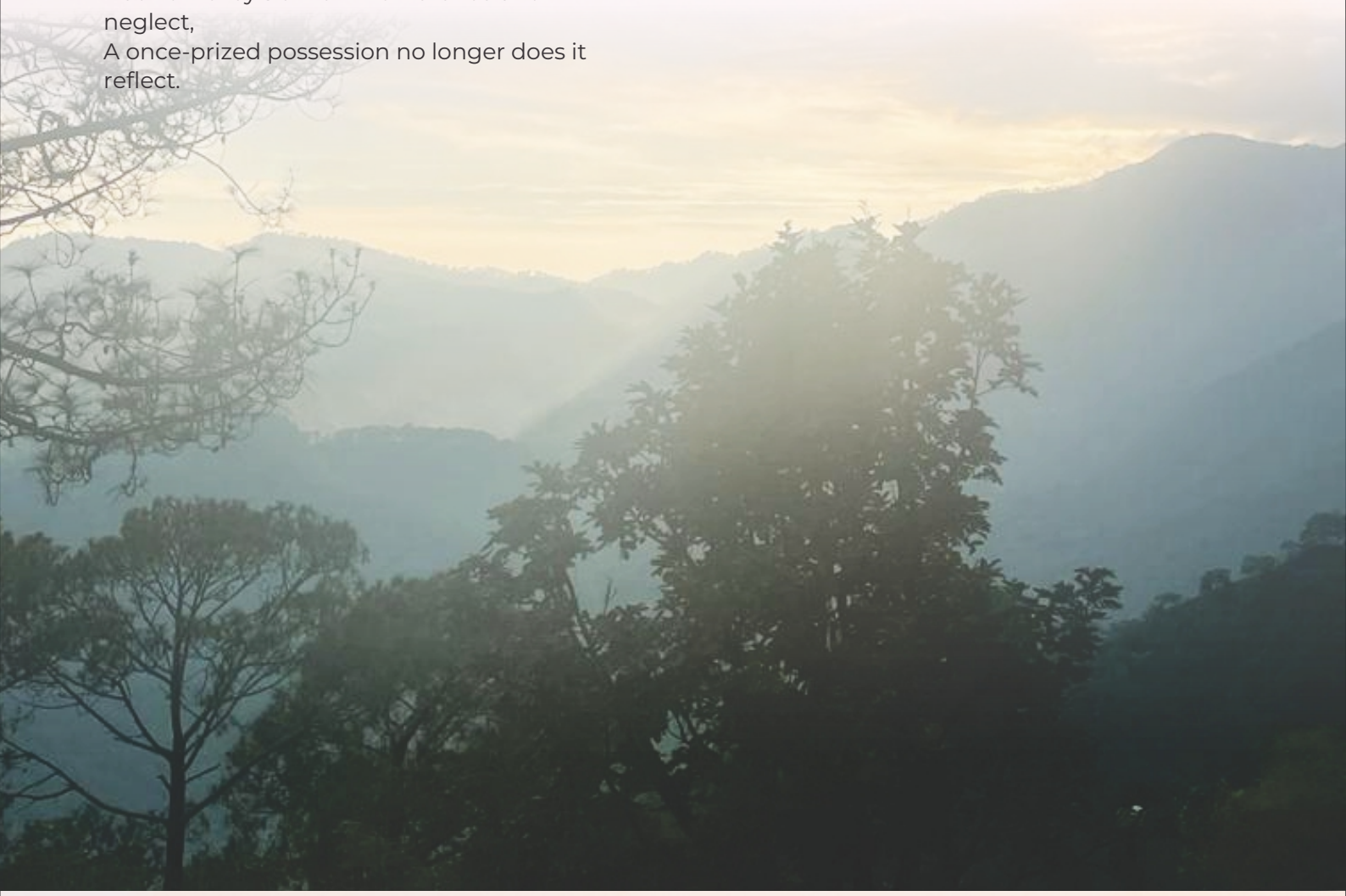

Photograph by Dr. Nirmalya Samanta, Associate Professor, Department of English.

RECORD

Prof. Madhu Batta, Professor, Department of English

They ask me to give the record
Of my deeds
But what tangible records could be given
Of works intangible.
I just take your name in my heart
You do my works
Spreading love, spreading light
Wishing wellness, wishing joy
And watching their fulfillment,
The worth of such tasks being done
Can never be counted.

LOVE

All of the restlessness of the world
Is the restlessness to meet Him.
All the flow of rivers
And gushing forth of the blood in the body
From head to toe
Is just love.
The blowing of the wind,
Its running with all its wild power
From one place
To the other
Where the heat of emotions
Has lifted it from earth
Is nothing but love.

Prof. Madhu Batta is an eminent poet and painter from the Department of English. The selected poems are a part of her poetry collection, "Offerings" and are illustrated by her paintings. An exhibition of her paintings was held in the college on 21st October, 2020.

IMMORTAL LIFE

Dr. Moirangthem Jiban Singh, Assistant Professor,
Department of Environmental Studies

On your graveyard
Lamenting,
Mother is soliciting you,
Come back my valiant son
Come back my fearless daughter
Call me once 'Mother'.

Mother's precious pearl
Wakeup once
Your lovely motherland
Can't bid bye
Lamenting for you
Listen to it once.

After giving sacred verse,
After showing the path of peace,
Where are you going?
Come back.

Photograph by Shreya Rana, 3rd year, B.A. Prog.

WHISPERS OF THE SOUL: A JOURNEY INTO SPIRITUALITY

Mr. Sumit Suhag, Senior Assistant, Accounts

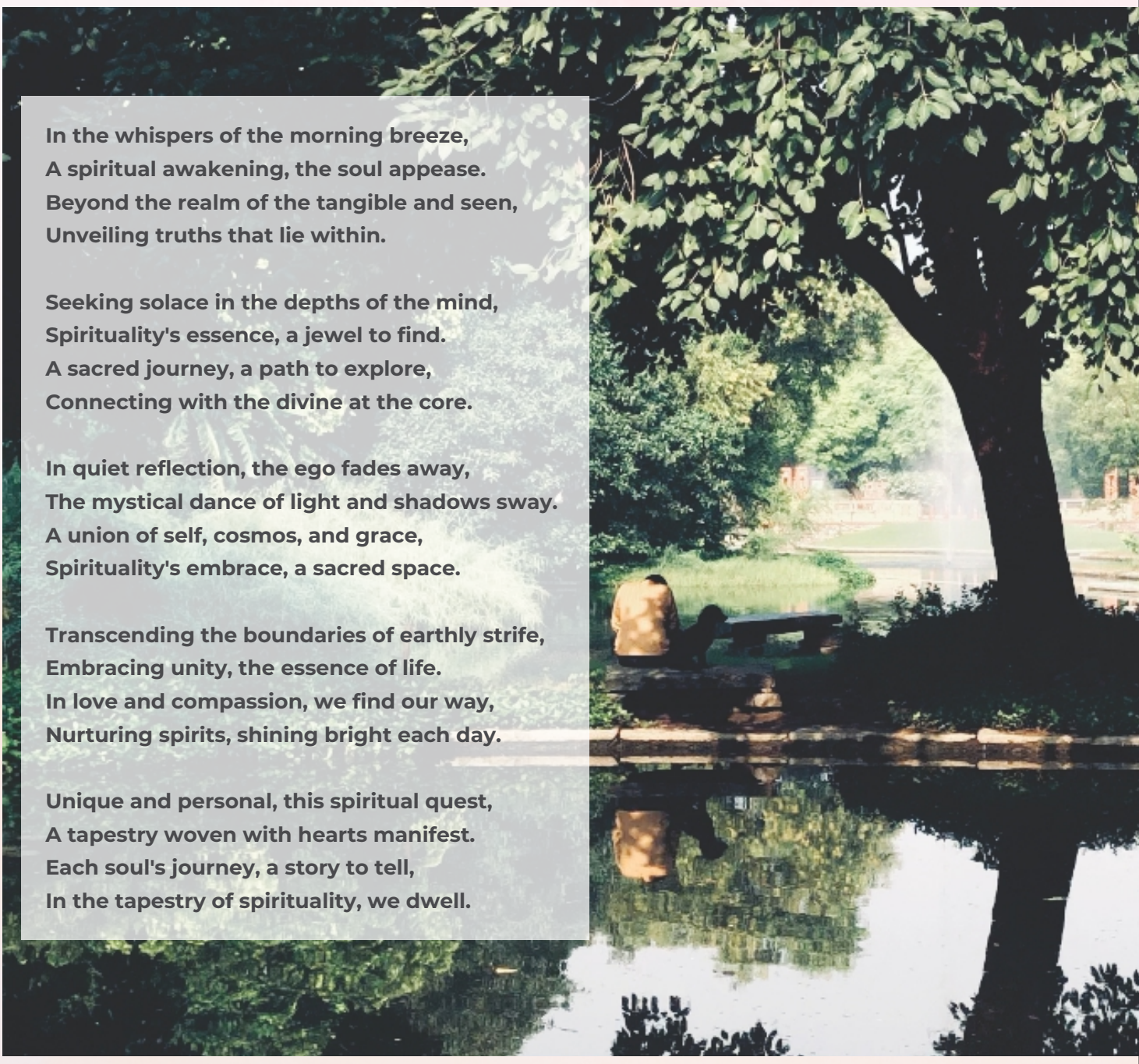

In the whispers of the morning breeze,
A spiritual awakening, the soul appease.
Beyond the realm of the tangible and seen,
Unveiling truths that lie within.

Seeking solace in the depths of the mind,
Spirituality's essence, a jewel to find.
A sacred journey, a path to explore,
Connecting with the divine at the core.

In quiet reflection, the ego fades away,
The mystical dance of light and shadows sway.
A union of self, cosmos, and grace,
Spirituality's embrace, a sacred space.

Transcending the boundaries of earthly strife,
Embracing unity, the essence of life.
In love and compassion, we find our way,
Nurturing spirits, shining bright each day.

Unique and personal, this spiritual quest,
A tapestry woven with hearts manifest.
Each soul's journey, a story to tell,
In the tapestry of spirituality, we dwell.

Photograph by Shreya Rana, 3rd year, B.A. Prog.

KABUL ON 26TH FEBRUARY, 2010

By Dr. Moirangthem Jiban Singh, Assistant Professor, Dept. of EVS

This is an excerpt from a book which is to be published.

Brave Soldiers! I don't have any words to thank you. It's your selfless love towards our nation that makes you offer the supreme sacrifice for us! It's your bravery, courage, skills, perfection and excellency that makes you special and eligible to serve our motherland.

World's 4th largest and powerful military that is our Indian Defence Forces works in the world's toughest battle fields. They serve our country in extreme conditions. They are our real heroes. At present, it is one of the top militaries in the world having a glorious history.

Army is the one of the most important bodies of our defence system and we can't imagine living our lives peacefully without their sacrifice. Their selfless service and dedication towards the nation is not just unbelievable but also unimaginable. We have heard about the superheroes in comics, TV shows and in stories. They are just fictional characters. But what about the real heroes? Do they exist? Yes, they do, in the army.

One of the myths among people is that the army is for those who don't get a proper job. However, this is not true. Army is for those who have massive hearts.

The life in army is not easy and cannot be compared to any ordinary one. Protecting our country's border 16,000 feet above the sea level at a temperature of -50oC at Siachen Glacier, patrolling in the blistering heat of 50oC degrees in Rajasthan and Naxalite area in Western Ghats, and controlling the emergency declared areas in Northeast India; are these jobs, or duty?

The Armed Forces are unique in many ways. To some, they are unique because of their disciplined life, and to others, the glamour of uniform is overwhelming. But do we ever try to see the exhausted faces behind the disciplined life or the wounds in the wake of the glamorous uniform? The Army Medical Corps have also produced those who ought to be worshipped and Major Laishram Jyotin Singh, Ashok Chakra, is one of them.

Major Laishram Jyotin Singh was born on 14th May 1972 at Nambol Awang Leikai in Bishnupur District of Manipur. He is the son of Shri Laishram Markanda Singh and Smt. Ibeyaima Devi. Major Jyotin was the third among the four highly accomplished siblings. His sisters Bina Kumari Devi and Ragini Devi work as a doctor and a lecturer in mathematics respectively. They both are married and live in Imphal. His younger brother Dr. Laishram Boeing is teaching at IIT, Guwahati.

He did his early schooling from Manipur Public School, Imphal and MBBS from the Regional Institute of Medical Sciences (RIMS), Imphal in 1996. He loved sports and completed his two-year Postgraduate Diploma in Sports Medicine from Baba Farid University of Health Sciences, Patiala in 2001. He joined the Army Medical Corps on 15th February 2003 at Military Hospital, Silchar. On completion of his basic military training, he was posted to a high-altitude area with 'Border Roads Organisation' in a medical unit of the General Reserve Engineering Force (GREF) on 8th July 2003. There, he didn't just look after the only GREF personnel but also provided medical care to civilians and their families in the remote areas of Arunachal Pradesh.

He joined the Military Hospital, Agartala on 9th February 2006 and literally ran the entire hospital single-handedly. Apart from his routine work in hospital, he shared his experience as a 'Sports Medicine Expert' with jawans who were being trained in that area. He spent his evenings playing as he was a keen football and badminton player. The inter-unit football and badminton matches helped him to interact with troops and he became popular in the social circle of the garrison within no time. His advice was frequently sought after by one and all in the garrison, as almost all Army personnel are fitness freaks. Major Jyotin was invited to be a part of the Fourth International Military Sports Council (IMSC)/ Council International Sport Military (CISM) Military World games organised by the Indian Armed Forces at Hyderabad in 2007. There, he worked as a medical officer in charge of the anti-doping unit. He was also invited to attend the Commonwealth Youth Games at Pune in 2008.

Major Jyotin was a sincere and diligent officer and was always ready for any task beyond his regular duty. While working as a medical officer in the military hospital, he provided special services to the Government Hospital and College, Agartala and helped many patients to get rid of their ailments while playing. He received his Sainya Sewa Medal in 2006 and High Altitude Medal in 2007.

On completion of his tenure at Agartala, he was transferred to the Army Recruiting Office, Amethi on 14th July 2008. Being among the best medical officers of the Army Medical Corps, he was selected for foreign mission posting and was deputed to the Indian Medical Mission in Kabul on 13th February 2010, where he started looking after patients in the Indian Mission Hospital.

Illustration by Reena, 3rd year, B.A. (H) English

ONLINE TEACHING-LEARNING: CHALLENGES AND OPPORTUNITIES DURING PANDEMIC

By Dr. Abhishek Singh, Assistant Professor, Dept. of Management Studies

The educational environment has been completely changed by online learning, which today offers a huge arena of options for knowledge, growth and self-improvement to the students. These opportunities do, however, come with a number of difficulties that must be understood and resolved. The popularity of online learning, often known as e-learning, has expanded recently as a result of technical advancements and better internet access. While online learning has many advantages for students, including ease and flexibility, there are also many drawbacks.

Numerous horrific occurrences took place across the world because of the corona pandemic. Almost every part of the globe was under lockdown. This unexpected calamity had an impact on both educational activities and the operations of many other industries. Only online education was a possibility when academic activities could be carried out without disruption. However, many educational institutions were unable to efficiently accomplish educational activities as they lacked expertise in online teaching prior to the outbreak. Though the lockdown opened new prospects for online teaching, the absence of direct, in-person contact and face-to-face interaction with students and instructors remained a very challenging aspect of online learning both for the teachers as well as the students. Some people prefer face-to-face engagement in traditional classroom settings, while others prefer the flexibility and self-paced aspect of online courses. Students who struggle with self-directed learning or who require more customised attention found it extremely hard to adapt to online learning techniques.

Online education got frequently hampered by issues with internet access, power-cut, and lack of technological devices like PCs, laptops, and mobile phones in almost all the universities of the country. Rural areas often have a large proportion of low-income families, many of which are joint, making it difficult to provide a quiet environment. As a result, it became very difficult to successfully conduct online education in these areas even when internet connectivity was available. Both, students as well as teachers find it difficult to focus sometimes leading to the failure of the teaching-learning process. Even with the internet access, electricity and the required devices, students remained enmeshed in the web of social media and are unable to concentrate on their studies and use these resources properly. Despite these obstacles, online education has constantly improved. Institutions and educators have been working tirelessly to enhance the online learning experience by integrating interactive components, providing additional assistance, and creating virtual communities in order to encourage engagement and get past the disadvantages of standard online forms. Under the direction of the University Grants Commission, colleges and universities are also conducting massive open online courses (MOOCs) in the regional language on a big scale so that students in remote areas can study in their regional language and comprehend the subject thoroughly.

The educational landscape is brought to the forefront by online learning, which presents both potential and obstacles. We may develop a setting that maximises the chances for adaptability, accessibility, cooperation, continuous learning, and cost-effectiveness by recognising and tackling the difficulties of face-to-face interaction, self-discipline, technical problems, and scarce resources. Online learning has the potential to revolutionise education and empower people on their lifelong learning journeys through deliberate technology integration, creative instructional design, and learner-cantered approaches. A favourable change in the architecture of the educational system appears to be coming in the future, given the popularity of online education and ongoing government initiatives to improve the quality of online education.

Photograph by Sumit Kumar, Alumni, B.Com (H)

SUSTAINABLE GROWTH OF 'ATMANIRBHAR BHARAT': TOWARDS A CIRCULAR ECONOMY

By Dr. Arti Yadav, Assistant Professor, Dept. of Commerce

The goods of today are the resources of tomorrow at yesterday's resource prices.

This quote in itself is sufficient in explaining the concept of a circular economy. As per UNCTAD, "A circular economy involves markets that give incentives to reusing products, rather than scrapping them and then extracting new resources."

The overall functioning of a circular economy can be well-understood through **Figure 1**. In such an economy, all forms of waste, such as clothes, scrap metal and obsolete electronics, etc. are returned to the economy or used more efficiently. By implementing the system of circular economy along with fulfilling the social needs, other issues like biodiversity loss and climate change can also be resolved. Some of the other advantages that a circular economy offers are effective management of pollution, waste, and emissions of greenhouse gases along with growth in jobs and prosperity **(Figure 2)**.

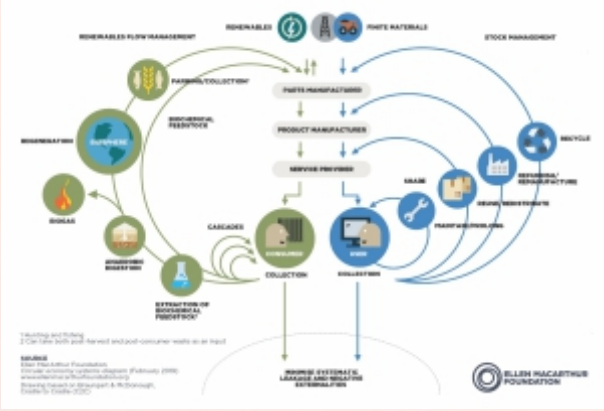

Figure 1

Further moving towards circular economy's value in the Indian context, according to Ellen MacArthur Foundation's estimates, circular economy adoption in India will bring an annual benefit to a tune of Rs 40 lakh crore in 2050 and reduce GHG emissions by 44 percent. An enormous increase in population and urbanisation level in India has led to an

Figure 2

increase in consumption level and generation of waste. Between 1970 to 2015, six times rise in annual material consumption has been witnessed and by 2030, it is expected to grow up to 14.2 billion tonnes leading to a substantial growth in the waste level. The management of this huge waste is, no doubt, going to pose challenges, both in terms of investment and operational aspects.

India has always worked towards the sustainability aspect, which is evident through the practices implemented at various levels, such as in India's culture, religious practices, art, and policy. It can be easily verified by Prime Minister Shri Narendra Modi's statement at St. Petersburg International Economic Forum in 2017, "It is our conviction that we have no right to snatch from our future generations, their right to have a clean and beautiful earth. It is a part of our thinking and for that reason we do not believe in exploitation of nature. We people do not have the right to take more than necessary from nature."

Therefore, the government of India has already started taking initiatives in working towards a circular economy by promoting projects and policy formulation in multiple areas like, liquid waste management, for instance. The Swachh Bharat Mission-Urban (SBM-U) in 2014 is also one of the significant steps based on the '3R' principles of reduce, reuse and recycle. However, waste management and disposal are still persistent challenges around the world, including India.

The concept of circular economy, thus, with its effective implementation is an opportunity to build the norm of environmental consciousness. Moreover, India has a competitive advantage over mature economies in terms of its potential for development and its budding markets; and the vision in terms of a circular economy will only strengthen its prosperity in a sustainable way.

हिंदी गद्य एवं कविताएँ

ILLUSTRATION BY TANNU PATHAK, B.COM (HONS.) 3RD YEAR

Photograph by Aanchal Jain, B.A. Program, 3rd Year

पहला चरण है, मां–पिता जीवन के,
सीखते हैं जिनसे चलना हम।
शब्द भी पहला मां का होता है,
परेशान भी पहले मां होती है,
पिता अब भी अंजान रहते है,
क्योंकि हमेशा बाहर रहते हैं।
सुबह जाते और रात को थके आते,
न हम सुबह देखते न रात को मिल पाते
सुबह मां के साथ और रात नींद के साथ,
यही हमारी दुनिया रहती।
सो जाते जब पिता आते,
गोद में लेकर हमे खिलाते,
होश संभालते पिता को जानते,
रहते फिर भी अंजान हम।
पिता होते रहस्य हैं,
मां फिर भी सहज हैं,
चाहते समझना दोनों को हम,
आता फिर भी एक है (मां)।
क्या पता पिता क्या होता,
केवल वही समझता वो क्या होता,
सारे दुखो को झेलकर
पहुंचाता हम तक सुख को है,
बलिदान पिता का क्या है,
फिर भी नहीं पता चल पाता है।

- विवेक कुमार,हिंदी ऑनर्स, द्वितीय वर्ष

दिल्ली के PG से

तू थी तो डांटती थी मनाती थी,
अब रूठने का मन भी नहीं करता मां।
डर लगता है इस शहर की भीड़ से,
कही चलते हुए खो न जाऊं मां।
तू जब भी पूछती है झूठ बोलता हूं,
यहां सब कुछ अच्छा चल रहा है मां।
ज़रा सी चोट लग जाए तो घबरा जाती थी,
आज कल रोटी बनाते वक्त हाथ जलता है मां।
रास्ते में कोई बच्चा जब भी उंगलियां पकड़ के चलता है,
मैं भी चला करता था बचपन की याद आती है मां।
हां अब मैं तुम्हें तंग नहीं करता ना,
इस अजनबी शहर में जल्दी उठ जाता हूं मां।
अब भी बिखरा रहता है सामान कमरे में,
ये आदत इतनी जल्दी नहीं जाती है मां।
किसी की नजर न लग जाए मुझको,
इस लिए काला टीका लगाती थी मां।
मैं अब तक नहीं सीखा हूं खाना बनाना,
कभी कच्ची रोटी तो कभी कच्ची सब्ज़ी खाता हूं मां।
तू ये सब पढ़ के रोने न लग जाना,
मैं जैसा भी हूं हर हाल में खुश हु मां।

- चंद्रप्रकाश, हिंदी ऑनर्स, द्वितीय वर्ष

Photograph by Sudhish Singh, B.A. (Hons.) Hindi, 3rd Year

अकेलापन

अकेलापन सा छाया है मन में,
दिल में उम्मीदों की कमी है।
बीती यादों के खंजर से,
दर्द की लहरें बही जा रही हैं।।
आँखों में नमी, रूह में उदासी,
ख्वाबों की मदद से जी रहे हैं।
जीवन के रंगों में खो गए हैं,
धुंधला सा इंगित दिल में छा रही हैं।।
तन्हाई की गहराई दबा रही है,
दिल में दर्द की आग जला रही है।
यादें चीरती हैं अंधेरे में,
ख्वाबों की खिल्ली तोड़ी जा रही हैं।।
मुश्किलों का सामना कर रहें हैं,
खुद को ढक कर आगे बढ़ रहें हैं।
पर दर्द की लहरों का सहारा,
दिल की गहराई में ढूंढ रहे हैं।।

- महेश सिंह, (हिंदी ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

Photograph by Sudhish Singh, B.A. (Hons.) Hindi, 3rd

ज़ख़्म

ज़ख़्मों की गहराई से जब नज़र लगाई,
दर्द भरे ख़्यालात की बौछार आई ।

दिल के रास्तों में छुपे ज़ख़्मों के राज़,
चुभते हैं हमेशा,बिखरते नहीं, बस जाते हैं।

ज़ख़्मों की अदाएं हैं कितनी गहराई से भरी,
जो खुद गवाही देती हैं,दबी नहीं रहती हैं।

दिल की आहटों में पिघलते हैं ये ज़ख़्म,
सुनते हैं दर्द को,मगर भूलते नहीं हैं।

जख़्म छुप जाते इस रुख़–ए–हयात से,
मगर उनकी सूरतें यादें बनकर जीती हैं।

- महेश सिंह, (हिंदी ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

Illustration By Saffiya, B.Com (Hons.), 3rd Year

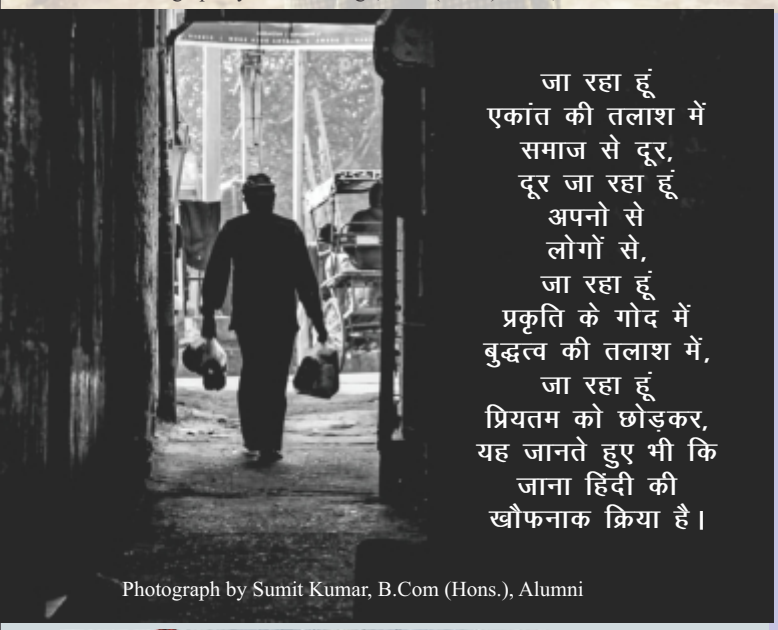

जा रहा हूं
एकांत की तलाश में
समाज से दूर,
दूर जा रहा हूं
अपनो से
लोगों से,
जा रहा हूं
प्रकृति के गोद में
बुद्धत्व की तलाश में,
जा रहा हूं
प्रियतम को छोड़कर,
यह जानते हुए भी कि
जाना हिंदी की
खौफनाक क्रिया है।

Photograph by Sumit Kumar, B.Com (Hons.), Alumni

Illustration by
Anshika Patial,
B.A (Hons.) Philosophy,
3rd Year

यहाँ कुछ भी मेरा मौलिक नहीं है,
सब कुछ चुराया हुआ है।
हर एक पंक्ति, हर एक काव्य
मैंने चुराया है तुमसे।
तुम्हारी आँखों से,
चुराई है मैंने वेदना।
और उनसे बहते आँसुओं से,
चुराई है मैंने करुणा।
तुम्हारे हाथों से,
चुरा या है मैंने मिलन का संयोग।
और तुम्हारे हाथों की मेहंदी से,
चुरा या है मैंने इन सभी
कविताओं का प्रेम रंग।
तुम मेरी सबसे बड़ी चोरी हो,
तुम से चुराया है मैंने ईश्वर।

- हर्षित मिश्र
हिंदी (आनर्स), प्रथम वर्ष

Illustration by Tannu Pathak,
B.Com (Hons.), 3rd Year

हे प्रभु जग के पालनहार आकर के देखो एक बार ।
जग की नैया डूब रही है,
आ जाओ प्रभु ले पतवार ।। हे प्रभु...
कौन न जाने नरसिंह रूप में प्रहलाद को बचाया,
खंब फाड़कर भक्तों को, अपने सीने से लगाया।
जल, उठा सारा संसार
जग की नैया डूब रही है,
आ जाओ प्रभु ले पतवार ।। हे प्रभु...
मानव–दानव में परिलक्षित, भरा स्वार्थ और अहंकार,
अभिमानी दानवता का अब, हो चुका है सीमा पार ।
अब ना बन्द करो दरबार
पापी का प्रभु करो संहार ।
जग की नैया डूब रही है
आ जाओ प्रभु ले पतवार ।। हे प्रभु...
सूरदास का हाथ पकड़कर, द्रौपदी को वस्त्र बढ़ाया,
'पार्थ के कर में शस्त्र थमाकर, रंक सुदामा को गले लगाओ ।।
विनती सुन लो हे लीलाकार,
शरणागत की सुनो पुकार
अधम नन्दन अब ऊब चुका है,
आ जाओ प्रभु ले पतवार ।। हे प्रभु...

- नंदन झा (हिंदी ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

Illustration by Saffiya, B.Com (Hons.), 3rd Year

कब

कब ये पेड़ हरे होंगे,
कब ये कलियाँ फूटेंगी
और ये फूल हसेंगे।
कब ये झरने अपनी प्यास भरेंगे,
कब ये नदियाँ शोर मचाएंगी।
कब ये आज़ाद किए जाएंगे सब पंछी,
कब जंगल साँसे लेंगे।

कब सब जाएंगे अपने घर,
कब हाथों से ज़ंजीरें खोली जाएंगी।
कब हम जैसों को पूछेगा कोई
और ये फ़क़ीरों को भी
किस्से में लाया जाएगा ।
कब इन कॉटों की भी क़ीमत होगी
और मिट्टी सोने के भाव में आएगी,
कब लोगों की ग़लती टाली जाएगी।

कब ये हवाएं पायल पहने झूमेगी,
कब अम्बर से परियाँ उतरेंगी ।
कब पत्थरों से भी खुशबू आएगी,
कब हंसों के जोड़ें नदियों पे बैठेंगे,
बरखा गीत बनाएगी
और मोर उठा के पर
कत्थक करते देखे जाएंगे।
नीलकमल पानी से इश्क़ लड़ाएंगे,
मछलियाँ खुशी के गोते मारेंगी,

कब कोयल की कूक सुनाई देगी,
कब भँवरे फिर
गुन– गुन करते लौटेंगे बागों में
और कब ये प्यारी तितलियाँ कलर फेकेंगी
फिर सब कुछ डूबा होगा रंगों में।

कब ये दुनिया रोशन होगी,
कब ये जुगनू अपने रंग में आएंगे।
कब ये सब मुमकिन है,
कब सबके ही सपने पूरे होंगे।
कब अपने मन के मुताबिक़ होगा सब कुछ,
कब ये बहारें लौटेंगी ,
कब वो तारीख़ आएगी ,
बस मुझको ही नहीं,
सबको इंतज़ार है।

- सुधाकर, (हिंदी ऑनर्स), तृतीय वर्ष

Illustration by Dhananjay, B.A. (Hons.) English, 1st Year

हम अनाथ हैं, हम अनाथघर के बाशिंदे
जन्मे हम किसी और से
पालते हमें कोई और हैं।
क्या मजबूरी रही उन माता पिता की
जिन्होंने त्यागा हमे अपने घर से
क्यों छोड़ गये हमे अंजान शहर में
जानते है बस इस घर को
जिसे हम अपना कहते
वो न जाने किसका घर है
न मेरा न तेरा
ये घर है सारे जहां का
जिसने जन्म दिया
वे क्यों गए हमें त्याग
क्या यह बलिदान है,
जिसने पाला वह महान है
क्या यही समाज का चलन है ?
ख़ैर छोड़ो!
हम क्या जाने,
समाज क्या है?
हम बस इतना जाने ,
हम अनाथ हैं
जिसका न कोई अपना
कल था न आज है
हम अनाथ हैं
और अनाथालय
हमारा घर है।

- विवेक कुमार,हिंदी ऑनर्स, द्वितीय वर्ष

Photograph by Shreya Rana, B.A. Program, 3rd Year

बूढ़ा होता जीव !

मनुष्य बूढ़ा होता है ,
अपनी मृत्यु को खुद से
दो कदम दूर देखकर ।
जब मन में होने लगती है घबराहट
शरीर थकने लगता है ,
असमय, निष्काम होकर।
काल भी मृत्यु शैय्या पर
जीव के स्वागत को हो पड़ता है खड़ा।
मस्तिष्क में भी मचने लगती है उठल–पुथल
जीवनकाल के मीठे सुनहरे समय
का चित्र छा जाता है आंखों के आगे।
काल से मिलती है कुछ क्षणों की मोहलत
अनिश्चितता के साथ।
ताकि मरण से पूर्व स्वजनों को
देख सके मनुष्य आंखों के आगे।
मिल सके तुलसी जल का पवित्र भोग, अंतिम क्षणों में,
परंतु अचानक!
हृदय में होता है कंपन, काल का होता है आह्वान
जीवात्मा को साथ ले जाने का।

Photograph by Aman Raj, B.A. (Hons.) Political Science, 2nd Year

रथ काल का चलने को हो पड़ता है तैयार
फंसने लगती है डोर श्वास की।
बूढ़ापन होने लगता है हावी,
तीव्र होता है हृदय का स्पंदन,
धक–धक का उठने लगता स्वर,
और गहराने लगता है नीरस वातावरण के मध्य।
काल और प्राण के बीच निरंतर चलने वाला युद्ध
पहुंचता है चरम पर।
थकने लगता है जीव बूढ़ापे से हारकर
काल को मिलती है विजय,
मनुष्य का यश और शौर्य
रण में एकाएक हो जाते हैं पस्त।
जीव लेती है सिसकियां,
सहसा मनुष्य को आती है हिचकियां,
देखते देखते रुक जाती है हिचकी
थम जाती है सांसें , खुल जाती हैं आंखें
रह जाता है मुख खुला का खुला
चला जाता है बुढ़ापा मृत्यु के साथ।
छा जाता है अंधकार चहुं दिशाओं में
और रह जाता है पार्थिव देह मनुष्य का
अग्नि में विलीन होने के लिए।

- हर्ष पाण्डेय, बी.ए. हिंदी,
पूर्व छात्र, रामानुजन कॉलेज

गहरी नींद में
सोते हुए
जब,
डरावने,
अनचीते,
गंभीर,
सपने आ रहे हों
और,
उसके बाद
आंख खुल जाए
तो सुकून मिलता है
जैसे सब ठीक है।
महफूजियत का एक ठिकाना नज़र आता हैं
जैसे कि सब ठीक हो
लेकिन फिर उसका क्या...?
जो दिन भर
दिमाग में कौंध मचाएगा..?
कि
आखिर क्या ही
और क्यों ही
मन विचलित हैं।
दिन - रात परेशान
वो आदमी
अपनी आम जिंदगी में
ठीक है या नहीं
ये उसके अनचीते
सपने ही बताएंगे।

- विरेश 'श्रीराजे',
बी.ए. हिंदी, पूर्व छात्र,
रामानुजन कॉलेज

Photograph by Shreya Rana, B.A. Program, 3rd Year

उठते हुए आशाओं की ज्योति: COVID का के बाद नया सफर

जलती रौशनी नई आशा की,
COVID के पश्चात यह नया सफर है।
संकट के आवेग में भी विश्राम है,
हमारी ऊर्जा अद्वितीय बार है।

परिवर्तन की आवाज गरजती,
नव जीवन के प्रारंभ को नमन करती।
आत्मनिर्भरता की शक्ति सर्वदा,
उद्यम, साहस नई उमंग देती।

आपातकाल में जुड़े रिश्तों की,
महत्वपूर्णता समझ में आती है।
संयम और साझेदारी दिखाते,
अपार स्नेह और समरसता लाती है।

पर्यावरण के समृद्धि की ओर,
हरित जीवन की ओर आगे बढ़ते हैं।
संतुलन और संरक्षण को महत्व देते,
प्रकृति को स्नेहपूर्ण आदर देते हैं।

असमानताओं को दूर करते,
न्याय की प्राथमिकता पुनः स्थापित करते हैं।
ज़बरदस्ती नहीं, सबके लिए विकास करते,
समानता को गहराते हैं और संपादित करते हैं।

अवसरों की गरिमा संचालित करते,
स्वयंसेवकों के शक्ति को बढ़ाते हैं।
धैर्य और नया स्वप्न संचालित करते,
जीवन को नये आकर्षण से सजाते हैं।

हम उठेंगे बाधाओं से ऊपर,
नए युग की गाथा लिखेंगे।
COVID के बाद की नई दुनिया को,
हम स्वयं सजाएंगे और सुंदरता से भरेंगे।

- श्री सुमित सुहाग,
वरिष्ठ सहायक, लेखा विभाग

Photograph by Ayan Hamid, B.Sc (Hons.) Statistics,2nd Year

तुम कुछ लिखना अमृता

तुम कुछ लिखना अमृता
बचपन की यादें, जो रह गई होंगी सिमटकर
सिरहाने या तकिये के नीचे
उन सलवटों को तुमने खोलने से खुद को रोका होगा
अब उन उम्मीदों को रोकना नहीं,
तुम खोलना उन सलवटों को तय दर तय
तुम कुछ लिखना अमृता

तुम रहस्य तो न थी, तुम गुमसुम भी न थीं
तुमने अपने ख़्वाबों के नगर
सपनों के महलों को बनते और ढहते देखा होगा
फूलों को खिलते, कुम्हलाते और मुरझातें देखा होगा
अब तुम सपनों में फूलों से नए रंग भरना
तुम कुछ लिखना अमृता

तुम कभी रोती नहीं,
शायद एक पिता ने कभी कहा होगा तुमसे,
जो भी हो रोना नहीं
तुमने आँखों की उस नदी के उफान पर
बांध लगाया होगा, कहीं कोई तुम्हें स्वछंद न समझ ले
तुमने अपने हृदय की हिलोरों को रोका होगा
अब हृदय विशाल अनन्त कर लेना
तुम... कुछ लिखना अमृता

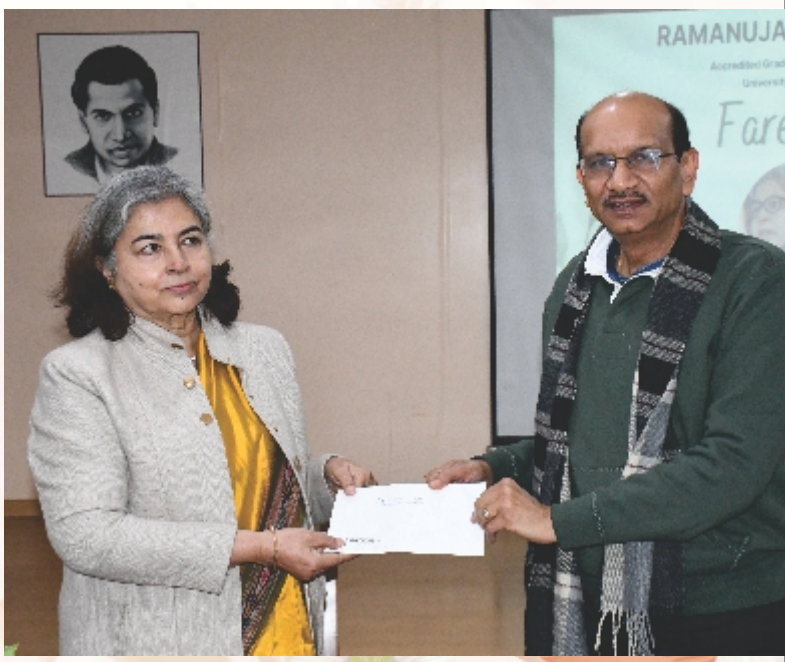

तुमने देखा होगा देश का विभाजन
इंसान से इंसान का बटवारा
वो गांव की मिट्टी, वो खिलौने
जिन्हें तुम अब भी चाहती हो
खोजती हो और रख लेती हो अपने दामन में
जैसे कि वो तुम्हारे बचपन की यादें हों
अब उन यादों को संजोकर रखना
तुम... कुछ लिखना अमृता

तुम्हारा ज्ञान सबने देखा है
तुम आनुभविक ज्ञान से भरी हो
बस कुछ मन में सोचकर बोलती हो
बाक़ी सन्नाटा कह देता है तुम्हारी अनकही,
अब तुम चुप न रहना
तुम... कुछ लिखता अमृता

तुम दार्शनिक सी दृष्टि लिए
हर शब्द पर एक कथा जानती हो
कभी कहती हो कि वो सीमित सी ज़िन्दगी
अच्छी लगती थी, अब वो न रही
रही तो बस हलचल, जो पहले तूफ़ानो से कुछ कमतर है
तुम अपने विचारों में कोलाहल फिर से लाना
तुम... कुछ लिखना अमृता

तुम निःशब्द होकर भी सब कुछ कहती हो
आँखें बताती है नाराज़गी तुम्हारी
बस मैं आत्मनिर्भर हूँ, मुझे किसी से क्या मतलब
ऐसा कहते हुए जोड़ लेती हो, पूरे जहान को अपने साथ
तुम इस जहान में विलय न होना
तुम... कुछ लिखना अमृता

ये बादल छट जाएंगें
तुम अकेली न रहोगी, तुम तो पहले भी अकेली न थी
कुछ तो था जो साथ था तुम्हारे
जो साथ था वही अब बेशुमार हो गया है।
अब अंतर्द्वंद समाप्त हो चला
और निकला है एक नया दिन
तुम संभालो, इसे ऐसे न छोड़ देना
तुम... कुछ लिखना अमृता

अभी एक रूप छोड़ा है तुमने
अभी अधिशेष बाक़ी है
सेवानिवृत हुई हो
सेवा से निवृति नहीं हुई
अब तुम हर क्षण आंदोलित रहना
तुम... कुछ लिखना अमृता ॥

– डॉ. अजय कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
राजनीति विज्ञान विभाग रामानुजन कॉलेज

विदाई समारोह
एसोसिएट प्रोफ़ेसर अमृता सिंह
राजनीति विभाग
कार्यकाल– (1990 –2022)

हौसला

ना झुका था ना झुका हूँ,
सदियों से मै इंसान,
उदाहरण सा खड़ा हूँ।
बाधाएं, कठिनाइयाँ आई है बहुत सी,
मात देकर सभी को,
मैं निरंतर आगे ही बढ़ा हूँ।
ना झुका था ना झुका हूँ,
सदियों से मै इंसान,
उदाहरण सा खड़ा हूँ।
माना कि आज वक़्त मेरे साथ नहीं है,
मजबूर हूँ मगर बंधे मेरे हाथ नहीं है।
भरोसा है जीत जाऊंगा,

ये जंग ज़िंदगी की
क्योंकि दिन निकला न हो जिसका,
ऐसी बनी कोई रात नहीं है।
मै हूँ मिसाल अपनी हिम्मत
अपने हौसलों की,
आगे जिनके कोई ठहरा नहीं है।
मेरे मन की सीमाओं पर,
किसी का पहरा नहीं है।
उठूँगा एक दिन जरूर,
बस आज औंधे मुंह पड़ा हूँ,
ना झुका था ना झुका हूँ,
सदियों से मै इंसान,
उदाहरण सा खड़ा हूं।

- डॉ. बेबी, अध्यक्ष, पुस्तकालय विभाग

प्रवासी मज़दूर

अपने श्रम से
नगरों महानगरों को
भव्य सुंदर स्वच्छ बनाते
दूर दराज़ गाँवों से
आये हमारे गरीब श्रमिक।

कोरोना के लॉकडाउन काल में
संक्रमण के भय से
अनावश्यक बोझ समझ
शहरों ने कर दिया
उन्हें बेदर बेघर।

ये निडर कर्मठ सिपाही
निकल पड़े पैदल
या साईकिल पर
अदम्य जिजीविषा से भरे
भूख से बेहाल अपने परिवारों को बचाने
अपने अपने गाँव देहात नंगे पांव।

सिर पर शहरी कमाई की गठरी
बगल में गर्भवती पत्नी
और छोटे छोटे बच्चे
सैकड़ो मील लंबा सफर
साथ में संक्रमण का डर
मुख से व्याकुल
फटे पैर टूटी चप्पल।

कुछ ने तोड़ा दम
घर की चौखट पर
कुछ गिरे राह में बेदम
कुछ कटे ट्रेनों से
कोई कुचला तेज रफ्तार वाहन से।

शासन सत्ता की नज़र में
अनावश्यक– अवांछित।
तभी उनको गन्तव्य तक पहुँचाने
नहीं चली ट्रेन प्लेन या बस।
क्या विडम्बना है हमारे श्रमिकों की
कि अपने देश में घोषित कर दिये गये प्रवासी।
ये अपने वसुधैव कुटुंबकम देश के श्रमिक।

- डॉ. हेमलता, हिंदी विभाग, रामानुजन कॉलेज

मुश्किल-सी दुनिया

मुश्किल–सी दुनिया में,
करतब सा करते हम,
बाशिंदे न्यारे न्यारे,
झूठ की महफिल में लिपटे पड़े हैं,
सच के उजड़े नजारे ।।

रात की बाहों में,
बसी फिजाओं में,
खून की सूखी नदी है ।
उस पर भी ऊपर से,
चट्टानें पिघली पड़ी हैं ।।

गिद्धों की फौजों ने भी,
आज भगदड़ में मौत ही चुनी है,
प्यास से तिलमिल,
वो सुखी धरा भी,
खून से लथपथ हुई हैं ।।

उजड़ी हुई है ये सर्द रातें,
पथरा गई है मुन्तज़िर ये आँखे,
दहकता यूँ लावा,
उछलने लगा है ।
आसमान भी धूं–धूं,
दहकने लगा हैं ।।

चौराहों पर इंसा आज,
ज़िंदा जला है ।
मुफलिस बेचारा वो,
मारा गया है ।
ज़हन में लगी है,
ये दहक कैसी,
नंगी हुई है,
वहशत ये ऐसी ।।

पसरा पड़ा है अंधड़ ये ऐसा,
घड़यालो के भूखे –गिरोह के जैसा,
ढोल ढम –ढम धड़धड़ाने लगा है।
नशा जीत का सब पे छाने लगा है।।

जख्मी हुआ हैं संसार सारा,
बेगुनाह गया हैं जो बेमौत मारा,
फट सा गया हैं धरती का सीना,
मुश्किल–सी दुनिया में,
मुश्किल हैं जीना ।।

- डॉ. विकासकुमार, सहयक आचार्य,
इतिहास विभाग, रामानुजन कॉलेज

Photograph by Aman Raj, B.A. (Hons.) Political Science, 2nd Year

आधुनिक युग और टेक्नोलॉजी पर बढ़ती निर्भरता और उसकी चुनौतियाँ

आधुनिक युग में टेक्नोलॉजी हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। जागने से लेकर सोने तक, हम विभिन्न तकनीकी उपकरणों से घिरे रहते हैं, जिसने हमारे रहने, काम करने और संचार करने के तरीके को बदल दिया है। हालाँकि इन नवाचारों से निस्संदेह कई लाभ हुए हैं, टेक्नोलॉजी पर हमारी बढ़ती निर्भरता को लेकर चिंता बढ़ रही है। यह लेख कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं के आधार पर हमारे दैनिक जीवन पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव और आधुनिक युग में इसके द्वारा उत्पन्न चुनौतियों की पड़ताल करता है।

•बढ़ती हुई कनेक्टिविटी और संचार

टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन को जिन महत्वपूर्ण तरीकों से बदला है उनमें से एक है बढ़ती हुई कनेक्टिविटी और संचार। इंटरनेट, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म और स्मार्टफ़ोन ने दूरी की परवाह किए बिना दुनिया भर के लोगों से जुड़े रहना संभव बना दिया है।अब हम परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ सहजता से संवाद कर सकते हैं, उन दूरियों को पाट सकते हैं जो कभी समझ से परे थीं। हालाँकि, इस निरंतर कनेक्टिविटी ने निर्भरता को जन्म दिया है। कई व्यक्तियों को हर समय जुड़े रहने की आवश्यकता महसूस होती है।

•सूचनाओं का भण्डार

डिजिटल क्रांति ने हमें सूचना तक अद्वितीय पहुंच प्रदान की है। कुछ ही क्लिक से, हम बड़ी मात्रा में डेटा, शोध और ज्ञान तक पहुंच सकते हैं। इससे निस्संदेह सीखने, सूचित निर्णय लेने और हमारे ज्ञान के विस्तार करने की हमारी क्षमता में सुधार हुआ है। हालाँकि, सूचना के लिए टेक्नोलॉजी पर निर्भरता ने महत्वपूर्ण सोच कौशल और गलत सूचना की संभावना के बारे में भी चिंताएँ बढ़ा दी हैं। ऐसे युग में जहां कोई भी ऑनलाइन सामग्री प्रकाशित कर सकता है, तथ्य को कल्पना से अलग करने के लिए मज़बूत विवेक क्षमता विकसित करना महत्वपूर्ण है।

•कार्यस्थल परिवर्तन

तकनीकी प्रगति ने आधुनिक कार्यस्थल में क्रांति ला दी है, कार्यों को अधिक सहज बना दिया है और दूरस्थ कार्य क्षमताओं को सक्षम कर दिया है।डिजिटल बुनियादी ढांचे ने हमें स्थान की परवाह किए बिना सहकर्मियों के साथ पूर्ण रूप से सहयोग करने में सक्षम बनाया है। हालाँकि, कार्यस्थल में टेक्नोलॉजी पर निर्भरता ने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच की सीमाओं को भी धुंधला कर दिया है। निरंतर उपलब्धता की अपेक्षा और लगातार जुड़े रहने का दबाव थकान और कार्य–जीवन संतुलन को कम कर सकता है।

•मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

टेक्नोलॉजी ने निस्संदेह हमारे जीवन को कई मायनों में बेहतर बनाया है पर हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर इसके संभावित नकारात्मक प्रभाव को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, वीडियो गेम और अन्य डिजिटल सामग्री की लत के कारण स्क्रीन समय में वृद्धि, गतिहीन जीवन शैली और शारीरिक गतिविधि में कमी आ सकती है। इसके अतिरिक्त, सूचनाओं और सूचनाओं का निरंतर प्रवाह तनाव के स्तर और मानसिक थकान को बढ़ा सकता है।

•साइबर सुरक्षा और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ

जैसे–जैसे टेक्नोलॉजी पर हमारी निर्भरता बढ़ती है, वैसे–वैसे साइबर सुरक्षा उल्लंघन और गोपनीयता आक्रमण का जोखिम भी बढ़ता है। व्यक्तिगत डेटा की बढ़ती मात्रा को डिजिटल रूप से एकत्र और संग्रहित करने के साथ, व्यक्तियों और संगठनों को हैकर्स और साइबर अपराधियों से लगातार खतरे का सामना करना पड़ता है। व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा सुनिश्चित करना और गोपनीयता बनाए रखना आधुनिक युग में एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गई है।

निष्कर्ष

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है, जिससे कई फायदे और सुविधाएं मिली हैं। हालाँकि, टेक्नोलॉजी पर हमारी बढ़ती निर्भरता भी चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है जिनका समाधान किया जाना चाहिए। अपने लाभों के लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग करने और इसकी संभावित कमियों के प्रति सचेत रहने के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। डिजिटल साक्षरता का निर्माण, स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखना और मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना आधुनिक युग में आगे बढ़ने और बेहतर भविष्य के लिए टेक्नोलॉजी की शक्ति का उपयोग करने में महत्वपूर्ण है।

महेश सिंह, हिंदी (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष,
रामानुजन महाविद्यालय

Photograph by Armaan Aziz Ansari, B.com Program, 2nd year

वसुधैव कुटुंबकम्

किसी भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र की पहचान और सम्मान केवल असीमित संपत्ति और वैभव पूर्ण जीवन से नहीं होती अपितु उसका गौरव गान व प्रतिष्ठा उसके उदात्त चरित्र एवं लोक हितकारी विचार और व्यवहार से होती है । वर्तमान परिदृश्य में जब विश्व आतंकवाद, आक्रामक बाजारीकरण, युद्ध प्रेरित हिंसा, अशिक्षा,असहिष्णुता,सामाजिक व आर्थिक विषमता, मीडिया की एकपक्षता तथा तकनीक का नकारात्मक उपयोग जैसी विकराल समस्याओं ने मनुष्य और मनुष्य के बीच गहरी खाई पैदा कर दी है ।ऐसे में ज्ञान की भूमिका में भारतीय दर्शन और चिंतन सर्वाधिक उपयोगी एवं अपरिहार्य है। भारतीय चिंतन में ही विश्व कल्याण की संवेदनशीलता, सह अस्तित्व,प्रेम,करुणा,मैत्री एवं त्याग भावना की अद्भुत शक्ति है ।

"उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुंबकम् ।" अर्थात संपूर्ण धरती को एक परिवार के रूप में मानकर सर्वदा उसके कल्याण का विचार और प्रयत्न करना भारतीय चिंतन का मूल मंत्र है। वस्तुतः यही संपूर्ण विश्व के सम्यक और समग्र विकास का सर्वोत्तम पाथेय है। भारत, अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के कारण वसुधैव कुटुंबकम के प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध है। भारत धर्मनिरपेक्षता, समानता और भाईचारे के मानकों को अपनाने के लिए जाना जाता है।

21वीं सदी में, वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांतों का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिकता के युग में विश्व गांव में सिमट गया है और हर देश और समुदाय का अपना महत्व है। भारतीय संस्कृति ने सदियों से इस बात का समर्थन किया है कि हम सभी एक ही परिवार के अंग हैं और हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांत को अपनाने से भारत एक महान राष्ट्र बना है।

इसी के सिद्धांत के आधार पर, हमें अपनी जटिलताओं और असमानताओं को पहचानकर सभी मनुष्यों को समान मानना चाहिए। यह उच्चतम मानवीय मूल्यों, जैसे न्याय, सत्य, अहिंसा और सहयोग को बढ़ावा देता है। भारत विश्वास के बहुलतापूर्ण पर्व, उत्सव और धार्मिक स्थल विभिन्न समुदायों के लोगों को आपस में मिलकर जीने की मिसाल हैं। भारत ने हमेशा विश्व में शांति क़ायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत ने हमेशा हिंसा से प्रभावित देशों के आप्रवासियों को स्वीकार किया है। इन्हीं नीतियों से ही भारत ने 21वीं सदी में भी वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांत को जीवित रखा है। भारत ने अपनी प्राचीन संस्कृति की जड़ों को आज भी मजबूत रखा है यही कारण है कि आज भारत विश्वगुरु के रूप में उभरा है।

समृद्धि अग्रवाल, B.Com (Prog) प्रथम वर्ष

हिंदी भाषा और भविष्य

आजादी के पूर्व हिंदी ने भारतीय नवजागरण की चेतना को मुख्य रूप से वहन किया और आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण की प्रेणना श्रोत भी बनी। साहित्य और ज्ञान के क्षेत्रों में हिंदी में नए और मौलिक काम हुए। कई महत्वाकांक्षा भी रही थी कि देश को अपनी भाषा में आगे बढ़ाना ,इस क्षेत्र में रोजगार सृजन करना आमजन को इस धारा में शामिल करना । मगर आज हिंदी भाषा में भविष्य की बात करे तो ये अर्थशास्त्र के मांग और आपूर्ति नियम के बिलकुल विपरीत हमारे सामने आकर खड़ी हो रही है और उन तमाम प्रतिष्ठित वाक्यों के ऊपर ही सवाल उठा रहा है, हिंदी माथे की बिंदी , हिंदी से है हिंदुस्तान हमारा, और न जाने क्या क्या ,हर देश की पहचान ही उसकी भाषा से होती है। दुख की बात ये है कि रोजगार और भविष्य उस वक्त और श्रोता की तरह है जिसे सुनने तो बहुत लोग आए हुए है लेकिन वक्ता की संख्या मात्र एक तक ही सीमित रह गई है। बहुत दुखद और हताश करने की बात है कि पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में हिंदी भाषा और हमारी संस्कृति अपने ही घर में एक आगंतुक की तरह पहचानी जा रही है । वक्त सिलसिलेवार तरीके से आगे बड़ता जा रहा है और लिपिया आखों से ओझिल हो रहीं है। लेखन के स्वरूप में इतना अंतर आ गया है कि अक्षरों को पहचानना भी दुर्लभ हो गया है । अगर आज की वैश्वीकृत दुनिया में आगे बढ़ना है तो वह अंग्रेजी के रास्ते ही संभव है ।हालांकि ,हिंदी विषय की पढ़ाई दुनिया में नई–नई जगहों में शुरू हो रही है, लेकिन स्वयं अपने देश के शिक्षण संस्थानों में वह सिकुड़ती जा रही है, देखा जाए तो हिंदी माध्यम के स्कूल, कॉलेज या तो उपेक्षा से बंद हो रहे हैं या विवशता में अंग्रेजी माध्यम अपना रहे हैं। नई पीढ़ी को हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को लेकर किसी प्रकार का गर्व या विश्वास नहीं है। वह जैसे भी हो, अंग्रेजी को अपना रही है ताकि आज की प्रगति और विकास की दौड़ में शामिल हो सके और इसका खामियाजा परोक्ष रूप से हमारे सामने है । कहा ही जा रहा है कि हिन्दी धीरे धीरे हिंग्लिश मे हिंदी तब्दील होती जा रही है। सवाल उठता है फिर हिंदी कहाँ है ? मुझे जहाँ तक लगता है, अगर देखा जाए तो हिंदी में सामर्थ्य और संभावना है लेकिन लोगो में इसे अपनाने का उत्साहा ही नही है,जिसके कारण हिंदी हो या भविष्य दोनों अपने ही केंद्र में सीमित हो गए है।

चंद्रप्रकाश, हिंदी (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष,
रामानुजन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय के गौरवशाली १०० वर्ष

रायसीना हिल्स के उत्तर में स्थित एक ज्ञान का मंदिर जिसकी स्थापना केंद्रीय विधान सभा के एक अधिनियम द्वारा 1 मई 1922 को की गई थीं। 3 कॉलेज और लगभग 750 छात्रों से शुरु की गई शिक्षा की मुहिम आज लगभग 91 कॉलेज के लाखों छात्रों को एक साथ शिक्षित करती हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के पहले कुलपति हरी सिंह गौर के दिखाए पथ पर आगे बढ़ते हुए 100 साल पूर्ण हों गए हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय "निष्ठा धृति सत्यम (समर्पण, दृढ़ता और सच्चाई)" के आदर्श वाक्य के साथ विश्व स्तरीय गुणवत्ता शिक्षा के माध्यम से शिक्षण, अनुसंधान, आउटरीच में उत्कृष्टता के लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय को बहुआयामी शिक्षा के माध्यम से छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने और 'वसुधैव कुटुम्बकम' के हमारे सांस्कृतिक आदर्श के साथ स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक समुदायों के साथ निरंतर जुड़ाव के मुख्य मिशन के साथ शुरू किया गया था।

केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने अपनी पुस्तक "दिल्ली विश्वविद्यालय : सेलिब्रेटिंग 100 ग्लोरियस इयर्स" में विश्वविद्यालय के कुछ सबसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों और संकाय– अमिताभ बच्चन, किरेन रिजिजू, दिनेश सिंह, मीनाक्षी गोपीनाथ, शशि थरूर, बिबेक देबरॉय, इम्तियाज अली, रायन करंजावाला के व्यक्तिगत संस्मरणों का एक संग्रह है। इसके अतिरिक्त संजीव सान्याल, धनंजय वाई. चंद्रचूड़, लक्ष्मी पुरी, नमिता गोखले और विजय शेखर ने भी अपने अनुभव साझा किए हैं।

संपादक हरदीप एस. पुरी के साथ, वे विश्वविद्यालय के समृद्ध इतिहास, लोकाचार और जीवंत छात्र जीवन से लेकर भारत और दुनिया भर में समाज और संस्कृति में उल्लेखनीय योगदान के लिए विश्वविद्यालय के अद्वितीय सार का जश्न मनाते हैं।

शताब्दी के दौरान, विश्वविद्यालय ने संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व, खेल गतिविधियों और खिलाड़ियों के सम्मान, और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और आउटरीच का विस्तार, संवर्धन जैसी कई गुना योजनाएं भी चिन्हित की हैं। मीडिया इन्फ्रास्ट्रक्चर और इंटरफेस, पुस्तकों और पुस्तकालय संसाधनों का प्रचार, बुनियादी ढांचे और हरित पहलों का विस्तार, अनुसंधान विकास और अभिनव अभ्यास आदि, जो आने वाले वर्षों में विशेष रूप से विश्वविद्यालय और सामान्य रूप से समाज के लिए एक अविश्वसनीय सकारात्मक प्रभाव डालने जा रहे हैं।

हमारे माननीय कुलपति प्रो योगेश सिंह के हाल के एक विशेष व्याख्यान ने संकेत दिया और निर्दिष्ट किया कि दिल्ली विश्वविद्यालय में सभी क्षमताएं हैं और यह दुनिया के शीर्ष दस विश्वविद्यालयों में जगह बनाने के लिए कड़ी मेहनत करेगा।

मुझे यकीन है कि यह कठिन है, लेकिन अगर हम गुणवत्ता की दिशा में गंभीरता से काम करें तो इसे हासिल किया जा सकता है। हमें (शिक्षक, गैर–शिक्षक , छात्रों, शोधकर्ताओं, प्रशासकों, समुदाय) को समावेशी तरीके से गंभीरता से अपनी अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

ज्ञान के वैश्विक भंडार में जोड़ने के लिए हमें प्रत्येक विषय में अधिक जोरदार तरीके से स्वदेशी अनुसंधान को भी बढ़ावा देना चाहिए। तभी हमारे देश के साथ–साथ दिल्ली विश्वविद्यालय एक नई ऊंचाई पर पहुंच पाएगा।

मृणाल तिवारी, हिंदी (ऑनर्स),
तृतीय वर्ष, रामानुजन महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्मरण

कारवां बनता गया...

... नमस्ते सर! क्या मेरी बात आदरणीय देवेंद्र राज अंकुर सर से हो रही है ?

–जी हो रही है, आप कौन?

सर मेरा नाम शिवांश है..! आपका नंबर रामानुजन कॉलेज में प्रोफेसर डॉक्टर मधु कौशिक मैम ने दिया है और मैं उनका स्टूडेंट हूं।

अच्छा अच्छा.. बताइए ?

सर मैंने इसी साल अपना एम.ए(हिंदी) कम्प्लीट किया है। और आगे मैं हिंदी नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में शोध करना चाहता हूं। इसी सम्बन्ध में आपसे कुछ जानकारी चाहिये थी , मैं आपसे मुलाकात करने कब आ सकता हूँ?

–आप..एक काम कीजिये मंगलवार को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय(Nsd) आ जाइये।

जी ठीक है सर ...नमस्ते !

आप सोच रहें होंगे कि इस बातचीत का यहाँ लिखने का क्या मकसद हो सकता है? या हो सकता है आपको लगे कि कुछ भी अनायास लिख दिया गया है। लेकिन फिर भी सोचिये आपको ऐसे व्यक्ति जो अपने क्षेत्र के लिविंग लेजेंड हैं , जिनकी किताबें आप पिछले कई सालों से पढ़ते आ रहे हैं , तथा जिनके बारे में महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के प्रांगण से लेकर पत्र पत्रिकाओं में सुनते व पढ़ते आ रहे हो ऐसे में जब आपको उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो? और उनसे फ़ोन पे इतनी आसान प्रतिक्रिया मिले तो क्या क्या सवाल मन में आ सकते हैं?

एक तो ये कि सामने वाला व्यक्ति इतना हम्बल व्यक्तित्व कैसे हो सकता है? दूसरा ये भी हो सकता है कि आपने जिनका रिफरेन्स दिया है उनके व्यक्तित्व का लाभ मिल रहा है। क्योंकि जहां आप किसी से मिलने के लिए हफ़्तों चक्कर काटते हैं वहीं इतनी आसानी से मिलने का सौभाग्य मिल जाय तो आज के समाज के परिपेक्ष्य में ये सवाल आने निश्चित हो जाते हैं। मैं अपने उसी अनुभव को इस लेख में प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूँ। इस प्रकार फोन पर बात होने के बाद निर्धारित दिन मिलने में लिए मैं घर से गंतव्य को निकल तो पड़ा था लेकिन मन में कई सवाल– जवाबों से घिरा हुआ था।कुछ सवाल के जवाब तो लगभग पहले से तय थे जैसे कि मुझे क्या क्या पूछना है ? लेकिन कुछ सवालों को लेकर मुझमें थोड़ी सी नर्वसनेस बनी हुई थी। जैसे कि वे मुझसे क्या क्या पूछेंगे या पूछ सकते हैं? और मैं उनका क्या क्या जवाब दे सकता हूँ। मन में यह भी चल रहा था कहीं ऐसा न हो जाय कि वे कुछ ऐसा पूछें जो मैं न बता पाऊं? अथवा कुछ ग़लत बता दूं तो..सब गड़बड़ हो जाएगा। इस बात से थोड़ी सी घबराहट भी हो रही थी।इसी बीच अचानक से फिर ख़याल आया कि मैम अक्सर कहा करती हैं – जब विषय को ढंग से पढ़े हुए हैं तो फिर किसी बात से घबराने की ज़रूरत ही नहीं होनी चाहिए। अब जो होगा देखा जाएगा। इन्ही उहापोहों से होता हुआ मैं एनएसडी पहुंच गया।

गेट पर अपनी अनिवार्य जानकारी और आने का कारण बताने के बाद गार्ड साहब द्वारा बताया गया कि अंकुर सर प्रकाशन पटल में हैं और मैं भी वहीं अंततः पहुंच गया।

परिचय बताने पर पता चला कि उन्हें तो नाम पहले से ही याद है। मैं क्षण भर के लिए सोचने लगा कि इतने बड़े आदमी को हम जैसे पहली बार मिलने वाले विद्यार्थियों के नाम आसानी से याद रह जाते हैं। यह उनकी सादगी और महत्ता ही नहीं उनके बड़े व्यक्तित्व होने का एक और प्रमाण था।

अभिवादन के पश्चात , उन्होंने कई सारे सवाल किए, जैसे– कहाँ से हो? दिल्ली विश्वविद्यालय में कब से हो? और अंत मे एक सवाल कि नाटक में ही क्यों काम करना चाहते हो?

प्रतिउत्तर में जितना भी आता था मैंने अभिव्यक्त किया। इसके बाद फिर रनमंच और नाटकों के संदर्भ में भरतीय तथा पाश्चात्य विचारों को लेकर कई बातें हुई जैसे– दशरूपक , नाटक के तत्व ,कथाओं के प्रकार, अभिनय की शैलियां ,रंगमंच विधान तथा प्राचीन और आधुनिक नाटक और उनमें समानता व भिन्नता।

मेरे लिए इसमें से अधिकतम जानकरी नवीनतम और कुछ जानकारी पूर्वत भी थी। इनमें से कुछ प्रसंगों पर मेरे व्यक्तिगत जिज्ञासाओं का निवारण भी किया।

इसके पश्चात अंकुर सर ने शोध के विषय को लेकर कई नए और अलग अलग आयामों की चर्चा भी की और उसके साथ– साथ उनके सन्दर्भ स्रोत तथा उनसे जुड़े हस्तियों से सम्पर्क करने के मार्ग भी बताये।

और अंत में पुनः मिलने की आग्रह की अनुमति लेकर मैं आश्वस्त होकर एनएसडी से वापस आ गया।

इस अल्प साक्षात्कार के बाद मैंने इस बात को चरितार्थ होते हुए देखा कि– व्यक्ति का चरित्र उसके ज्ञान से ही नहीं अपितु उसके अभिव्यक्ति और व्यवहार से होता है, और उसकी अनुभूति के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है क्योंकि गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है कि –

"'तुलसी' जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय।"

और इस सहाय का आधार रामानुजन कोलेज और प्रेरणास्रोत आदरणीय डॉ. मधु कौशिक मैम हुई।।

– शिवांश मिश्रा
बी.ए. हिंदी (2018–2021)
पूर्व छात्र रामानुजन कॉलेज।।

Photograph by Ehsaas Singh, B.Com Program, 2nd Year

कंप्यूटर में हिंदी की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

डॉ. ओम प्रकाश, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

आज का युग सूचना, संचार व विचार का युग है । सूचना क्रांति के इस दौर में सूचना प्रौद्योगिकी पर हमारी निर्भरता पहले से बहुत ज्यादा हो गयी है । मोबाइल फोन, एटीएम , इंटरनेट बैंकिंग से लेकर रेलवे आरक्षण, ऑनलाइन शॉपिंग, आदि तक सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है । मौजूदा समय में लगभग सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हमें सूचना प्रौद्योगिकी या डिजिटल माध्यम पर निर्भर होना होता है । इस क्षेत्र में नित नये नये प्रयोग और आविष्कारों से व्यवसायिक , वाणिज्यिक , जन संचार, शिक्षा, चिकित्सा, आदि कई क्षेत्र लाभांवित हुये हैं ।

कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह भाषा के क्षेत्र में भी मौन क्राँति का वाहक बन कर आया है । अभी तक भाषा जो केवल मनुष्यों के आवशकताओं को पूरा कर रही थी , उसे सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में मशीन व कंप्यूटर की नित नई भाषायी मांगों को पूरा करना पड़ रहा है ।संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वज़ह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र बहुत विस्तृत है , सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालयीन भाषा का दर्जा प्राप्त है व इसका कार्यक्षेत्र केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, कार्यालयों , निगमों , विभागों व उपक्रमों आदि तक फैला हुआ है ।राजभाषा के क्षेत्र में सरलीकरण और कंप्यूटर के क्षेत्र में हो रहे नित नये प्रयोग ने राजभाषा हिंदी में कार्य करना सुगम बनाया है । हिंदी में कंप्यूटर स्थानीयकरण का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ जो कि अब आंदोलन की शक्ल ले चुका है । हिंदी सॉफ्टवेयर लोकलाइजेशन का कार्य सर्वप्रथम सी– डैक द्वारा 90 के दशक में किया गया था । वर्तमान में हिंदी भाषा के लिये कई संगठन कार्य करते है , जिसमें सी दृडैक, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग केंद्रीय हिंदी संस्थान और अनेकों गैर सरकारी संगठन जैसे सराय, इंडलिक्स, आदि प्रमुख हैं। आज डिजीटल इंडिया के दौर में अधिकतर भुगतान संबंधी एप जैसे भीम एप, पेटीएम इत्यादि हिंदी सहित कई क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं । कई बैंक हिंदी भाषा में इंटरनेट बैंकिंग व मोबाइल बैंकिंग सुविधा प्रदान कर रहे हैं ।

यूनिकोड के प्रयोग ने हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।हिंदी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब हर कंप्यूटर , लैपटॉप यहाँ तक की स्मार्ट फोन पर भी हिंदी में काम करना व करवाना कोई बड़ा मुद्दा नहीं रह गया है ।यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक कोड है जिसमें हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 200 भाषाओं के लिये कोड निर्धारित किये गये हैं । चूँकि कंप्यूटर मूल रूप से किसी भाषा से नहीं बल्कि अंकों से संबंध रखता है इसलिये हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक रूप प्रदान कर सकते हैं ।साथ ही इसी आधार पर उनके लिए फॉण्ट भी निर्मित किये जा सकते हैं , जैसे अंग्रेज़ी भाषा अथवा रोमन लिपि के लिए एरियल फॉण्ट की एनकोडिंग की गयी है , उसी तरह हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए निर्मित आधुनिक यूनिकोड फॉण्ट्स की भी एंकोडिंग की गयी है जिसे अंतराष्ट्रीय स्तर पर एप्पल, आइबीएम, माइक्रोसॉफ्ट , सैप , साइबेस , यूनिसिस जैसी सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की प्रमुख कंपनियों ने अपनाया है ।मानकीकरण का यह कार्य अमेरिका स्थित यूनिकोड कंसोर्शियम द्वारा किया जा रहा है ।भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भी इस कंसोर्शियम के जरिये हिंदी के यूनिकोड फॉण्ट जैसे मंगल , कोकिला, एरियल यूनिकोड एमएस , आदि की एनकोडिंग कराई है जिसकी वजह से आधुनिक कंप्यूटरों में यह फॉण्ट पहले से ही विद्यमान होते हैं ।यूनिकोड 16 बिट की एक एनकोडिंग व्यवस्था है जो कि पालि और प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाओं से भी परिचित है।

इसकी विशेषता यह है कि एक कम्प्यूटर पर के पाठ को दुनिया के किसी भी अन्य यूनिकोड आधारित कम्प्यूटर पर खोला व पढ़ा जा सकता है। इसके लिए अलग से उस भाषा के फोंट का प्रयोग करने की अनिवार्यता नहीं होती; क्योंकि यूनिकोड केनद्रित हर फोंट में सिद्धांततः विश्व की हर भाषा के अक्षर मौजूद होते हैं। यूनिकोड आधारित कम्प्यूटरों में प्रत्येक कार्य भारत की किसी भी भाषा में किया जा सकता है, बशर्ते कि 'ऑपरेटिंग सिस्टम' पर इन्स्टॉल सॉफ्टवेयर यूनिकोड व्यवस्था आधारित हो।

मौजूदा समय में हिंदी 'ग्लोबल हिंदी" में परिवर्तित हो गयी है , आज तकनीकी विकास के युग में दूसरे देशों के लोग भी, भले की विपणन के लिए ही सही , हिंदी भाषा सीख रहे हैं । आज स्थिति यह है कि भारत व चीन के व्यवसायिक संबंधों को बढ़ाने की संभावनाओं के तलाश के लिए लगभग दस हज़ार लोग पेइचिंग में हिंदी सीख रहे हैं साथ ही कई विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है ।आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आरंभ हुआ और इसी तरह एंकोडिंग व डिकोडिंग के माध्यम से विश्व की विभिन्न भाषाएँ भी कंप्यूटर पर सुलभ होने लगी, इस तकनीकी विकास ने भारतीय भाषाओं को जोड़ा है , कंप्यूटर के माध्यम से विभिन्न सॉफ्टवेयरों,सी–डैक संस्था के हिंदी सीखने सीखाने के विभिन्न कंप्यूटरीकृत कार्यक्रमों जैसे– प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के लिये लीला वाचिक तकनीक के प्रयोग ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को विभिन्न भाषा माध्यमों से बिलकुल आसान बना

दिया जिससे भाषायी निकटता का उदय हुआ, जिसके वजह से भाषायी एकता आना स्वाभाविक था।

अंग्रेज़ी के साथ–साथ आज हिंदी भाषा का भी नेटवर्क़ पूरे विश्व मे फैलता जा रहा है। जागरण, वेब दुनिया, नवभारत टाइमस, विकिपिडिया हिंदी, भारत कोष, कविता कोष, गद्य कोष, हिंदी नेक्स्ट डॉट कॉम, हिंदी समय डॉट कॉम ,भाषा इंडिया डॉट कॉम आदि इंटरनेट साइटों पर हिंदी सामग्री देखी जा सकती है। आज विज्ञापन से संबंधित एसएमएस से लेकर खाता–शेष संबंधी एसएमएस तक हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्राप्त किया जा सकता है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के तहत कार्यरत सी–डैक (पुणे) बाईस भाषाओं में अपनी विभिन्न तकनीकी आयामों से वेबसाइटों, सॉफ्टवेयरों, रिपोर्टों, महाराष्ट्र सरकार की मराठी भाषा में तथा असम सरकार कीअसमिया भाषा में वेबसाइट निर्माणों, रिज़र्व बैंक के राजभाषा रिपोर्ट जेनेरेशन सॉफ्टवेयर(आरआरजीएस) निर्माण आदि के कार्य कर भाषायी एकता के क्रम में योगदान कर रहा है।

आज माइक्रोसॉफ्ट तथा एप्पल ओएस वाले सिस्टम में पहले से ही यूनिकोड मंगल सहित कई देवनागरी यूनिकोड फॉट उपलब्ध है ।हिंदी के बड़े बाजार के नब्ज़ को देखते हुये माइक्रोसॉफ्ट ने अपने सॉफ्टवेयर उत्पादों से संबंधित सहायक साहित्य तथा मार्गदर्शक सूत्रों को विशेषज्ञों की सहायता से हिंदी में उपलब्ध कराने के प्रयत्न शुरू किया गया है। बहुप्रचलित विंडोज़ विस्टा व विडोंज 7 जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एमएस वर्ड, पावर प्वाइंट, एक्सेल, नोटपैड, इंटरनेट एक्सप्लोरर, जैसे प्रमुख सॉफ्टवेयर उत्पाद अब हिंदी में कार्य करने की सुविधा प्रदान करते हैं। माइक्रोसॉफ्ट का लैंग्वेंज इंटरफेस पैकेज स्थानीयकरण का बेहतर उदाहरण है ।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर राजभाषा हिंदी में कार्य करने को आसान बनाने के उद्देश्य से हिंदी में कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराये हैं, जिसमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं–

1. सर्वप्रथम हम लीला सॉफ्टवेयर की बात करेंगें – LILA अर्थात Learn Indian Languages with Artificial Intelligence, एक स्वंय शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। यह राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किया गया एक निशुल्क सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा प्रबोध , प्रवीण व प्राज्ञ स्तर के हिंदी के पाठयक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं जैसे कन्नड़, मलयालम, तमिल , तेलगु, बांग्ला आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है।

2. मंत्र अर्थात Machine Assisted Translation Tool सीडैक द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है। यह राजभाषा विभाग द्वारा विकसित एक मशीनी साधित अनुवाद है जो राजभाषा के प्रशासनिक , वित्तीय , कृषि , लघु उद्योग, सूचना प्रद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते हैं। मंत्र राजभाषा इंटरनेट संसकरण के डिजाइन व विकास थिन क्लाइंट आर्किटेक्चर पर आधारित है, इसमें संपूर्ण अनुवाद प्रक्रिया सर्वर पर होती है, इसलिये दूरवर्ती स्थानों में भी इंटरनेट उपलब्ध लो एंड सिस्टम पर भी दस्तावेज़ों का अनुवद करने की इस सुविधा का उपयोग किया जा सकता है।

3. श्रुतलेखन एक सतत स्पीकर इंडीपेंडेंट हिंदी स्पीच रिकगनिशन सिस्टम है, जिसका विकास सीडैक, पुणे के एलाइड ए.आइ ग्रुप ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया गया है यह स्पीच टू टेक्सट टूल है, इस विधि में प्रयोक्ता माइक्रोफोन में बोलता है तथा कंप्यूटर मेंमौजूद स्पीच टू टेक्स्ट प्रोग्राम उसे प्रोसेस कर पाठ / टेक्स्ट में बदल कर लिखता है ।

4. वाचांतर ध्वनि से पाठ में अनुवाद प्रणाली है जिसमें दो प्रौद्योगिकों का समावेश है। यह उपकरण अंग्रेज़ी स्पीच से हिंदी अथ अनुवाद हेतु उपलब्ध कराया जाता है।

5. सीडैक पुणे के तकनीकी सहयोग से ई–महाश्ब्दकोश का निर्माण किया गया जो की राजभाषा की साइट पर निशुल्क उपलब्ध है। यह एक द्विभाषी दृद्विआयामी उच्चारण शब्दकोश हैं जिसके द्वारा हिंदी या अंग्रेज़ी अक्षरों द्वारा शब्द की सीधी खोज किया जा सकता है।

6. गूगल वाइस टाइपिंग वर्तमान समय में एक हिंदी में टाइप करने हेतु एक सुविधाजनक टूल के रूप में उभर के सामने आया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी आवाज में किसी भी हिंदी दस्तावेज़ को बिना की–बोर्ड की मदद के महज़ पढ़ कर टाइप कर सकता है। कोई भी व्यक्ति जिसके पास जी–मेल अकाउंट है, वह इस सुविधा का लाभ उठा सकता है।

अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। तकनीकी के उत्तरोत्तर विकास द्वारा मशीनी अनुवाद टूल बनाना संभव हो सका। आज विश्व के कई देशों के पास अत्यंत ही सक्षम अनुवाद टूल हैं। इनकी सहायता से वैश्विक मंचों पर विभिन्न देशों का आपसी मिलन आसानी से संभव हुआ है। भारत में भी अनुवाद टूल बनाने की दिशा में कई सॉफ्टवेयर बनाए गए हैं जिनमें सी–डैक, आईआईटी कानपुर, आईआईटी मुंबई जैसी संस्थाओं की अहम भूमिका है।वर्तमान समय में भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौधोगिकी मंत्रालय के प्रावधान के अंतर्गत Machine Assisted Translation Tool मौजूद है। साथ ही गूगल ट्रांसलेट ने पिछले साल नवंबर में न्यूरल ट्रांसलेशन पेश किया था। उस समय यह सिर्फ 8 विदेशी भाषाओं के लिये उपलब्ध था मगर अब गूगल ने बेहतर ट्रांसलेशन करने वाले इस सिस्टम को हिंदी, रूसी और वियतनामी भाषाओं के लिये जारी किया है । न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन में एक– एक शब्द का ट्रांसलेशन करने के बजाय पूरे वाक्य को समझ कर ट्राँस्लेशन किया जाता है । इससे पहले किये जाने वाले ट्रांसलेशन में बहुत बुनियादी वाक्य ही ट्रांसलेट हो पाते थे और कई बार उनका अर्थ भी बदल जाता था । मगर न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन में इस प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। गूगल टूलकिट द्वारा गूगल में अकाउंट बनाकर अनुवाद करने पर, मेमोरी में ले लेता है, जिससे भविष्य में उसी तरह का similar text आने पर सही अनुवाद करता है ।

ई–पुस्तक, राजभाषा विभाग की साइट पर उपलब्ध है ।भाषायी

परस्पर आदान प्रदान के क्रम में भी तकनीकी विकास हुआ है। जहाँ एक ओर गूगल ट्राँसलेट के माध्यम से विभिन्न भाषाओं का अनुवाद किया जा सकता है वहीं हमारे पास लिपियों को बदलने का सॉफ्ट्वेयर गिरगिट भी उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद करने हेतु अनुसारक नाम का सॉफ्टवेयर मौजूद है। हिंदी ऑप्टिकल कैरेक्टर के माध्यम से हिडी ओसीआर इंपुट करके ओसीआर आउटपुट में 15–16 वर्ष के पहले की सामाग्री को भी परिवर्तित किया जा सकता है। सीडैक के श्रुतलेखन सॉफ्टवेयर से भाषण/स्पीच से पाठ रूप में पहुँचा जा सकता है।

गूगल के टूलों में वाचक, प्रवाचक, गूगल टेक्स्ट टू स्पीच के जरिये पाठ से भाषन की सुविधा उपलब्ध है व गूगल के वायस टाइपिंग के जरिये स्पीच को टेक्स्ट में बदलने की सुविधा उपलब्ध है।

इसके अलावा हिंदी में शब्द संसाधन के लिये विशेष रूप से तैयार माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज़ इनपुट टूल भारतीय भाषाओं हेतु एक सरल टाइपिंग टूल है। वास्तव में यह एक वर्चुअल की बोर्ड है जो कि बिना कॉपी–पेस्ट के झंझट के विंडोज में किसी भी एपलीकेशन में सीधे हिंदी में लिखने की सुविधा प्रदान करता है। यह सेवा दिसंबर 2009 में प्रारंभ हो गयी थी। यह टूल शब्दकोश आधारित ध्वन्यात्मक लिप्यांतरण विधि का प्रयोग करता है अर्थात हमारे द्वारा जो रोमन में टाइप किया जाता है, यह उसे अपने शब्दकोश से मिलाकर लिप्यांतरित करता है तथा मिलते–जुलते शब्दों का सुझाव करता है। इस कारण से प्रयोक्ता को लिपयंतरण स्कीम को याद नहीं रखना पड़ता है जिससे पहली बार एवंशुरुआती हिंदी टाइप करने वालों के लिये काफी सुविधाजनक रहता है।

आधुनिक युग कंप्यूटर का युग है जिसने मनुष्य की कागज पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है। कंप्यूटर के आगमन, प्रसार तथा इसपर हमारी बढ़ती निर्भरता ने कुछ समय तक के लिए भारत जैसी तीसरी दुनिया के देश के लिए स्थानीय भाषाओं के ह्रास का संकट पैदा कर दिया था परंतु नित–नए तरीके से विकसित होते इस यंत्र ने ऐसी बाधाओं को पार कर लिया है और अब यह सभी भारतीय भाषाओं के प्रसार के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम उपलब्ध करा रहा है। कंप्यूटर ने टाइपिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले टाइपराइटर को चलन से बाहर किया परंतु शुरुआत में यह स्थानीय भाषाओं के लिए सहज नहीं था। इस समस्या का समाधान यूनिकोड के आगमन से हुआ जिसने हिन्दी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी कंप्यूटर पर काम करने के लिए आसान प्लेटफॉर्म निर्मित किया। इसके माध्यम से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ब्लॉग लिखे जाने लगे, जो कि अब तक केवल कंप्यूटर के आविष्कारक देशों की भाषाओं में लिखे जा रहे थे। आज हिंदी में अनेकों ब्लॉग लिखे और पढे जा रहे हैं, इतना ही नहीं समाचार पत्रों ने भी अब नियमित रूप से ब्लॉग छापने शुरू कर दिए हैं। यूनिकोड ने स्थानीय भाषाओं में टाइपिंग को आसान बनाकर इन्हें सोशल नेटवर्किंग साइट जैसे–ट्विटर, फेसबुक पर भी स्थापित कर दिया है।

निजी सैटेलाइट टीवी चैनलों के प्रसार ने भाषाई एकता को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके फ्री टु एयर से डिश कनेकशन और उसके बाद डाइरेक्ट टु होम तक के तकनीकी विकास ने जनता को उनकी भाषा में मनोरंजन व ज्ञान की पहुंच सुनिश्चित की है। यही बात रेडियो के निजी एफ़एम चैनलों के प्रसार एवं संचालन के साथ भी लागू होती है। आज भारत में 800 से ज्यादा टीवी चैनल और 250 तक एफ़एम चैनल उपलब्ध हैं। साथ ही ई समाचार–पत्रों के चलन ने पत्रकारिता को एक नया स्वरूप दिया है। आज अपनी मातृभाषा में समाचार–पत्र पढ़ने के लिए उस क्षेत्र विशेष में अनिवार्यतः उपस्थित रहना आवश्यक नहीं रहा। लगभग सभी प्रमुख समाचार–पत्रों के ई संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इनके अलावा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ई–बुक्स, ई–मैगजीन, ई–कॉमिक्स आदि का प्रसार भी काफी तेज गति से हो रहा है।

समेकित रूप से यह कहा जा सकता है कि आज हम तकनीकी युक्त वस्तुओं से चारों ओर से घिरे हुए हैं। तकनीकी विकास ने हमारी जीवन–शैली और समाज के ढांचे को भी प्रभावित किया है और भाषा भी इससे अछूती नहीं है। शुरुआत में हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों व विकास के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा परंतु भाषा के मानकीकरण व यूनिकोड के प्रादुर्भाव ने सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में ना सिर्फ एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित किया बल्कि हिंदी भाषा के विकास हेतु नई राहें खोल दी। सरकार द्वारा वित्तीय समावेशन पर जोर देने के कारण हिंदी भाषा व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का कार्यक्षेत्र भी विस्तृत हुआ क्योंकि वित्तीय समावेशन का मूल लक्ष्य है बैंकिंग सेवाओं को जनमानस तक पहुँचाना जिसमें सबसे अहम भूमिका भाषा ने निभायी। आज पासबुक में प्रविष्टियों से लेकर खाता में हो रहे लेन– देन की सूचना या एसएमएस ग्राहकों को हिंदी में उपलब्ध कराये जा रहे हैं। साथ ही यह मौजूदा समय में बैंकिंग को सर्वसाधारण तक पहुँचाने की आवश्यकता का ही असर है कि विमुद्रीकरण के इस दौर भुगतान संबंधी कई एप्प हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध है। आज सूचना प्रौद्योगिकी की इस युग में हिंदी का महत्व पहले से अधिक हो गया है और यह महज राजकाज की संवैधानिक बाध्यता से निकलकर व्यवसायिक भाषा के रूप में उभर कर सामने आयी है।

बुद्धिजीवियों से सावधान

डॉ. अजय कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
रामानुजन महाविद्यालय

ऐसा माना जाता है कि बौद्धिकता के आधार पर ही सत्य का निरुपण हो सकता है, इसलिए चिंतन को बुद्धि से समर्पित होना आवश्यक है। लगभग तार्किकता एवं प्रमाणिकता ही सत्य की कसौटी है। किन्तु बौद्धिकता की कसौटी को किसी न किसी रूप में आरंभिक काल से ही चुनौति दी जाती रही है। ऐसे भी विचारक रहे हैं, जिन्होने बुद्धि की अपेक्षा क्रिया पर अधिक ज़ोर दिया है। उनके अनुसार तार्किकता और प्रमाणिकता के कारण हम क्रिया की अवहेलना नहीं कर सकते बल्कि क्रिया के लिए एक तर्क या बुद्धि की अवहेलना कर सकते हैं। हम पहले कर्ता है बाद में चिंतक । आधुनिक काल में बुद्धि एवं क्रिया के संघर्ष को लेकर बहुत अधिक चिंतन हुआ है। मनुष्य बुद्धिवाद के नाम पर कर्म को छोड़ नही सकता। वह क्रिया को ही प्रश्रय देगा, भले ही उसके लिए उसे बुद्धि की अवहेलना ही क्यों न करनी पड़े। उदाहरण के तौर पर जब हमारे सामने कई विकल्प उपस्थित हो जाते हैं और बुद्धि के द्वारा हम किसी एक विकल्प के पक्ष में निर्णय नहीं कर सकते, तब अपनी रागात्मक प्रकृति के अनुसार विकल्प के पक्ष में अपना निर्णय दे देना बिल्कुल ठीक है, क्योंकि ऐसी परिस्थिति में यह मान लेना कि निर्णय मत करो और प्रश्न को निरुत्तर रहने दो' एक रोगप्रेरित निर्णय ही है। इसलिए जो लोग बुद्धि (त्मेंवद) और क्रियावाद(च्तंहउंजपेउ) दोनो का प्रयोग बखूबी करना जानते हैं उन्हें सर्वत्र बुद्धिजीवी कहा जाता है या बुद्धिजीवी मान लिया जाता है। क्योंकि वे अपनी बुद्धि के साथ ही जीते हैं अर्थात क्रिया करते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रत्येक देश में बुद्धिजीवी वर्ग सर्वाधिक प्रभावशाली वर्ग रहा है, वह भले ही शासक वर्ग न रहा हो। बुद्धिजीवी वह है, जो दूरदर्शी होता है, सलाह दे सकता है और नेतृत्व प्रदान कर सकता है। किसी भी देश की अधिकांश जनता विचारशील और क्रियाशील जीवन व्यतीत नहीं करती। ऐसे लोग प्रायः बुद्धिजीवी वर्ग का अनुकरण और अनुगमन करते हैं। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि किसी देश का या किसी संस्थान का संपूर्ण भविष्य उसके बुद्धिजीवी वर्ग पर निर्भर होता है। यदि बुद्धिजीवी वर्ग ईमानदार, स्वतंत्र और निष्पक्ष है तो उस पर यह भरोसा किया जा सकता है कि संकट की घड़ी में वह पहल करेगा और उचित नेतृत्व प्रदान करेगा। यह ठीक है कि प्रज्ञा (Awareness) अपने आप में कोई गुण नहीं है। यह केवल साधन है और साधन का प्रयोग उस लक्ष्य पर निर्भर है, जिसे एक बुद्धिमान व्यक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। बुद्धिमान व्यक्ति भला हो सकता है, लेकिन साथ ही साथ वह दुष्ट भी हो सकता है। उसी प्रकार बुद्धिजीवी वर्ग भी उच्च विचारों वाले व्यक्तियों का एक दल हो सकता है, जो सहायता करने के लिए तैयार रहता है और पथभ्रष्ट लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए तैयार रहता है। लेकिन बुद्धिजीवी वर्ग धोखेबाज़ों का एक गिरोह या संकीर्ण गुट के पैरोकारों का एक निकाय भी हो सकता है। जहां से उसे सहायता मिलती है। यही बुद्धिजीवी समय समय पर किसी एक विशेष वर्ग के हितों के संरक्षण के लिए लोगो को एक मिथ्याजनक सत्य से रुबरु करा सकते है। देश के हितों के बजाय वे सिर्फ व्यक्तिगत हितों एवं आकांक्षाओं की साझेदारी करने वाला हो सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन्ही बुद्धिजीवियों ने न जाने कितने मिथ्याजनक सत्य रचे है जिसके कारण कालांतर में भी लोगो के बीच संघर्ष बना रहा है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि "जब तक बेवकूफ ज़िंदा रहेंगे, तब तक बुद्धिजीवी शान से ज़िंदा रहेंगे और शासन करेंगे।" याद रहे कि इतिहास कभी किसी के साथ छल नही करता इतिहास को लिखने व रचने वाले छल कर सकते हैं।जीवन शक्ति मूलतः सर्जनात्मक एवं रचनात्मक है। यह समष्टि का पोषक है। इसलिए वह सामाजिकता का संरक्षण करती है। अतः जहां सहज प्रवृति की प्रधानता है। वहां सामाजिक व्यवहार ही पाए जाते हैं। बुद्धिरहित जंतुओं में सहज प्रवृति की प्रधानता है, अतः वहाँ प्रायः सामाजिकि व्यवहार ही दृष्टिगोचर होते हैं। किन्तु – जब जीवन–शक्ति से बुद्धि का विकास होता है, तब सामाजिक व्यवहार में खलल पहुंचता है। बुद्धि से अहंभावना (ego sense) उत्पन्न होती है। चूंकि

मनुष्यों में बुद्धि है, इसलिए वे स्वार्थी हो जाते हैं और समाज हित में कार्य नहीं करके वे व्यक्तिगत हित में कार्य करते हैं। या ऐसा दर्शन हो कि वे सामाजिक हित में कार्य कर रहे हैं लेकिन वास्तव में वे अपने व्यक्तिगत हित को साध रहे होते हैं। इससे सामाजिकता को बड़ी ठेस पहुंचती है किन्तु यदि बुद्धि खण्डन कर सकती है तो वह मण्डन भी कर सकती है। और वह अपनी दुष्कृतियों का परिशोधन भी कर सकती है। वह देखती है कि व्यक्तिगत हित की रक्षा अन्ततोगत्वा समाज के कायम रहने से ही सम्भव हो सकती है। इसलिए वह समाज की रक्षा के लिए नैतिकता को जन्म देती है और तब सामाजिक नियमों का निर्माण होता है और उन्हें नैतिक आंबंध (Moral obligation) के रूप में स्वीकार किया जाता है।

लेकिन जब यह सामाजिक नीति (social morality) समाज विशेष में ही सीमित रह जाती है तब इसे एक 'बंद नीति (closed morality) कहते हैं। जबकि सही अर्थ में नैतिकता सार्वभौम (universal) होती है। उसका उचित क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व समाज ही हो सकता है। ऐसी नैतिक खुली नीति (open morality) या 'सार्वभौम नीति' (universal morality) कही जाती है। प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम ही इसका मूलमंत्र है तथा प्रत्येक का प्रत्येक के प्रति कर्तव्य ही इसकी निष्ठा है। ऐसी सार्वभौम नीति का स्रोत अंतःप्रज्ञा ही हो सकती है। लेकिन बुद्धि इसे युक्तियुक्त बना सकती है। साधारणतः बुद्धि तर्क देकर मनुष्यों में भातृत्व या बंधुत्व सिद्ध करती है और इस तरह सार्वभौम नीति को सम्पुष्ट करती है, लेकिन बुद्धि इसके विपरीत भी कार्य कर सकती है। इसलिए बुद्धिजीवियों में जब तक यह सार्वभौम नीति उत्पन्न नही होती जब तक वे खुली नीति को प्रश्रय नहीं देते तब तक जैसे भीड़ भरे वाहन में 'जेबकतरों से सावधान' रहना होता है उसी प्रकार इन 'बुद्धिजीवियों से भी सावधान रहना होगा। क्योंकि जो लोग दूसरों की बुद्धि से चालित होते हैं वे हमेशा अपने ही दुष्प्रयोग में शामिल होते हो इसलिए स्वचालित बुद्धि ही स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्णय ले सकती है और एक सार्वभौमिक नैतिकता को जन्म दे सकती है। लेकिन उसके लिए आपको क्रिया करनी होगी पुरातन विचारों का चिंतन एवं विश्लेषण करना होगा नए विचारों से अवगत रहना पड़ेगा लेकिन अगर आपने ऐसा कर लिया तो शेष लोग आपको भी बुद्धिजीवी कहेंगे और शायद वे आपसे भी सावधान रहेंगे। हो सकता है इस लेख को पढ़कर आपके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ जाए, याद रहे वही मुस्कान एक सार्वभौम नैतिकता की घोतक होगी भले ही शेष लोग आपको देखकर आपकी कमतर बुद्धि का अंदाजा लगा रहे होंगे।

Illustration by Sourabh Barala, B.Sc.(H) Computer Science, Third Year

संस्मरण

....बस याद करूँ

प्रो. मधु कौशिक, हिंदी विभाग, रामानुजन महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

'बेटा जी' शब्द मेरे लिए मात्र शब्द नहीं है और न ही केवल सम्बोधन। ये उस रिश्ते का नाम है जिसे मैंने सन 1989 में दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी महाविद्यालय में पाया । यह संबंध आत्मा से जुड़ा है जिसने मेरे 'स्व' को अर्थ दिया है। ये रिश्ता केवल गुरु और शिष्य तक सीमित नहीं है। आमतौर पर यह संबंध आध्यात्मिकता से सींचा जाता है। मेरे लिए ये संबंध भौतिकता और आध्यात्मिकता के समन्वय की कहानी है जिसे मैं आज याद भी कर रही हूँ और एक बहाने से सुना भी रही हूँ। यह कहानी शुरू होती है मेरे कॉलेज के प्रांगण से जहां मेरा साक्षात्कार एक प्राध्यापिका एक रूप में माँ स्वरूपा डॉ. शकुंतला कालरा से होता है । उनकी कक्षा में पढ़ना मेरे लिए सौभाग्य ही रहा। वो कक्षा में आतीं, पढ़ाती और चली जाती। धीरे–धीरे उनकी आवाज़ कानों में मिस्री की भांति घुलने लगी। उनके पढ़ाए ने दिल की राह कब पकड़ ली पता नहीं चला। अब उनका पढ़ाया ही नहीं उनका बाह्य स्वरूप भी आकर्षक लगने लगा। कभी भारतीय संस्कृति की परिचायक साड़ी तो कभी सूट । मुझे याद है एक दिन फ़िरोजी रंग का सूट पहने वो कक्षा में आईं तो उनके माथे की बिंदी पर जाकर मन ठिठक गया। लगता था जैसे बाल रवि माथे पर चमचमा रहा हो। उसकी लालिमा में ज्ञान और ऊर्जा का स्रोत मुझे दिखाई देने लगा। फिर क्या था एक ऐसा संबंध बना जिसे भुला पाना संभव नहीं। स्मृतियों की डोरी में गूँथा ये संबंध मेरा संचित कोश है।

'मीरा की पदावली' जब मैम ने पढ़ाई तो 'भक्ति' की शक्ति को पहचाना। प्रेम क्या है? प्रेम की अभिव्यक्ति कैसे होती है? प्रेम का दीवानापन और स्वयं को प्रेम में डुबो देने का मतवालापन सब जैसे जीवंत हो उठा। हम विद्यार्थी मीरा की भक्ति में सराबोर हो गए। जब मैम ने तुलसी की 'रामचरितमानस' पढ़ाई तो लोकचेतना, दर्शन, समन्वय भावना, भाषा, भाव सबकुछ एक साथ हम विद्यार्थियों के भीतर प्रवाहित होने लगे। 'बैदेही' के मायने और सीता के चरित्र को जिस प्रकार हमारे सामने रखा गया तो स्त्री होने पर गर्व हुआ। 'तृण धरि ओट कहत बैदेही' ने तो जैसे तिनके के भीतर की शक्ति को हमारे हाथों में भर दिया हो। सुबह की कक्षा के बाद कभी–कभी लंबा अंतराल आता परंतु मैम इस तरह पढ़ाती थी कि शाम 4 बजे तक की कक्षा का हम विद्यार्थी इंतजार करते। कक्षा के बाद लगता जैसे कुछ लेकर घर जा रहे हैं।

मेरे स्मृतिकोष में आज भी वो दिन साकार है जब मैंने विकल्प के प्रश्नपत्र में 'तुलसीदास' का चयन किया था। तुलसी को समझना जितना सरल है उतना ही क्लिष्ट भी। यह तुलसी साहित्य का समन्वय ही है जो शायद मेरे भीतर तक रम गया था। तभी कक्षा में एक एक दिन मैम ने अपने तुलसी पर संकलित संचित कोश को एक पुस्तिका के रूप में हमारे सम्मुख रख दिया। बिना ये सोचे कि उनकी वर्षों की मेहनत इसमें संचित है। एक चुनौती भी रखी कि यह पुस्तिका केवल एक दिन के लिए ही आपके साथ साझा कर सकती हूँ। कल इसे लौटाना होगा। सारी संचित निधि को एक रात में अपने पास लिख कर रखने की चुनौती बड़ी थी। फिर भी मैंने इसे दृढ़ता के साथ स्वीकार किया। शाम को घर पहुँचने के बाद रात आठ बजे मैंने लिखना प्रारम्भ किया तो सुबह के आठ कब बज गए, ज्ञात ही नहीं हुआ । कॉलेज जाते समय मन प्रसन्न था कि मैं मैम की बात को रखने में सफल रही थी । ये मैम का आशीर्वाद कहूँ या उनकी अनुकंपा, उन्होंने मुझे आत्मविश्वास से भर दिया था। शायद वो हमारी परीक्षा ले रही थीं। कुछ बातें शायद उन्हें आज याद भी न हो पर उनकी शिष्या होने के कारण एक–एक पल को मैंने सँजोकर रखा है।

मुझे आज भी वो दिन पूरी तरह से याद है जब हम 'तुलसीदास' के वैकल्पिक प्रश्नपत्र की परीक्षा दे रहे थे। तुलसी को मैम ने बहुत अच्छे से पढ़ाया था। परीक्षा से एक दिन पहले बहुत तेज वर्षा हो रही थी और मैं चौपाई गा – गाकर याद कर रही थी। तुलसी जब रत्नावली से मिलने गए थे तब ऐसी ही वर्षा हुई होगी यकायक मन में उभर आया। उस दिन भी बादल ज़ोर से गरज रहे थे। वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। लेकिन मैम के पढ़ाए से एक रागात्मक संबंध जुड़ गया था। सुबह ने दस्तक दी तो वर्षा

भी थम गयी और हम परीक्षा कक्ष में थे। प्रश्नपत्र पढ़कर तो लगा जैसे सब घुला – मिला है। दर्शन में समन्वय भावना को मिला दिया था। सगुण और निर्गुण की दोनों धाराएँ एक होकर प्रश्नपत्र में विराजमान थीं। परीक्षा दे तो दी थी। मैम के पढ़ाए और अपने पर विश्वास भी था। किन्तुजब अपनी सहपाठियों के मुखमंडल देखे तो मुरझाए थे। ये स्नातक के तृतीय वर्ष की अंतिम परीक्षा थी। जैसे – तैसे परीक्षा परिणाम आया तो मेरी नैया तुलसी बाबा ने पार लगाकर मुझे प्रथम कक्षा में ही नहीं अपितु दक्षिण परिसर में भी प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। मैम तो इतनी खुश हुईं कि पूछो मत। मेरे 77/100 अंक आए थे। मेरे अंक देखते ही मैम ने कहा – "बेटा जी मेरे 76/100 अंक आए थे और तुम एक अंक ज्यादा लाई हो मुझसे।" आज पता चला था कि अपने से आगे देखकरकेवल और केवल एक गुरु और माँ ही प्रसन्न हो सकते हैं। मैम के रूप में मैंने दोनों को ही पाया है।

स्नातक उत्तीर्ण करने के बाद कुछ सालों तक मैम से संपर्क नहीं रहा। विवाह और परिवार में वक्त पंख लगाकर उड़ रहा था। तभी विवाह पश्चात एम॰फिल॰ करते समय मैम से दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में अचानक भेंट हुई। मैम और मैं एक – दूसरे को देख अति प्रसन्न थे। मैम ने हमारी एक संस्कृत की प्राध्यापिका से मेरा परिचय करवाया। परिचय करवाते समय वही ममत्व, बाल – सुलभ मन, मीठी – सी मुस्कान थी जिसे देख मैं वर्षों तक न मिलने की टीस को तुरंत भूल गई। मैं और मैम अब पुस्तकालय की छत जिसे अमूमन दिल्ली विश्वविद्यालय के स्टूडेंट फ्लोर कहते हैं वहाँ बैठ चाय की चुस्की ले रहे थे। बातचीत में मैम के बाल – साहित्य और नक्षत्रीय ज्ञान का परिचय भी मिलता रहा। जीवन के संघर्षों का जिक्र होता रहा और लगा ही नहीं कि हम इतने वर्षों बाद मिले हैं।

मेरे अस्तित्व को रचने और गढ़ने में गुरु माँ डॉ॰ शंकुतला कालरा मैम का योगदान रहा है। समय का चक्र चलता रहा और मेरी नियुक्ति दिल्ली विश्वविद्यालय के रामानुजन महाविद्यालय के हिंदी विभाग में हुई तो कई बार मूल्यांकन के दौरान तो कभी दिल्ली विश्वविद्यालय में भेंट होती रही । डिजिटल दुनिया ने तो दूरियाँ कम करते हुए कितनी बार मैम को सुनने का मौका दिया। बाल – साहित्य जिस मासूमियत और भोलेपन से रचा जाता है उसकी साक्षात मूरत मैम में दृष्टिगत होती है। कभी बेटा जी, कभी मधु, कभी माधवी औरमाधुरी यही धरोहर है मेरी। ....बस यही याद करूँ।

आपकी शिष्या और पुत्री
प्रो॰ मधु कौशिक

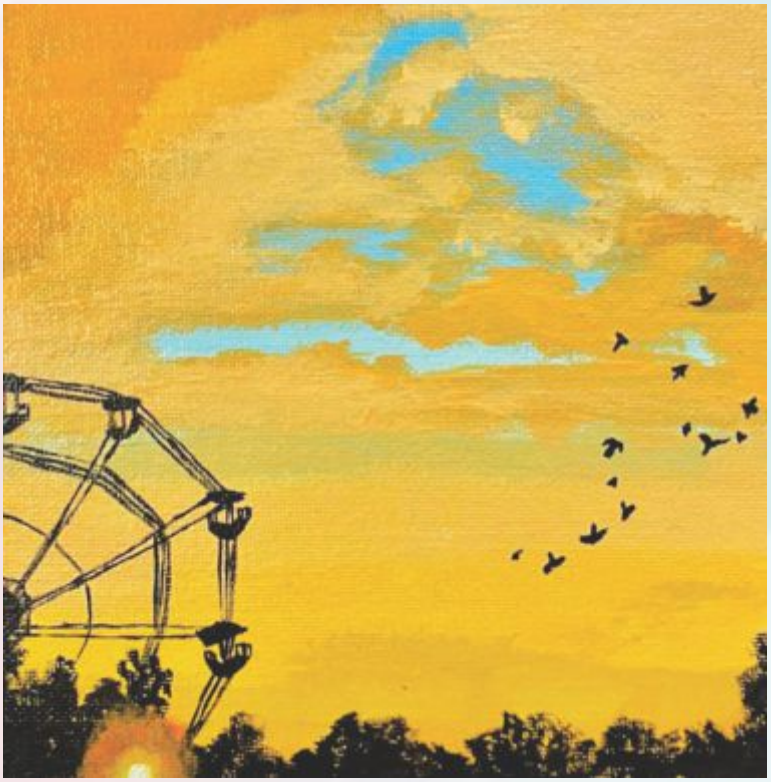

Illustration by Rupita Gupta, B.Com (Hons), Third Year

समय, सेहत और संबंध

डॉ. सुनीता पुनिया, डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स

इन तीन चमत्कारिक शब्दों का महत्व इनको खोने के बाद महसूस होता है पहला सुख निरोगी काया जिसके लिए दुख देने वाले कारणों को छोड़ देने चाहिए। जिसमें रात को देर से सोना,परिणामस्वरूप देर से ही जगना , निष्क्रिय जीवन जीना ,ग़लत आहार ,योग ना करना ,हमारी 80 प्रतिशत सेहत इन सब कारणों से ख़राब होती है ।योग शरीर को स्वस्थ रखने के साथदृसाथ हमे शारीरिक , मानसिक और आध्यात्मिक विकास के पथ पर भी ले जाता है। योगासन में आहर का बहुत बड़ा योगदान होता है , गीता में भगवान श्री कृष्ण ने भी सात्विक आहार के महत्व पर ज़ोर दिया है ,सात्विक आहार और योग से शरीर के समस्त रोगों को दूर कर मस्तिष्क को तनाव मुक्त कर,आत्मा का ईश्वर के साथ एकरूप करवाता है,हमारी सोच सकारात्मक और विचार शुद्ध और परहित सोचने की प्रेरणा भी मिलती है जीवन जीने का सबसे सर्वोत्तम तरीक़ा योग तथा सात्विक आहार ही है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू समय हैसमय बोहुत कीमती है और हमें इसे किसी भी तरह से बर्बाद नहीं करना चाहिए। इसी तरह, हम जो पैसा खर्च करते हैं, उसे कमा सकते हैं, लेकिन हम अपने खोए हुए समय को वापस नहीं पा सकते। तो, यह समय को पैसे से अधिक मूल्यवान बनाता है। इसलिए, हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए।

यह दुनिया की सबसे मूल्यवान और कीमती चीज़ है। साथ ही, हमें इसका उपयोग अपने अच्छे के साथ–साथ अपने आस–पास के अन्य लोगों के लिए भी करना चाहिए। इससे हमें और समाज को बेहतर कल की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी।विद्यार्थी जीवन में समय का सही उपयोग किया जाए तो जीवन में सफ़लता अवश्य प्राप्त होती है। इसके विपरीत जो विद्यार्थी कर लेंगे या पढ़ लेंगे का दृष्टिकोण रखते हैं, वे असफलता का मुँह देखते हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपना हर कार्य निर्धारित समय पर या उसके पूर्व ही समाप्त कर लें। जिससे बचे हुए समय में दूसरे कामों को करने की रूपरेखा बनायी जा सके।फिर लौट कभी भी न आए समय ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है। इसके अलावा, एक कहावत है कि "यदि आप समय बर्बाद करते हैं, तो समय आपको बर्बाद करेगा।" केवल यह रेखा यह बताने के लिए पर्याप्त है कि समय कितना महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

समय का मूल्य

समय तो होता है बलवान
चलते रहना इसका काम
समय रहते जो जाने इसे
वही बन जाए भाग्यवान
चाहे जो परिस्थिति आए
या आलस तुम्हें बहकाए
लेना समझदारी से काम
समय से करना सारे काम
हर वस्तु पैसे से मिल जाए
है समय ही जो ना ले पाए
एक बार हाथ से जो निकले
फिर लौट कभी भी न आए

मनुष्य जीवन रिश्तों से जुड़ा हुआ है। रिश्तों के कारण ही मनुष्य जीवन में आगे बढ़ने की, सफलता पाने की, शिक्षित होने की, कार्य करने की इच्छा रखता है। यदि रिश्ते मधुर हों तो जीवन सुखमय व खुशहाल बन जाता है, किंतु रिश्तों में खटास आते ही व्यक्ति भी टूट जाता है। रिश्ता आखिर बिगड़ता क्यों है? इसके पीछे व्यक्ति का अहं, सोच व उसका व्यवहार ही ज़िम्मेदार होता है। मशहूर स्पीच थेरेपिस्ट बिल वाल्टन का मानना है कि रिश्तों को बिगाड़ने में 50 फीसद से ज़्यादा कारण असंयमित भाषा होती है। अध्यात्म और शांति के साथ कार्य करने वाले व्यक्तियों के रिश्ते बेहद सफल होते हैं। रिश्ते निभाना भी समझौतों का ही दूसरा नाम है। रिश्ते केवल खून के ही नहीं होते, भावनात्मक भी होते हैं। कई बार भावनात्मक रिश्ते अटूट बन जाते हैं, क्योंकि उनमें प्रेम, सामंजस्य, धैर्य, ईमानदारी का साथ होता है कहने का तात्प्रिय है समय,सेहत ,संबंध इन तीनों का आपस में अंतर्संबंध है इसलिए इनको बनाये रखना ही हमारे सफ़ल जीवन जीने की निशानी है ।

Photograph by Simarjeet Singh, English (Hons), Second Year

इतिहास का अध्ययन और अध्यापन: एक अवलोकन

उमेश झा, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
रामानुजन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्याल

प्रस्तावना:

हमारी स्कूली शिक्षा में सबसे कम अहमियत इतिहास की शिक्षा को दी जाती है। आमतौर पर यह मानकर चला जाता है कि इतिहास एक पढ़ लिया गया विषय है और पढ़ने – पढ़ाने वाला विषय तो विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर भाषा एवं साहित्य आदि हैं जिसका आगे चलकर उपयोग होना है। इस "उपयोगितावादी" दृष्टि में इतिहास को एक ऐसा विषय मान लिया जाता है जो वर्तमान से बेखबर सुदूर अतीत को ढूंढने में या गड़े मुर्दे उखाड़ने में लगा हुआ है। एक ऐसा निर्जीव अतीत जिसका आज के आधुनिक तकनीकी युग में शायद ही कोई महत्व है। अमुमन यह माना जाता है कि इतिहास में अतीत के बारे में केवल सूचनाएं होती हैं जो महज रटने के लिए होती हैं और जिसका वास्तविक जीवन से कोई लेना–देना नहीं होता है। यह भी कहा जाता है कि होनहार विद्यार्थी को विज्ञान पढ़ना चाहिए इतिहास नहीं क्योंकि उसमें नौकरी मिलने की संभावना बहुत क्षीण होती है। हमारे अधिकतर अध्यापक, अभिभावक और अध्येता भी इतिहास के बारे में इसी भ्रांति से ग्रसित होते हैं। इसलिए स्कूल के स्तर पर और कालेज के स्तर पर भी इतिहास के अध्ययन के प्रति वो गंभीरता नहीं अपनाईं जाती जो अमूमन अन्य विषयों के अध्ययन के लिए अपनाई जाती है। इस आलेख का मुख्य उद्देश्य इतिहास के अध्ययन की स्थिति और उसकी उपयोगिता को स्पष्ट करना है।

क्या इतिहास का अध्ययन होना चाहिए:

'इतिहास' शब्द और विषय काफी पुराना है। इतना पुराना कि अक्सर लोग इससे ऊब जाते हैं। कुछ लोग इससे इस कदर उब चुके हैं कि कि वो एक 'जिन्न' की तरह इसे किसी गहरे तहखाने में तालाबंद कर देना चाहते हैं। "यान्त्रिक वर्चस्ववादी" मनोवृत्तियों के कारण उनके लिए यह सोचना आसान हो जाता है कि आज कि विराट मानवीय समस्याओं को समझने और उन्हें हल करने के लिए अतीत का अध्ययन आवश्यक नहीं है। कई लोग ऐसे भी हैं जो इसके विपरीत राय रखते हैं। उन्हें इतिहास एक दिलचस्प और मनोरंजक विषय लगता है। उनका मानना है कि इतिहास का अध्ययन होना चाहिए क्योंकि यह अतीत की "गौरवशाली परंपराओं" से हमें अवगत कराता है। परंतु उन्हें वही इतिहास वास्तविक लगता है जो "उनकी" गौरवशाली परम्पराओं को पुष्ट कर सके। ऐसे लोग कई बार अपने सैन्य दल–बल के साथ तब "धाबा" बोल देते हैं जब उन्हें लगता है कि अमुक "कृति" ने उनकी गौरवशाली परम्पराओं के साथ "खिलवाड़" किया है। ऐसी स्थिति में हम इतिहास का विस्तार वहां तक नहीं करते जहां हम उससे कुछ सीख सकें वल्कि हम अतीत को इस प्रकार से तोड़ते मरोड़ते हैं कि वह उस पूर्व निर्धारित अर्थ के साथ मेल करने लगे जिसे हम पहले से ही सोच रहे होते हैं।

क्या इतिहास का उपयोग होता है:

हमारे समाज में जहां शिक्षा से कुछ उपयोगी उद्देश्यों की पूर्ति की उम्मीद की जाती है वहां इतिहास के शिक्षण के उद्देश्यों को व्याख्यायित करना मेडिकल या इंजीनियरिंग के मुकाबले काफी कठिन है। वास्तव में इतिहास बहुत उपयोगी ही नहीं बल्कि अपरिहार्य विषय है, लेकिन इतिहास की उत्पादकता उतनी साफ नजर नहीं आती और अन्य विषयों के मुकाबले उसके परिणाम उतने स्पष्ट और त्वरित दिखाई नहीं पड़ते। वस्तुतः इतिहास का काम न तो केवल अतीत का गौरवगान करना है और न ही भविष्य का पथ–प्रदर्शक बनना। इतिहास के लिए यह आवश्यक है कि वह अतीत को महज एक गौरवगाथा के तौर पर न देखकर उसे मानव समाज की एक विकासमान प्रक्रिया के रूप में देखे। इस रूप में इतिहास दरअसल अतीत के यथार्थ को बयां करने की एक कला है। प्रसिद्ध इतिहासकार मार्क ब्लाख के शब्दों में कहें तो यह न तो घड़ी बनाने की कला है और न ही कैबिनेट बनाने की कला। वल्कि यह बेहतर समझदारी हासिल करने का एक प्रयास है और इसलिए एक गतिशील विषय है। इतिहास शिक्षण का उद्देश्य होता है परिवर्तन के साथ साथ निरंतरता को समझना, अर्थात समय के साथ समाज में आनेवाले परिवर्तन की प्रक्रिया को समझना। ऐतिहासिक धटनाओं के व्यक्ति और समाज पर पड़नेवाले प्रभावों को समझना और अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के संबंधों को समझना। वास्तव में समय विशेष में मनुष्य और उसकी गतिविधि या मनुष्यों और उसकी गतिविधियों का अध्ययन करना ही इतिहास का प्रमुख कार्य होता है।

इतिहास संबंधी कार्य कैसे किये जाते हैं:

इतिहास अपने आप को बेहतर बनाने के लिए हमेशा अनुसंधान और जांच –पड़ताल करने पर जोर देती है। इसलिए इतिहास में कारणों की कल्पना नहीं की जा सकती वल्कि उसकी खोज की जाती है। कई दशक पहले प्रसिद्ध इतिहासकार ई. एच. कार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "इतिहास क्या है" में इस मसले का बेहतरीन विश्लेषण किया था। उनके अनुसार इतिहास के अध्ययन एवं लेखन में इतिहासकार हमेशा तरह तरह के श्रोतों के बीच चयन करता है। किसी पुराने अभिलेखागार में दस्तावेजों के ढेरों की जांच पड़ताल कर इतिहासकार उन तथ्यों को नोट करता है जो उसे महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। फिर वह अन्य स्थानों के अभिलेखागारों से प्रमाण इकट्ठा करता है और भिन्न–भिन्न तरह के प्रमाणों एवं तथ्यों के बीच

अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करता है। वह न तो उन सभी चीजों को हूं बहू लिख सकता है जिसे उसने पढ़ा है और न ही वह हर प्रमाण का प्रयोग कर सकता है। जो प्रमाण उसे महत्वपूर्ण नहीं लगते उन्हें वह छोड़ देता है। बाद में कोई अन्य इतिहासकार उन्हीं श्रोतों को नए प्रश्नों के साथ पढता है। नये इतिहासकार को अब कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिन्हें पहले महत्व नहीं दिया गया था। वे इन प्रमाणों की व्याख्या करते हैं, उन प्रमाणों के आधार पर नये अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करते हैं और इस तरह से इतिहास की एक नई कृति उभरकर सामने आती है। वास्तव में चयन की यह प्रक्रिया इतिहास लेखन की एक अंतर्निहित प्रक्रिया है। और इस रूप में इतिहास अन्य विज्ञानों से निश्चय ही एक फर्क और अलग विषय है।

जहां वैज्ञानिक अपने सिद्धांतों के पक्ष में प्रयोग कर सकते हैं और उनके आधार पर आंकड़े निकाल सकते हैं वहीं इतिहासकार नई जानकारी के सृजन के लिए अतीत की परिस्थितियों में फेरबदल नहीं कर सकता। इसके बजाय वो प्रार्थमिक श्रोत की व्याख्या पर अपने तर्क को टिकाते हैं जो किसी एक धटना को अनेक दष्टियों से समझाने का काम करता है। इसलिए इतिहास पढ़ते समय हमें यह जरूर देखना चाहिए कि अमुक इतिहासकार कैसी धटनाओं के बारे में लिख रहा है और उसकी कैसे व्याख्या कर रहा है। शायद इसीलिए मार्क ब्लाख का यह कहना उचित है कि "इतिहास दरअसल अतीत और वर्तमान के बीच निरंतर चलने वाला संवाद है।

इतिहास की अंतर्वस्तुः

आरंभ से लेकर अब तक इतिहास की अंतर्वस्तु में काफी बदलाव आ चुका है।आज हमारे पास परंपरागत सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास के अलावा ढेरों अन्य किस्म के इतिहास हैं, मसलन– खेलों का इतिहास, पर्यावरण का इतिहास, डाकखानों का इतिहास, रेलों का इतिहास, रोगों का इतिहास, भोजन और पहनावे का इतिहास तथा बदलती मानसिकताओं का इतिहास आदि आदि। इस तरह से इतिहास के परिमाण और क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हो रहा है। ऐसा लगता है कि आज का इतिहासकार अतीत के हर कोने को , मनुष्य के हर गतिविधि को , उसके अच्छे और बुरे कारनामें को समय रहते इतिहास में दर्ज करने को बेचैन है। परंतु यहीं एक चिंता का विषय भी हैं क्योंकि जितनी अधिक मात्रा में हम इतिहास लिखते चले जा रहे हैं, इतिहास के मूल्यबोध और उसके चरित्र के बारे में हमारी चिंता उतनी ही अधिक बढ़ती जा रही है। इतिहास लेखन– शास्त्र और इतिहास अनुसंधान पद्धति पर ढेरों किताबें लिखी जा चुकी हैं, फिर भी हम उन प्रश्नों का, जिसे अनाल्स स्कूल के संस्थापक मार्क ब्लाख ने सन् 1940 के दशक में उठाया थाः 'इतिहास किस काम आता है?' और जब अतीत के मूल्यों का बेरहमी से तिरस्कार किया जा रहा है , तो फिर इतिहास भला किस काम का रह जाता है? इतिहास का फायदा ही क्या अगर हम उन्हीं पुरानी गलतियों को बार–बार दुहराते रहें? का जवाब अभी भी ढूंढ रहे हैं। और अगर हम पक्के यकीन से कह सकते हों कि इतिहास किसी विशेष काम आता है, तो भी क्या हम उस किस्म का इतिहास लिख रहे हैं जिसका उपयोग हो सके? इन सवालों का जवाब निश्चय ही इस बात में है कि आखिर हम भावी समाज को किस रूप में देखना चाहते हैं। इतिहास शिक्षण का उद्देश्य समकालीन समाज की चुनौतियों को समझने और तदनुरूप भविष्य की दिशा तय करने में प्रभावी तरीके से होना लाजिमी है।

इतिहासकार अतीत को मुख्यतः वैकल्पिक, विरोधाभासी या बिखरे हुए साक्ष्यों के आधार पर गढ़ते हैं। इतिहासकार एक दूसरे के साथ बहस में उलझते हैं, प्राकल्पना निर्मित करते हैं और ऐसा पाठ निर्मित करते हैं जिसे कभी भी अन्तिम नहीं कहा जा सकता। उनके अन्तहीन अनुमान जारी रहते हैं और अतीत की खोज करने के बाद भी उनकी कल्पनाशीलता उसे लेकर जारी रहता है। उनके द्वारा निर्मित इतिहास निरपेक्ष नहीं होता है वल्कि वह अनेक साहित्य, वैचारिक और सिलसिलेवार सरोकारों से संचालित होता है। 'इतिहासकारों के शिल्प' के पीछे के यही व्यापक झुकाव इतिहास जैसा है – या उसे जैसा होना चाहिए – के माध्यम से ध्वनित होते हैं।

अतीत, वर्तमान और भविष्यः

इतिहास को हमें महज अतीत के तथ्यों व जानकारियों के ढेर के बजाय एक ऐसी महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में देखना चाहिए जो वर्तमान और भविष्य को गढ़ने में अहम रोल अदा करता है। यह अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संबंध कायम करता है। इतिहास वर्तमान को समझने में मदद करता है और भविष्य के लिए सुगम रास्ता तैयार करने में मदद करता है। यह सदियों से मानव जीवन के संघर्ष का वह रूप है जिससे मानव जीवन समृद्ध हुआ है।

इतिहास शिक्षण का उद्देश्यः

इतिहास पढ़ाने का मकसद बच्चे को सामाजिक जीवन के मूल्यों के प्रति समझ विकसित करना है।इस बात की कल्पना कर पाना है कि वे कौन सी ताकतें थी जिन्होंने उनकी मदद की और इंसान को एक दूसरे के करीब लायीं और कौन सी ताकतें थीं जिन्होंने उन्हें आगे बढ़ने से रोका। इस उद्देश्य के लिए विषय की प्रस्तुति में एक गतिशीलता और सक्रियता लानी होगी। इतिहास का अध्ययन सिर्फ सूचनाओं को संचित करना नहीं है वल्कि उन सूचनाओं का इस्तेमाल एक ऐसी तस्वीर बनाने में होनी चाहिए जहां दिखें कि मनुष्य ने ऐसा क्यों और किसलिए किया,किस तरह उसने सफलताएं अर्जित कीं और क्यों वह कई जगह विफल रहा।

स्कूलों में इतिहास की पढ़ाई और प्रेमचंद की कहानीः

हमारे स्कूली शिक्षा में पारंपरिक रूप से इतिहास की शिक्षा की जो स्थिति रही है उसपर प्रेमचंद ने अपनी कहानी 'बड़े भाईसाहब' में तीखा ब्यंग्य किया है। इस कहानी में बड़े भाईसाहब अपने छोटे भाई को नसीहत भरी झिड़की देते हुए कहते हैं, "बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ आठ हेनरी हो गुजरे हैं। कौन सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवां लिखा और सब नम्बर गायब! सफ़ाचट! सिफर भी न मिलेगा, सिफर भी ! हो किस ख्याल में। दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोडियो चार्ल्स! दिमाग चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो जाता है"। यह कहानी इतिहास की शिक्षा की रटंत चरित्र और उसकी अर्थहीनता का सुंदर

चित्रण करती है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में आमतौर पर तथ्यों, सूचनाओं और जानकारियों के रटने रटाने पर इतना जोर दिया जाता है कि इस शर्त को पूरा करने भर से यह मान लिया जाता है कि अमुक व्यक्ति इतिहास जानता है।

निष्कर्षः

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इतिहास बोध का विकास सिर्फ तथ्यों या सूचनाओं को रटवाने मात्र से संभव नहीं है, न हीं यह अतीत के गौरव ज्ञान से संभव है और न ही अतीत के प्रति शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति से। यह अतीत को आलोचनात्मक नजरिए से देखने से ही संभव है। और इसके लिए आवश्यक है कि इतिहास का पुनर्लेखन हमेशा होता रहे। हमें याद रखना चाहिए कि इतिहास अतीत का एक निर्मम मूल्यांकनकर्ता है।

संदर्भ श्रोतः

1– मार्क ब्लाखः– इतिहासकार का शिल्प, दिल्ली, 2005

2– ई. एच. कारः– इतिहास क्या है, दिल्ली 1983

3– ई. श्रीधरनः– इतिहास –लेख एक पाठ्य–पुस्तक, दिल्ली, 2014

4– स्टुअर्ट क्लार्क :– दि एनाल्स हिस्टोरियन्स, क्रिटिकल एसेसमेंट, लंदन, 1999

5– आर.जी. कालिंगवुडः– दि आइडिया आफ हिस्ट्री, 1946

6– शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्र पांडेयः– निम्नवर्गीय प्रसंग, दिल्ली, 2002

7– विश्वंभरः– इतिहास का शिक्षण, शिक्षा विमर्श, नवंबर – दिसंबर, 2008

8– जांन डिवीः– आरंभिक शिक्षा में इतिहास के उद्देश्य, शिक्षा विमर्श, नवंबर – दिसंबर 2008

9– ब्रूस वानस्लेडराइटः– इतिहास अध्ययन की जड़ता, शिक्षा विमर्श, नवंबर – दिसंबर , 2008

10– विश्वंभरः– राजस्थान के इतिहास का पुनर्लेखन और इतिहास के प्रति नजरिया, शिक्षा विमर्श, नवंबर – दिसंबर, 2008

11– आदित्य सरकारः– इतिहास की पाठ्यपुस्तकें, शिक्षा विमर्श, नवंबर – दिसंवर , 2008

12– पीटर एन. स्टर्नः– इतिहास क्यों पढ़ें, शिक्षा विमर्श, नवंबर – दिसंबर, 2008

13– सुमित सरकार, :– सामाजिक इतिहास, दिल्ली, 2002

14– भुपेंद्र यादवः– फ्रेमिंग हिस्ट्री, दिल्ली, 2012

15– उपिन्दर सिंहः– प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2017

16– कृष्ण कुमारः– राज समाज और शिक्षा, दिल्ली, 1990, 2008

17– कृष्ण कुमारः– शैक्षिक ज्ञान और वर्चस्व, दिल्ली,1998

18– कृष्ण कुमारः– गुलामी की शिक्षा और राष्ट्रवाद, 2006, 2013

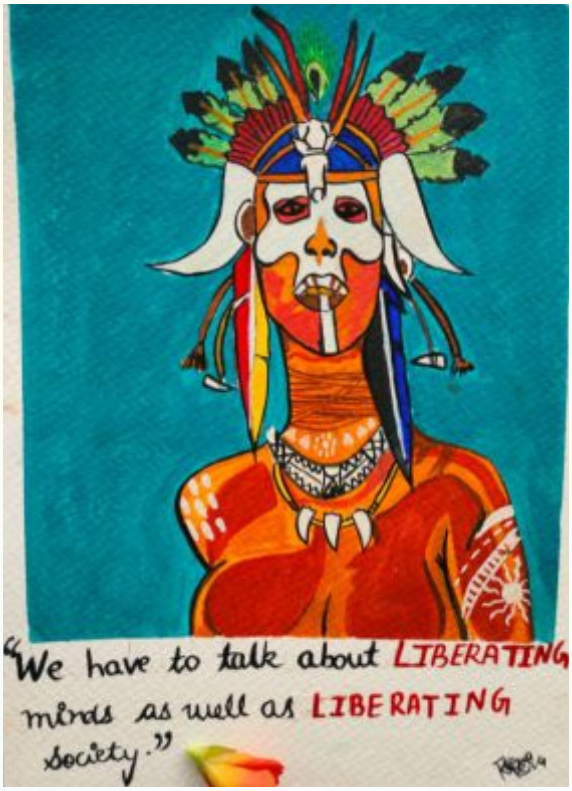

Illustration by Reena Meena, B.A (Hons) English, Third Year

ਪੰਜਾਬੀ

ILLUSTRATION BY REENA MEENA, B.A. (HONS.) ENGLISH

ਗਦ ਅਤੇ ਸ਼ਾਇਰੀ

ਮਾਂ- ਬੋਲੀ ਦਾ ਕਰਜ਼

ਅਮਨ ਗੁਪਤਾ, B. A. PROG. 2ND YEAR

ਜੋ ਵਗਦੀ ਵਿਚ ਹਵਾਵਾਂ ਦੇ
ਜੋ ਸ਼ੂਕਦੀ ਵਿਚ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦੇ
ਜੋ ਹੱਦਾਂ- ਸਰਹੱਦਾਂ ਤੋਂ ਉੱਚੀ ਏ,
ਪੀਰਾਂ-ਫ਼ਕੀਰਾ ਦੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿੱਚ ਆਈ
ਤਾਸੀਰ ਵੀ ਇਸ ਦੀ ਸੁੱਚੀ ਏ।
ਇਹ ਬੋਲੀ ਹੈ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੀ
ਫੜ ਉਂਗਲ ਰਾਹ ਵਿਖਾਉਂਦੀ ਏ,
ਪਹਿਲਾ ਅੱਖਰ 'ਮਾਂ' ਬੋਲਣਾ
ਪੰਜਾਬੀ ਹੀ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਸਿਖਾਉਂਦੀ ਏ
ਮਾਂ ਆਪਣੀ ਬੇਕਦਰਾਂ ਹੱਥੋਂ
ਰਲ-ਮਿਲ ਅਸਾਂ ਬਚਾਉਣੀ ਏ,
ਅਸੀ ਸਾਰਿਆ ਨੇ ਰੱਲ ਕੇ ਹੀ ਤਾਂ
ਹੁਣ ਸ਼ਾਨ ਇਹਦੀ ਵਧਉਣੀ ਏ,
ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ
ਧੁਰ ਅੰਬਰੀਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣੀ ਏ
ਹੁਣ ਨਾ ਜਾਗੇ ਮਰ ਜਾਵਾਂਗੇ
ਬੇਗਾਨੀ ਦਾ ਜੂਲਾ ਗਲ ਵਿਚ ਪਾ ਲਾਂਗੇ
ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੀ ਹੋਂਦ ਅਸੀਂ
ਇਸ ਜੱਗ ਵਿੱਚੋ ਗਵਾਲਾਂਗੇ!!
ਅਹਿਸਾਨ ਬੜੇ ਨੇ ਸਾਡੇ ਤੇ ਇਸ ਦੇ
ਮਰਨ ਤਾਂਈ ਨਾ ਭੁੱਲ ਪਾਵਾਂਗੇ,
ਗਵਾ ਲਈ ਜੇ ਆਪਣੇ ਹੱਥੋ
ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦਾ ਕਰਜ਼ ਫੇਰ
ਦੱਸੋ ਕਿਵੇਂ ਚੁਕਾਵਾਂਗੇ?

ਜਿਉਂਦੇ ਵਸਦੇ ਰਹੋ ਪੰਜਾਬੀ

ਰਿਆ ਸਚਦੇਵਾ, B.A.PROG, 2ND YEAR

ਪੜ੍ਹੋ ਪੰਜਾਬੀ ਲਿਖੋ ਪੰਜਾਬੀ
ਸੁਣੋ ਪੰਜਾਬੀ ਬਣੋ ਪੰਜਾਬੀ
ਪੁੱਛੇ ਜੇ ਕੋਈ ਕੋਣ ਹੈ ਮਿਤਰਾ?
ਸ਼ਾਨ ਦੇ ਨਾਲ ਫ਼ਿਰ ਕਹੋ ਪੰਜਾਬੀ
ਸਿਖੋ ਹਿੰਦੀ ਜਾਂ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ
ਧੁਰ ਅੰਦਰੋਂ ਪਰ ਰਹੇ ਪੰਜਾਬੀ
ਮਾਂ ਵਰਗੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਬੋਲੀ
ਖੁਸ਼ ਹੋਵੇ ਜਦ ਸੁਣੇ ਪੰਜਾਬੀ
ਗੀਤ ਜੇ ਗਾਣੇ ਗਾਓ ਪੰਜਾਬੀ
ਨਾਚ ਜੇ ਨੱਚਣੇ ਨੱਚੋ ਪੰਜਾਬੀ
ਖਾ ਲਓ ਸਹੁੰ ਕਿ ਸਦਾ ਰਹਾਂਗੇ
ਦਿਲੋਂ ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਹੋਂ ਪੰਜਾਬੀ
ਵਖਰੀ ਜੰਗ ਤੇ ਸ਼ਾਨ ਰਹੇਗੀ
ਜੀਓਦੇ ਵਸਦੇ ਰਹੋ ਪੰਜਾਬੀ |

Illustration by Reena Meena, B.A. (Hons.) English

ਨੀਤੀ ਅਧਾਰਿਤ ਰਾਜਨੀਤੀ

~ਨਕੁਲ ਤਿਵਾਰੀ, B.A.PROG, 2ND YEAR

Photograph by Aanchal Jain, B.A. Program.

੨੦੨੪ ਦੇ ਲੋਕਸਭਾ ਚੋਣਾਂ ਦੀ ਦੌੜ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ। ਜਿਹਦੇ ਕਰਕੇ ਹਰ ਇਕ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਦਲ ਦੇ ਵਿਚ ਅਫਰਾ- ਤਫਰੀ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਬਣ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਕਈ ਰਾਜ ਨੇਤਾ ਆਪਣਾ ਦਲ ਛੱਡ ਕੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਦਲ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਰਹੇ ਨੇ ਤੇ ਕਈ ਆਪਣੇ ਹੀ ਦਲ ਦੀ ਬੁਰਾਈ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਹੀ ਦਲ 'ਚ ਅੱਗੇ ਆਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਨੇ ਤੇ ਇਹ ਸਭ ਦੇ ਵਿਚ ਇਕ ਗੱਲ ਤਾਂ ਸਾਫ਼ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਰਾਜਨੇਤਾ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਕਲੀ ਸੱਤਾ ਪਾਉਣ ਦੇ ਨਾਲ ਸੇਵਾ ਦਾ ਵੀ ਜਜ਼ਬਾ ਹੋਣਾ ਲਾਜ਼ਮੀ ਹੈ।

ਰਾਜਨੀਤੀ ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਰਾਜ+ਨੀਤੀ ਦਾ ਸੁਮੇਲ ਹੈ। (ਰਾਜ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਸ਼ਾਸਨ ਅਤੇ ਨੀਤੀ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਸਹੀ ਕੰਮ ਨੂੰ ਸਹੀ ਸਮੇਂ ਅਤੇ ਸਹੀ ਥਾਂ 'ਤੇ ਕਰਨ ਦੀ ਕਲਾ) ਯਾਨੀ ਕਿਸੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਨੀਤੀ ਰਾਹੀਂ ਰਾਜ ਕਰਨਾ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਉਦੇਸ਼ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਨੂੰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਲਫ਼ਜ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਕਹੀਏ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਚੁੱਕਣਾ ਰਾਜਨੀਤੀ ਹੈ। ਸਿਵਲ ਪੱਧਰ ਜਾਂ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਕਿਸੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕਿਸਮ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਅਤੇ ਅਭਿਆਸ ਨੂੰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹੋਰ ਸੌਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ, ਸਰਕਾਰ ਵਿੱਚ ਅਹੁਦਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਹੁਦੇ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨਾ, ਰਾਜਨੀਤੀ ਹੈ।

ਰਾਜਨੀਤੀ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਹੈ, ਜਿਸ ਦਾ ਵੇਰਵਾ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਪੁਰਾਣੇ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿਚ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਰਾਜਨੀਤੀ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਰਾਮਾਇਣ ਕਾਲ ਤੋਂ ਵੀ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਵੇਰਵੇ ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਦੇ ਮਹਾਂਕਾਵਿ ਵਿੱਚ ਦੇਖੇ ਗਏ ਹਨ। ਚਾਹੇ ਉਹ ਚੱਕਰਵਿਊ ਦੀ ਰਚਨਾ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਜੂਏ ਦੀ ਖੇਡ ਵਿੱਚ ਪਾਂਡਵਾਂ ਨੂੰ ਹਰਾਉਣ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤੀ। ਅਰਸਤੂ ਨੂੰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦਾ ਪਿਤਾ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਦੇਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਸੋਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਇਹ ਮੰਦਭਾਗੀ ਗੱਲ ਹੈ, ਸਾਨੂੰ ਇਹ ਸਮਝਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਰਾਜਨੀਤੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮਾਜ ਦਾ ਅਨਿੱਖੜਵਾਂ ਅੰਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਨੇ ਇਕ ਵਾਰ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਸੱਪ ਵਾਂਗ ਜੱਕੜ ਕੇ ਰੱਖਿਆ ਹੈ ਤੇ ਕੋਈ ਵੀ ਸਮਾਜ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸੰਗਠਨ ਅਤੇ ਸਮੂਹਿਕ ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੇ ਕੁਝ ਢਾਂਚੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਟਿਕ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ।

ਅੱਜ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਐਸੇ ਹੋਣਗੇ ਜੋ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਕੈਰੀਅਰ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਬੁਰੀ ਨਜ਼ਰ ਨਾਲ ਦੇਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਕਾਰਨ ਹੈ ਕਿ ਰਾਜਨੀਤੀ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਲੋਕ ਸੇਵਾ ਦਾ ਸਰਵਉੱਚ ਸਾਧਨ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਕੁਝ ਨੇਤਾਵਾਂ ਕਾਰਨ ਅੱਜ ਸਿਆਸਤ ਸਰਾਪ ਬਣ ਚੁੱਕੀ ਹੈ। ਨੀਤੀ ਦਾ ਅਰਥ ਸਹੀ ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਸਹੀ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੀ ਕਲਾ ਹੈ, ਸੱਤਾ ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਦੀ ਲਾਲਸਾ ਵਿੱਚ ਸਿਆਸੀ ਪਾਰਟੀਆਂ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮਾਪਦੰਡ ਅਪਣਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਸਿਆਸੀ ਪਾਰਟੀਆਂ ਲਈ ਚੋਣਾਂ ਜਿੱਤਣ ਲਈ ਹਮੇਸ਼ਾ ਪਿਆਰ, ਭਰੋਸੇ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਪੈਸਾ ਸਮਾਜ ਦੀ ਬਿਹਤਰੀ ਲਈ ਵਰਤਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੂੰ 'ਸਰਬਤ ਦੇ ਭਲੇ ਦੀ ਰਾਹ ਤੇ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ ਜੋ ਅੱਜ ਦਾ ਨੌਜਵਾਨ ਸਿਆਸਤ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਦਿਲਚਸਪੀ ਲਵੇ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਯੋਗਦਾਨ ਦੇ ਸਕੇ । ਸਮੇਂ – ਸਮੇਂ ਤੇ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿਚ ਬਦਲਾਵ ਆਉਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਇਸਨੂੰ ਸਿਰਫ ਰਾਜ ਕਰਨ ਦਾ ਸਾਧਨ ਨਾ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ ਬਲਕਿ ਜਨਤਾ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਦਾ ਸਾਧਨ ਵੀ ਸਮਝਣਾ ਲਾਜ਼ਮੀ ਹੈ| 2001 ਵਿੱਚ ਆਈ ਫਿਲਮ ਨਾਇਕ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਵਧੀਆ ਸੰਵਾਦ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ "ਸਾਨੂੰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੂੰ ਮਾੜਾ ਕਹਿਣ ਦਾ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋਏ ਵੀ ਇਸਨੂੰ ਚੰਗਾ ਨਹੀਂ ਬਣਾ ਸਕਦੇ।" ਰਾਜਨੀਤੀ ਕਦੇ ਮਾੜੀ ਨਹੀਂ ਕਿ ਇਸ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਨੇਤਾ ਮਾੜੇ ਹਨ। ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਇੱਕ ਵੱਡਾ ਵਰਗ ਵੋਟ ਪਾਉਣ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ ਤਾਂ ਉਹੀ ਤਬਕਾ ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਰਾਜਨੀਤੀ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਖਾ ਗਈ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਦੂਜਿਆਂ ਨੂੰ ਗਲਤ ਕਹਿਣ ਦਾ ਕੀ ਹੱਕ ਹੈ ? ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਇਹ ਸਿਰਫ਼ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਇਹ ਇਸ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ। ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਪਤਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੂੰ ਵੋਟ ਪਾਉਣ ਲਈ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹ ਅਜਿਹਾ ਆਗੂ ਚੁਣਨ ਜੋ ਸਮਾਜ ਦੀ ਭਲਾਈ ਬਾਰੇ ਸੋਚਦਾ ਹੋਵੇ।

ਅੱਜ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿੱਚ ਕੁੱਦਣ ਦੀ ਅਤੇ ਬਦਲਾਵ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਅੱਜ ਇਸ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਹਿੱਸਾ ਪਾਉਣਾ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ, ਇਹ ਇੱਕ ਦਿਨ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ, ਪਰ ਇੱਕ ਦਿਨ ਜ਼ਰੂਰ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸਿੱਖਿਅਤ ਅਤੇ ਚਰਿੱਤਰਵਾਨ ਬਣਾਉਣਾ ਪਵੇਗਾ। ਸਾਨੂੰ ਸਮਾਜ ਦੀਆਂ ਬੁਰਾਈਆਂ ਤੋਂ ਉੱਠ ਕੇ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਦੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਲੜਨਾ ਪਵੇਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਜਿੰਨਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਅਸੀਂ ਰਾਜਨੀਤੀ ਤੋਂ ਦੂਰ ਭੱਜਾਂਗੇ, ਓਨਾ ਹੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਸਾਡੇ ਉੱਤੇ ਹਾਵੀ ਹੁੰਦੀ ਰਹੇਗੀ। ਨੀਤੀ ਰਹਿਤ ਰਾਜਨੀਤੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਖੋਖਲਾ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਕੋਈ ਵੀ ਸਰਕਾਰ ਪੂਰੀ ਗਲਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ | ਜਦੋਂ ਵੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਚੰਗੇ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਹੌਂਸਲਾ ਵਧਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ| ਭਾਰਤ ਵਰਗੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਇਹ ਖੂਬਸੂਰਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇਥੇ ਸਰਬ ਧਰਮ, ਸਰਬ ਸਭਿਆਚਾਰ ਆਪਸ ਵਿਚ ਮਿਲ ਕੇ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਪਹਿਲੀ ਕਤਾਰ ਵਿਚ ਦੇਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਜਿਹਾ ਤਾਂ ਹੀ ਸੰਭਵ ਹੈ ਜੇ ਸਰਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਲੋਕ ਮਿਲ ਕੇ ਇਸ ਲਈ ਲਾਮਬੰਦ ਹੋਣ, ਅੱਜ ਦੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਨੌਜਵਾਨ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿੱਚ ਰੁਚੀ ਦਿਖਾ ਕੇ ਇਸ ਨੂੰ ਨਵੀਂ ਗਤੀ ਦੇਣ ਤਾਂ ਜੋ ਆਉਣ ਵਾਲਾ ਸਮਾਜ ਇਸ ਭਾਰਤ ਤੇ ਮਾਣ ਕਰੇ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੀਤੀ, ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਸਮਰਪਣ ਨੂੰ ਬਿਆਂ ਕਰੇ, ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਪੀੜੀ ਸਿਆਸਤ ਵਿਚ ਚਮਕੇ ਅਤੇ ਇਸ ਤੋਂ ਭੱਜਣ ਦੀ ਬਜਾਏ ਇਸ ਦੇ ਅੰਦਰ ਰਹਿ ਕੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰੇ।

ਇੱਕ ਓਂਕਾਰ (ੴ)

ਹਰਜੋਤ ਸਿੰਘ, B.A.PROG, 1ST YEAR

ਇੱਕ ਓਅੰਕਾਰ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਪਾਵਨ ਗ੍ਰੰਥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਮੂਲ ਮੰਤਰ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਸ਼ਬਦ ਹਨ। ਇੱਕ ਓਂਕਾਰ (ੴ) ਪਹਿਲਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਵੀ ਹੈ, ਜੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਦਿੱਤਾ। 'ਇਕ ਓਂਕਾਰ' ਵਿਚ "" ਗੁਰਮੁਖੀ ਦੇ "ਇੱਕ" ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ "ਓਕਾਰ" ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ "ਸਿਰਜਣ ਵਾਲਾ ਜਾਂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ", ਸੋ ਇੱਕ ਓਂਕਾਰ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈ "ਇੱਕ ਸਿਰਜਣਹਾਰ, ਜਿਸਨੇ ਸਭ ਕੁਝ ਬਣਾਇਆ" ਪਰ ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਸਿਰਫ਼ 'ਇੱਕ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਜਾਂ ਰੱਬ ਨਾਲੋਂ ਬਹੁਤ ਡੂੰਘਾ ਹੈ ਭਾਵ ਇਸ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਵਿੱਚ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਉਸ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਇੱਕ ਹਿੱਸਾ ਹੈ, ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਅਤੇ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਇੱਕ ਹਨ ਅਤੇ ਵੱਖਰੇ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਸਭ ਕੁਝ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ਜਪੁ ॥
ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ॥

- ੴ - ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ, ਪਰਮ ਸ਼ਕਤੀ ਕੇਵਲ ਇੱਕ ਹੈ
- ਸਤਿ ਨਾਮੁ – ਕੇਵਲ ਉਸਦਾ ਨਾਮ ਹੀ ਸੱਚਾ ਹੈ, ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ – ਉਹੀ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਹੈ,
- ਨਿਰਭਉ- ਉਸਨੂੰ ਕਿਸੇ ਦਾ ਕੋਈ ਡਰ ਨਹੀਂ,
- ਨਿਰਵੈਰੁ – ਉਸ ਦਾ ਕੋਈ ਵੈਰੀ ਨਹੀਂ,
- ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ- ਉਹ ਸਰਬ-ਵਿਆਪਕ ਹੈ, ਉਹ ਸਭ ਵਿਚ ਵਿਰਾਜਮਾਨ
- ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ- ਉਹ ਜਨਮ-ਮਰਨ ਦੇ ਚਕਰਾਂ ਤੋਂ ਨਿਰਲੇਪ ਹੈ,
- ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ- ਗੁਰੂ ਦੀ ਮੇਹਰ,ਦਇਆ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਅਨੁਭਵ ਹੈ,
- ਜਪੁ – ਉਸ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੇ ਨਾਮ ਦਾ ਧਿਆਨ,ਸਿਮਰਨ ਕਰੋ,
- ਆਦਿ ਸਚੁ – ਉਹ ਮੁਢ-ਕਦੀਮ ਤੋਂ ਸੱਚਾ ਹੈ
- ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ- ਉਹ ਯੁਗਾਂ (ਸਦੀਆਂ) ਤੋਂ ਸੱਚਾ ਹੈ
- ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ – ਉਹ ਅਜੇ ਵੀ ਸੱਚਾ ਹੈ
- ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ – ਉਹ ਸਦਾ ਲਈ ਸੱਚਾ ਰਹੇਗਾ ਹੈ

ਵਿਸ਼ਵ ਗੁਰੂ ਭਾਰਤ ਅਤੇ ਯੋਗ

ਇਸ਼ੀਕਾ.ਕੇ. ਵਿਮਲ, B.A.PROG 2ND YEAR

ਵਿਸ਼ਵ ਗੁਰੂ ਦੀ ਉਪਾਧੀ ਲਈ ਭਾਰਤ ਦਾ ਦਾਅਵਾ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਵਿਚਾਰ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ: ਵਸੁਧੈਵ ਕੁਟੰਬਕਮ, ਸਾਰਾ ਸੰਸਾਰ ਇੱਕ ਪਰਿਵਾਰ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਇਹ ਦਲੀਲ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕਿਉਂਕਿ ਅਸੀਂ ਦੁਨੀਆ ਨੂੰ ਇਹ ਕਹਿਣ ਵਾਲੇ ਪਹਿਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਅਸੀਂ ਹੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰਦੇ ਹਾਂ, ਅਸੀਂ ਵਿਸ਼ਵ ਗੁਰੂ ਬਣਨ ਲਈ ਵਿਲੱਖਣ ਤੌਰ 'ਤੇ ਯੋਗ ਹਾਂ। ਭਾਰਤ ਦੀ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਅਤੇ ਦੌਲਤ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਇੰਨੇ ਲਾਲਚੀ ਹੋ ਗਏ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਦੀ ਦੌਲਤ ਨਾਲ ਆਪਣਾ ਭੁੱਖਾ ਢਿੱਡ ਭਰਨ ਲਈ ਭਾਰਤ 'ਤੇ ਹਮਲਾ ਕਰਨਾ ਪਿਆ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਸੂਝਵਾਨ ਮਹਾਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵ ਨੇਤਾ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਇਆ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਸੀਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਰਿਣੀ ਰਹਾਂਗੇ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਦਾ ਭਾਰਤ ਵਿਸ਼ਵ ਆਗੂ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਆਤਮ-ਨਿਰਭਰ ਵੀ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਭਾਰਤ ਦਾ ਯੋਗ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਖ਼ਾਸ ਥਾਂ ਹੈ

ਯੋਗ ਦੇ ਵਿਗਿਆਨ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਧਰਮ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਦੇ ਜਨਮ ਤੋਂ ਬਹੁਤ ਪਹਿਲਾਂ ਹੋਈ ਸੀ ਅਤੇ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਯੋਗ ਦਾ ਅਭਿਆਸ ਸਭਿਅਤਾ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਯੋਗਿਕ ਕਥਾ ਵਿੱਚ, ਸ਼ਿਵ ਨੂੰ ਮੁੱਖ ਯੋਗੀ ਜਾਂ ਆਦਿਯੋਗੀ, ਅਤੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਗੁਰੂ ਜਾਂ ਆਦਿ ਗੁਰੂ ਵਜੋਂ ਦੇਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ, ਹਿਮਾਲਿਆ ਵਿੱਚ ਕਾਂਤੀਸਰੋਵਰ ਝੀਲ ਦੇ ਕਿਨਾਰੇ, ਆਦਿਯੋਗੀ ਨੇ ਆਪਣਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਗਿਆਨ ਮਹਾਨ ਸਪਤਰਿਸ਼ੀ ਜਾਂ "ਸੱਤ ਰਿਸ਼ੀ" ਵਿੱਚ ਡੋਲ੍ਹਿਆ ਸੀ। ਰਿਸ਼ੀ ਇਸ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਯੋਗ ਵਿਗਿਆਨ ਨੂੰ ਏਸ਼ੀਆ, ਮੱਧ ਪੂਰਬ, ਉੱਤਰੀ ਅਫਰੀਕਾ ਅਤੇ ਦੱਖਣੀ ਅਮਰੀਕਾ ਸਮੇਤ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹਿੱਸਿਆਂ ਵਿੱਚ ਲੈ ਗਏ। ਦਿਲਚਸਪ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ, ਅਜੋਕੇ ਖੋਜਕਰਤਾਵਾਂ ਨੇ ਦੁਨੀਆ ਭਰ ਦੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸਮਾਜਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਮਿਲੀਆਂ ਨਜ਼ਦੀਕੀ ਸਮਾਨਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਨੋਟ ਕੀਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹੈਰਾਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ, ਇਹ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਹੀ ਸੀ ਕਿ ਯੋਗਿਕ ਢਾਂਚੇ ਨੇ ਇਸਦੇ ਸੰਪੂਰਨ ਪ੍ਰਗਟਾਵੇ ਦੀ ਖੋਜ ਕੀਤੀ। ਅਗਸਤਯ, ਸਪਤਰਿਸ਼ੀ ਜਿਸ ਨੇ ਭਾਰਤੀ ਉਪ-ਮਹਾਂਦੀਪ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਕੀਤੀ, ਨੇ ਇਸ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਨੂੰ ਇੱਕ ਮੁੱਖ ਯੋਗਿਕ ਜੀਵਨ ਸ਼ੈਲੀ ਦੇ ਦੁਆਲੇ ਬਣਾਇਆ।

ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ :ਵਿਸ਼ਵੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ

~ ਡਾ. ਸਿਮਰਨ ਸੋਠੀ, ਸਹਾਇਕ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ

ਇਸ ਤੱਥ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਕੇਵਲ ਇਕ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ, ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ, ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਸਖ਼ਸ਼ੀਅਤ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਕ ਸੰਪੂਰਨ ਸੰਸਥਾ ਵਜੋਂ ਵਿਸ਼ਵ ਅੰਦਰ ਜਾਣੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਹਰ ਦੌਰ ਅੰਦਰ ਇਹ ਆਪਣੀ ਵਿਰਾਸਤ/ਵਿਰਸੇ ਵੱਲ ਪਿੱਛਲ-ਝਾਤ ਮਾਰਨ, ਉਸਨੂੰ ਚਿੰਤਨ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਵਿਚ ਪਾਉਣ ਅਤੇ ਫਿਰ ਉਸੇ ਵਿਚੋਂ ਹੀ, ਬਲਕਿ ਉਸਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਹੀ ਪੁਨਰ- ਸਿਰਜਣਾ ਕਰਨ ਦੇ ਮਸਲੇ ਨਾਲ ਨਿਰੰਤਰ ਜੂਝਦੀ ਰਹੀ ਹੈ।ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਪਿੱਛੇ ਜੋ ਵਿਚਾਰ ਕਾਰਜਸ਼ੀਲ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਸਮਾਜ/ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸਵੈ-ਪਛਾਣ ਦੇ ਮੂਲ ਆਧਾਰ ਵਿਰਾਸਤ ਅੰਦਰ ਹੀ ਗਹਿਰੇ ਛੁਪੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਰਤਮਾਨ ਦੀ ਧਰਾਤਲ 'ਤੇ ਖੜੋ ਕੇ ਗਹੁ ਨਾਲ ਵੇਖਣਾ/ ਵਿਚਾਰਨਾ ਅਤੇ ਨਾਲ ਲੈ ਕੇ ਚੱਲਣਾ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮੰਗ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਸ਼ਰਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਨਾ ਤਾਂ ਵਰਤਮਾਨ ਤੋਂ ਮੂੰਹ ਮੋੜ ਕੇ ਕੇਵਲ ਅਤੇ ਕੇਵਲ ਅਤੀਤ ਦੀ ਸਿਮਰਤੀ ਅੰਦਰ ਹੀ ਵਾਸ ਕਰ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਆਪਣੇ ਅਤੀਤ / ਵਿਰਸੇ ਨੂੰ ਅੱਖੋਂ ਪਰੋਖੇ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ।

ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਅੰਦਰ ਜਦੋਂ ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚੋਂ ਗੁਜ਼ਰ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਿੱਥੇ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਨੂੰ ਇਕ ਪਿੰਡ ਵਜੋਂ ਜਾਂ ਇੰਜ ਕਹਿ ਲਵੋ ਕਿ ਇਕ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਜੋਂ ਚਿਤਵਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਜਿੱਥੇ ਵੱਖੋ - ਵੱਖਰੇ ਸਮਾਜਾਂ ਸਭਿਆਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡੇ ਕੈਨਵਸ ਉੱਪਰ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਰੂਬਰੂ ਕਰਨ ਦੀ ਬਾਤ ਪਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇਸ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾਈ ਅੰਤਰ-ਵਿਰੋਧ ਹੋਣੇ ਸੁਭਾਵਿਕ ਹਨ। ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਤਕਨੀਕ ਅਤੇ ਸੰਚਾਰ ਮਾਧਿਅਮਾਂ ਦੀ ਕੁੜਿੱਕੀ ਵਿਚ ਜਦੋਂ ਹਰ ਮਨੁੱਖ ਬੁਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਫਸ ਚੁੱਕਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਸਥਿਤੀ ਕਿਸੇ ਜਾਨਲੇਵਾ ਵਿਸਫੋਟ ਤੋਂ ਰਤਾ ਵੀ ਘੱਟ ਨਹੀਂ। ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਮੁਲਕਾਂ ਦੁਆਰਾ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਅੰਦਰ ਸਮਾਨਤਾ ਦੇ ਰਾਗ ਹੇਠ ਜੋ ਪ੍ਰਪੰਚ ਰਚਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਹ ਸਭਿਆਚਾਰ, ਆਰਥਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਪੱਧਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਗਿਆਨ ਖੇਤਰ ਨੂੰ ਵੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ।ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਤਬਾਹਕੁੰਨ ਸਥਿਤੀ ਅੰਦਰ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ / ਵਿਚਾਰ ਸਮੁੱਚੀ ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਨੂੰ ਇਕ ਸੋਧ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।

ਨਾਨਕ ਦੀ ਬਾਣੀ ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਨਮੁਖ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਪ੍ਰਵਚਨ ਸਿਰਜਦੀ ਹੈ।ਫਿਰ ਚਾਹੇ ਉਹ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਵਿਚ ਹੋਵੇ, ਦਮਨ ਤੇ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਹੋਵੇ, ਬ੍ਰਾਹਮਣਵਾਦੀ ਕਰਮਕਾਂਡ, ਸਮਾਜਿਕ ਦਰਜੇਬੰਦੀ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਹੋਵੇ। ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਵੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਅੱਜ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਅੰਦਰ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਕਾਰਨ ਇਹ ਵੀ ਹੈ ਕਿ ਆਪਨੇ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਤਮਾਮ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਹਰ ਸਮੇਂ / ਸਥਾਨ ਅਤੇ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਜਵਾਬ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਨਾਲ ਇਕ ਸਾਂਝ ਪਾਈ। ਜਿਸ ਅੰਦਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਮਾਜਿਕ ਦਰਜੇਬੰਦੀ ਨੂੰ ਨਕਾਰਦੇ ਹੋਏ ਦੱਬੇ-ਕੁਚਲੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿਚ ਸਿਰਫ਼ ਆਵਾਜ਼ ਹੀ ਨਹੀਂ ਉਠਾਈ ਸਗੋਂ ਆਪ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੰਗ ਜਾ ਖੜੇ ਹੋਏ। ਨਾਨਕ ਜਦੋਂ ਕੁਲੀਨ / ਹਾਕਮ ਵਰਗ ਨਾਲੋਂ ਇਕ ਵਿੱਚ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਦਿਆਂ ਮਾਨਵੀ ਹੱਕਾਂ ਦਾ ਨਾਹਰਾ ਲਾਉਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਇਹ ਇਕ ਸਮਾਜਿਕ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਹੋ ਨਿਬੜਦਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਸੋਚਣ ਵਾਲੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਅਜੋਕੇ ਵਿਸ਼ਵੀ ਸੰਦਰਭ ਅੰਦਰ ਵੀ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਪ੍ਰਤੱਖ ਜਾਂ ਪਰੋਖ ਰੂਪ ਵਿਚ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਾਰੇ ਵਿਤਕਰਿਆਂ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠ ਕੇ ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਨੂੰ ਇਕ ਨੂਰ ਤੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਈ ਮੰਨਿਆ। ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਮਨੁੱਖੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਅਹਿਮ ਧਿਰ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਜਦੋਂ ਨਰਕ ਦਾ ਦੁਆਰ, ਪਸ਼ੂਆਂ ਸਮਾਨ, ਬਘਿਆੜਨ, ਭੰਡ ਕਹਿ ਕੇ ਤ੍ਰਿਸਕਾਰਿਆ ਗਿਆ ਤਾਂ ਉਸ ਨਾਰੀ ਵਿਰੋਧੀ ਮਾਹੌਲ ਅੰਦਰ ਉਸਨੂੰ ਮਾਨਵੀ ਹੱਕ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿਵਾਇਆ ਸਗੋਂ ਮਰਦ ਦੀ ਪੂਰਕ ਮੰਨਦੇ ਹੋਏ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕੀਤਾ। ਜਿਵੇਂ

"ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣੁ ਵੀਆਹੁ॥
ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਭੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ॥
ਭੰਡੁ ਮੁਆ ਭੰਡੁ ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨੁ॥
ਸੋ ਕਿਉ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨੁ॥

ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਅੰਦਰ ਹਾਸ਼ੀਏ 'ਤੇ ਪਈ ਔਰਤ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਮਰਦ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਖੜੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਚਾਹੇ ਉਹ ਖੇਤਰ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ, ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ, ਖੇਡਾਂ ਦਾ ਜਾਂ ਫਿਰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦਾ ਹੀ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਵੇ। ਭਾਵੇਂ ਅੱਜ ਵੀ ਕਿਤੇ ਕਿਤੇ ਇਹ ਵਿਤਕਰਾ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ । ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਅੰਦਰ 'ਬੇਟੀ ਬਚਾਓ ਬੇਟੀ ਪੜਾਓ' ਦਾ ਨਾਹਰਾ ਨਾਨਕ ਦੇ ਸਾਢੇ ਪੰਜ ਸੌ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਉਚਾਰੇ ਪ੍ਰਵਚਨ ਤੋਂ ਸੇਧ ਲੈਂਦਾ ਹੋਇਆ ਕਾਰਜਸ਼ੀਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।ਇਸੇ ਕਾਰਨ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਪੂਰਾ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਪੱਧਰ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਜਾ ਕੇ, ਨਿੱਜ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠ ਕੇ ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਦੀ ਮੁਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਵਚਨ ਉਸਾਰਦਾ ਹੋਇਆ ਸਭਨਾਂ ਅੰਦਰ ਵਾਸ ਕਰਦੀ ਇਕ ਜੋਤ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਆਪਜੀ ਨੇ ਸਾਰੇ ਧਰਮਾਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰਦਿਆਂ ਆਪਣੀ ਬਾਣੀ ਵਿਚ ਥਾਂ-ਥਾਂ ਤੇ ਹਿੰਦੂ ਨੂੰ 'ਚੰਗਾ ਹਿੰਦੂ" ਅਤੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਨੂੰ 'ਚੰਗਾ ਮੁਸਲਮਾਨ' ਬਣਨ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ। ਅੱਜ ਜਦੋਂ ਵਿਸ਼ਵੀ ਪੱਧਰ ਉੱਪਰ ਅਣਗਿਣਤ ਦੁਨਿਆਵੀ ਮਸਲਿਆਂ ਨੂੰ ਨਜਿੱਠਣ ਵਜੋਂ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੰਘ ਵਿਚ ਆਪਸੀ ਸਹਿਮਤੀ / ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਭਲੇ ਦੀ ਗੱਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇਸਦੀ ਕਾਰਜ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨਾਨਕ ਦੇ ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਦੇ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਦੀ ਅੱਗੇ ਵਧਦੀ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਅਤੇ ਪਾਕਿਸਤਾਨ, ਦੋਵਾਂ ਮੁਲਕਾਂ ਦੇ ਆਪਸੀ ਮਤਭੇਦ ਭਾਵੇਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਣ ਪਰ ਗੱਲ ਜਦੋਂ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਲਾਂਘੇ ਦੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ, ਗੱਲ ਜਦੋਂ ਹਿੰਦੂਆਂ ਦੇ ਗੁਰੂ ਅਤੇ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਦੇ ਪੀਰ ਕਹੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਾਰਿਸਾਂ ਦੀ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰ ਦੀ ਜਨਮ-ਭੋਂਇ ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਰਧਾ ਦੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇੱਥੇ ਦੋਵੇਂ ਮੁਲਕ ਸਤਹੀ / ਧਰਾਤਲੀ ਮਤਭੇਦ ਮਨਫ਼ੀ ਕਰਕੇ

ਭਾਈਚਾਰਕ ਸਾਂਝ ਸਦਕਾ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਉੱਪਰ ਸਹਿਮਤੀ ਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦੇ ਹਨ।ਇਹੀ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ ਦਾ ਜਿਉਂਦਾ ਜਾਗਦਾ ਸਬੂਤ ਹੈ।ਜਿਸ ਆਦਰਸ਼ਕ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਆਦਰਸ਼ਕ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਬੀੜਾ ਆਪਜੀ ਵਲੋਂ ਉਠਾਇਆ ਗਿਆ, ਉਸ ਅੰਦਰ ਸੱਚੀ ਸੁੱਚੀ 'ਕਿਰਤ' ਅਤੇ 'ਕਿਰਤੀ' ਵਿਚ ਸਾਂਝ ਪੈਦਾ ਕਰਕੇ ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਆਤਮਿਕ ਦੋਹਾਂ ਖੇਤਰਾਂ ਨੂੰ ਮਹਾਨਤਾ ਬਖ਼ਸ਼ੀ। ਇਸੇ ਕਾਰਨ ਝੂਠ, ਫ਼ਰੇਬ, ਧੋਖੇ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਕਮਾਈ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਮੁਰਦਾਰ ਖਾਣ ਵਾਲੇ ਨਾਲ ਕੀਤੀ। "ਕੂੜ ਬੋਲਿ ਮੁਰਦਾਰ ਖਾਇ" ਅਤੇ "ਹੱਕ ਪਰਾਇਆ ਨਾਨਕਾ, ਉਸ ਸੂਅਰ ਉਸ ਗਾਇ' ਦਾ ਪ੍ਰਵਚਨ ਉਸਾਰਦੇ ਹੋਏ ਆਪ ਜੋਗੀਆਂ, ਸੰਨਿਆਸੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਕਿਰਤੀ ਬਣਨ ਅਤੇ ਸਾਫ਼ ਨੀਅਤ ਨਾਲ ਦੂਜਿਆਂ ਲਈ ਕੁਝ ਕਰ ਸਕਣ ਵਾਲੇ ਪੂਰਨ ਮਨੁੱਖ ਬਣਨ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ। ਵਿਸ਼ਵੀ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ ਜਦੋਂ ਕਿਰਤ ਕਰਨ, ਵੰਡ ਛਕਣ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਖਾਸ ਕਰ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਈਚਾਰੇ ਅੰਦਰ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ ਦਾ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸਾਫ਼ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਵਿਸ਼ਵੀ ਕੈਨਵਸ ਉੱਪਰ ਮਨੁੱਖ ਜਦੋਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਦਾ ਸਰਵਉੱਚ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸਮਝ ਚੁੱਕਾ ਹੈ ਤਾਂ ਕੁਦਰਤ ਅਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਸਰੋਤਾਂ ਦਾ ਨਿਰੰਤਰ ਹੋ ਰਿਹਾ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਇਕ ਚਿੰਤਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਤਰੱਕੀ ਅਤੇ ਵਿਉਪਾਰ ਦੇ ਗ਼ਲਬੇ ਹੇਠ ਵਾਤਾਵਰਣ ਦਾ ਸੰਕਟ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਵਿਚਲੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਨੂੰ ਪੁਨਰ-ਵਿਚਾਰਨ ਵੱਲ ਸੰਕੇਤ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਧਰਤੀ ਦੇ ਸੁਹੱਪਣ ਪਿੱਛੇ ਛੁਪੇ ਪਾਣੀ ਦੇ ਰਾਜ਼ ਨੂੰ ਜਿੱਥੇ ਹਰ ਧਰਮ ਅੰਦਰ ਸਤਿਕਾਰਿਆ ਗਿਆ, ਪੂਜਿਆ ਗਿਆ। ਉੱਥੇ ਹੀ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਨੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਪਿਤਾ ਦਾ ਦਰਜ਼ਾ, ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਮਾਂ ਦਾ ਦਰਜ਼ਾ ਅਤੇ ਪਵਣੁ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਦਾ ਦਰਜ਼ਾ ਦੇ ਕੇ ਸਨਮਾਨ ਦਿੱਤਾ।ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਵਿਸ਼ਵੀ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੀ ਉਸ ਵੇਲੇ ਸਖ਼ਤ ਲੋੜ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਤਕਨੀਕ ਅਤੇ ਪਦਾਰਥਵਾਦ ਰੁਚੀਆਂ ਵਿਚ ਗ੍ਰਸਿਆ ਮਨੁੱਖ ਇਕੱਲਤਾ, ਮਾਨਸਿਕ ਤਣਾਅ, ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਲਿਪਟਿਆ ਉਹ ਸੰਵਾਦ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਤੋਂ ਦੂਰੀ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ।ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਮਕਾਨਕੀ ਵਾਤਾਵਰਣ ਅੰਦਰ ਮਨੁੱਖੀ ਜਾਤੀ ਹੋਲੀ-ਹੋਲੀ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਦੇ ਦਾਇਰੇ ਉਲੰਘਦੀ ਹੋਈ ਇਕ ਗੁੰਮਨਾਮ ਹਨੇਰੇ ਅੰਦਰ ਧੱਸ ਰਹੀ ਹੈ। ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਨੇ ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜ ਅੰਦਰ ਸੰਵਾਦ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਉੱਪਰ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦਿਆਂ ਹਰ ਸਥਿਤੀ, ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨਾਲ ਇਕ ਤਰਕ ਅਧਾਰਿਤ ਸੰਵਾਦ ਰਚਾਇਆ। ਆਪ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ :-

"ਜਬ ਲਗੁ ਦੁਨੀਆ ਰਹੀਐ ਨਾਨਕ
ਕਿਛੁ ਸੁਣੀਐ ਕਿਛੁ ਕਹੀਏ।

ਸੰਵਾਦ ਅੰਦਰ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਿਚ ਵੱਖਰਤਾਵਾਂ ਹੁੰਦੇ ਵਿਰੋਧੀ ਧਿਰ ਜਦੋਂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਰੂਬਰੂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਆਪ ਬੜੀ ਹਲੀਮੀ, ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਗਿਆਨ ਤੋਂ ਵਿਹੂਣੀਆਂ, ਹੰਕਾਰ ਨਾਲ ਭਰੀਆਂ ਆਤਮਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸੱਚੇ ਗਿਆਨ ਦੀ ਚਿਣਗ ਲਗਾਉਂਦੇ ਹਨ।'ਸੰਵਾਦ ਦੀ ਰੀਤ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮਿਠਤੁ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਮਾਨਵ ਤੋਂ ਪਰਮ ਮਨੁੱਖ ਬਣਨ ਤੱਕ ਦੇ ਸਫ਼ਰ ਉੱਪਰ ਚੱਲਣ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਵੀ ਦਿੱਤਾ । ਅੱਜ ਵਿਸ਼ਵੀ ਵਰਤਾਰੇ ਅੰਦਰ ਅਸੀਂ ਸੰਵਾਦ ਤੋਂ ਵਿਵਾਦ ਵਿਚ ਘਿਰ ਗਏ ਹਾਂ। ਜਦੋਂ ਸਵੈ- ਕੇਂਦਰਿਤ ਮਨੁੱਖ ਦੂਜੀ ਧਿਰ ਨੂੰ ਸੁਨਣਾ ਹੀ ਨਹੀ ਚਾਹੁੰਦਾ, ਉੱਥੇ ਪਿਆਰ, ਆਜ਼ਿਜ਼ੀ, ਅਪਣੱਤ ਉਹ ਗੁਣ ਹਨ ਜੋ ਹੰਕਾਰ, ਅਨਿਆਂ ਦਾ ਨਾਸ਼ ਕਰਦੇ ਬੇਝਿਜਕ ਆਪਣੀ ਗੱਲ ਕਹਿਣ ਅਤੇ ਮਨਵਾਉਣ ਦੀ ਤਾਕਤ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਮਿਥਿਹਾਸਕ ਹਵਾਲੇ ਦਿੰਦਿਆਂ ਆਪ ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ ਜਿੱਥੇ ਚਲਾਇਮਾਨ ਆਖਦੇ ਹਨ ਉੱਥੇ ਹੀ ਬਲਸ਼ਾਲੀ, ਧਨਵਾਨ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਵੀ ਹੋਰਨਾਂ ਵਰਗੇ ਅੰਤ ਦੀ ਗੱਲ ਆਖਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਨੈਤਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਨੂੰ ਤਿਆਗ ਕੇ ਮਿਠਤੁ ਨੂੰ ਅਪਣਾਉਣ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

ਸੋ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ / ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਅਜੋਕੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਆਪੀ ਸੰਦਰਭਾਂ ਵਿਚ ਰੱਖਕੇ ਵੇਖਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਨਾਨਕ ਇਕ ਯੁਗ ਪੁਰਸ਼, ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ, ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਬੇਹੱਦ ਸਾਹਸੀ, ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ, ਇਕ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਸੰਸਥਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।ਅੱਜ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਅਤੇ ਬਾਜ਼ਾਰੀਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨੇ ਅਜਿਹੀ ਸੋਚ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਜੋ ਬਿਹਤਰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜੀਊਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਰੱਖਣ ਵਾਲੇ ਸੰਜੀਦਾ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਦੇ ਵਿਚ ਗਹਿਰੀ ਖਾਈ ਪੈਦਾ ਕਰਕੇ ਪੂੰਜੀ ਅਧਾਰਿਤ ਅਮਾਨਵੀ ਦਿਖਾਵੇ ਦੇ ਦੁਆਰਾ ਇਕ ਸੁਪਨਮਈ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਨਿਰਮਾਣ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਸਮੇਂ ਅੰਦਰ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਸੰਪੂਰਨ ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਲਈ ਰਾਹ ਦਸੇਰਾ ਬਣ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਅਮਨੁੱਖੀ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਸਾਮਰਾਜਵਾਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਸਾਢੇ ਪੰਜ ਸੌ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਨੇ 'ਪਤਿ ਵਿਣੁ ਪੂਜਾ ਸਤੁ ਵਿਣੁ ਸੰਜਮ ਅਤੇ 'ਜੇ ਜੀਵੈ ਪਤਿ ਲਥੀ ਜਾਏ, ਸਭ ਹਰਾਮ ਜੇਤਾ ਛਿਡੁ ਖਾਏ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਵੀ ਦ੍ਰਿੜ ਕਰਵਾਇਆ। ਇਸੇ ਕਾਰਨ ਨਾਨਕ ਦਾ ਦਰਸ਼ਨ ਵੀ ਨਾਨਕ ਵਾਂਗ ਅਕਾਲ ਹੈ ਜੋ ਹਰ ਸਮੇਂ, ਸਥਾਨ ਅਤੇ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕ ਹੈ।

ਮਨ ਤੂ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹੈ
ਆਪਣਾ ਮੂਲ ਪਛਾਣ॥

ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਇਕ ਅਜਿਹੇ ਵਿਸ਼ਵ - ਵਿਆਪੀ ਵਰਤਾਰੇ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਵਾਉਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਮਾਨਵਤਾਵਾਦ, ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ, ਨਿਆਂ, ਮਿਠਾਸ, ਨਿਮਰਤਾ, ਬਰਾਬਰੀ ਅਤੇ ਸਰਵਉੱਚ ਮਾਨਵੀ ਗੁਣਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਜਜ਼ਬ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨਾਲ ਸੰਵਾਦ ਰਚਾਉਣ ਅਤੇ ਸਚਿਆਰਾ ਬਣਨ ਦਾ ਰਾਹ ਦੱਸਦਾ ਹੈ। ਸੋ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਅੰਦਰ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਜਿੱਥੇ ਵਿਸ਼ਵ ਭਾਈਚਾਰੇ ਦੀ ਬਾਤ ਪਾਉਂਦੀ ਹੈ ਉੱਥੇ ਹੀ ਬੇਹੱਦ ਸਾਰਥਕ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕ ਵੀ ਹੋ ਨਿਬੜਦੀ ਹੈ।

Illustration by Dhananjay, B.A. (Hons.) English 1st Year

RAMANUJAN COLLEGE
CULTURAL COMMITTEE
PRESENTS

PERFORMING & FINE ARTS

Welcome to the vibrant and diverse cultural myriad of Ramanujan College, where creativity thrives and talent shines! At the core of this dynamic atmosphere, you'll discover the Cultural Committee-a vital part of our college community. With a deep passion for nurturing artistic expression and organising exceptional events, the Cultural Committee collaborates closely with nine outstanding performing arts societies. Together, they strive for excellence, celebrating the sheer beauty of creative expression.

CULTURAL COMMITTEE
RAMANUJAN COLLEGE

At Ramanujan College, the performance arts steal the spotlight, captivating audiences with their immense talent and passion. From mesmerizing music to captivating theatre, dynamic dance, vibrant visual arts, and rhythmic percussion, our college is a thriving hub of artistic expression. The performing arts societies unite to create a spirited tapestry of creativity, providing students a platform to showcase their skills and explore their interests. With diverse talents and unwavering dedication, they infuse our college with vibrancy, cultural richness, and artistic brilliance.

DANCE

SPECTACULAR PERFORMANCES ON STAGE

THIS YEAR'S PERFORMANCES

LAYATAAL

The Classical Dance Society

Layataal, the Classical Dance Society of Ramanujan College, University of Delhi aims to connect the students with Indian culture through the art of dance. Established in 2020, Layataal embraces various Indian dance forms like Kathak, Bharatnatyam, and Odissi, offering an exciting platform for learning and personal growth. With their creative performances and rigorous training, Layataal empowers students to express themselves through the enchanting world of Indian classical dance, fostering a deep appreciation for our rich cultural heritage.

Layataal has been making waves in the cultural scene, securing Second Position in the competitions held at both, Shaheed Rajguru College and Aryabhatta College. They also showcased their skills at 'Symphony'23' hosted by Janki Devi Memorial College and 'Yugal'23' organised by B.R. Ambedkar College. The society also left an indelible mark with their captivating performances at cultural events such as 'JOSH'22', NAAC event 2022, 'Onella 2.0', and 'Shivranjini Open Stage'. With their graceful movements and expressive storytelling, Layataal has established themselves as a force to be reckoned with in the world of classical dance.

Dance Nucleic Acid

The Western Dance Society

Dance Nucleic Acid (DNA), the Western Dance Society of Ramanujan College is a dynamic collective that celebrates and enhances the art of dancing. With a fusion of various western dance forms, DNA showcases a wide range of styles including hip-hop, contemporary, jazz and freestyle.

Through rigorous training, creative choreography, and unwavering dedication, DNA never fails to mesmerise the audience with its electrifying performances. Their unique blend of cultural fusion and artistic expression leaves an indelible mark in the world of Western dance.

The dancers of Dance Nucleic Acid (DNA), have achieved remarkable success in various prestigious competitions.

DNA secured Second Position in the dance competitions held at Amity University, Gurgaon as well as Shaheed Bhagat Singh College.

Adding to their accolades, DNA achieved Third Position at the IIT Kanpur Nationals, competing against some of the best dance teams across the country.

THE BHANGRA REGIMENT

THE BHANGRA SOCIETY OF RAMANUJAN COLLEGE

Established in January 2016, the Folk Dance Society of Ramanujan College stands as a testament to the rich cultural heritage and diversity of our institution. Bhangra takes the centre stage, radiating enthusiasm and power as a dynamic expression of folk dance and music. Bhangra embodies the spirit of the lively and spirited people, with its energetic movements and pulsating beats. The society embraces this exuberant dance form, celebrating its traditions and spreading joy through captivating performances. With every step and every beat, the Folk Dance Society of Ramanujan College pays homage to the cultural roots of Bhangra, enchanting audiences and fostering a deeper appreciation for folk dance.

Under the guidance of Choreographer Mr. Harmeet Singh, Dhol master Mr. Amit Vaid, and Convenor Dr. Kanwal Jeet Singh, the Folk Dance Society of Ramanujan College has delivered mesmerising performances at various esteemed institutions such as Aurobindo College, Vivekananda College, PGDAV College, Miranda House, Mata Sundari College, Dyal Singh College, Shri Gurunanak Dev College, Shri Guru Teg Bahadur College, Amity University, Indraprastha College for Women, and Delhi Technological University. Their energetic routines depict the essence of Punjabi culture, leaving a long-lasting impact on the audience.

EVENTS

DANCE PERFORMANCES AND EVENTS

JOSH x SEQUOIA: A Rhythmic Delight at Ramanujan College

The cultural fest 'JOSH x SEQUOIA' at Ramanujan College witnessed multiple dance performances. The 'Hustle' dance competition, hosted by DNA, showcased the brilliance of the participating colleges and hence, the event was filled with energetic performances. The group '3.14' from Vivekananda Institute of Professional Studies secured the First Position. The DJ evening brought the crowd together for a fun-filled dance extravaganza, concluding the fest on an energetic note.

Onella-Diwali Mela: A Melodic and Joyful Celebration

The 'Onella-Diwali Mela' at Ramanujan College was filled with music, dance, and merriment. The group dance by DNA and various other solo performances kept the crowd engaged and entertained. The event also featured unique activities, for instance, the Musical Chair in Bhangra style, adding to the festive atmosphere. With the successful conclusion of 'Onella', Ramanujan College experienced a resounding celebration of Diwali.

Vasudhaiva Kutumbakam: A Celebration of Cultural Diversity

The cultural event 'Vasudhaiva Kutumbakam' at Ramanujan College, in collaboration with The Bahai House of Worship, featured captivating dance performances. Layataal, the Classical Dance Society of Ramanujan College, presented a graceful classical dance performance, mesmerising the foreign attendees. The event also showcased various cultural performances, including Bharatnatyam, Kathak, Sarod solos, and concluded with an energetic performance by The Bhangra Regiment, The Bhangra Society of Ramanujan College.

Ramanujan College NAAC Visit

During the NAAC visit, Ramanujan College showcased the exceptional talents of its dance societies. Layataal presented a graceful fusion dance performance to the tunes of 'Shree Ganesh Deemahi' and 'Masakali', leaving the audience spellbound. The DNA Western group also impressed the attendees with their vibrant dance moves. NAAC representatives praised the societies for their outstanding performances, adding to the college's efforts to achieve an A++ grade.

Jhankaar: A Cultural Extravaganza at Ramanujan College

Jhankaar, the cultural event at Ramanujan College witnessed enthusiastic dance performances by its varying dance societies. Layataal's graceful classical fusion dance and The Bhangra Regiment's energetic Bhangra, Luddi, Dhamaal, and Jhoomar performances stole the show. The event also featured mesmerising solo performances by Shreya, Ajitanshu, and Bhavna, portraying exceptional talents. The event was a remarkable success, adding vibrant energy to the college campus.

MUSIC

THE WORLD OF MUSIC AT
RAMANUJAN COLLEGE

SHIVRANJANI

SHIVRANJANI: THE MUSIC SOCIETY OF RAMANUJAN COLLEGE

Stepping into the captivating realm of Shivranjani, the Music Society of our college, enchanting melodies take the centre stage. Renowned as one of the most engaging societies in Ramanujan College, Shivranjani leaves a lasting impression on every RCite. Their mesmerising performances, witnessed at both intra and inter-college levels, create ripples of sound that resonate within the hearts of their audiences. With their passion and talent, Shivranjani captivates and inspires, infusing every musical journey with pure magic.

Shivranjani enjoyed a remarkable year while successfully conducting various events including 'Open Stage', 'Gaane Bhi Do Yaaro' and 'Khamaj' in the year of 2023. They displayed their musical prowess and emerged victorious at various competitions, securing top positions at Pearl Academy, AIIMS, NSUT, IIT BHU, and more. Shivranjani's performances left a lasting impression by securing the Second Position at Shyam Lal College's 'Battle of Bands'. Through their skills and dedication, Shivranjani continues to make waves, leaving their mark in the world of music.

EVENTS

Jhankar: A Musical Extravaganza at Ramanujan College

The cultural event of Ramanujan College, 'Jhankar', captivated the audience with an incredible display of talent. The renowned band, **Havas Guruhi**, mesmerised the crowd with their unique renditions of popular Bollywood songs, leaving a lasting impact. The event received extensive media coverage with Focus News acting as the official media partner, highlighting the success of the event.

Sham-E-Mosiqi: A Harmonious Celebration of Music

As part of the ongoing Centenary Celebrations of the University of Delhi, Ramanujan College collaborated with the international musical group, **Havas Guruhi** to organise 'Sham-E-Mosiqi'. The event, held at Vice Regal Lodge, University of Delhi, presented a fusion of Indian and Uzbek music. The exuberant performance of the band was witnessed by the audience of students from all the colleges of the University of Delhi.

Shivranjani's Splendid Performance during NAAC Visit

During the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) visit to Ramanujan College, Shivranjani, the Music society of Ramanujan College delivered a melodious performance. The society's rendition of Ganesh Stuti, based on Raag Kedar on Tabla, resonated with the audience. The performance was well received and added a cultural touch to the event.

Alumni Meet: Shivranjani's Melodic Reunion

Shivranjani created a soulful ambiance during the Alumni Meet. The Saraswati Vandana performance by the members of the society evoked a sense of nostalgia and cultural unity. Throughout the day, Shivranjani presented various group as well as solo acts.

Onella: A Vibrant Diwali Mela Filled with Musical Delights

'Onella', the Diwali mela brought a delightful combination of music and festivities. Various performers took the stage, captivating the crowd with their musical talents. From bhajans to Ganesh Vandana, the event showcased the versatility of the artists. The group and solo performances by Shivranjani left the audience awestruck throughout the event.

JOSH x SEQUOIA: Ramanujan College's Cultural Fest Unleashed Musical Talents

Ramanujan College's annual cultural fest, 'JOSH x SEQUOIA', witnessed a multitude of musical performances. The fest began with the enchanting Sarasvati Vandana by Shivranjani. The event also featured a 'Battle of Bands', where various bands exhibited their musical prowess. The highlight of the fest was the special performance by renowned Bollywood singer, **Abhijeet Srivastav**, adding a grand finale to the three-day extravaganza.

Vasudhaiva Kutumbakam: An Enriching Celebration of Cultural Diversity

The collaboration between Ramanujan College and The Bahai House of Worship led to the cultural event named 'Vasudhaiva Kutumbakam'. The event commenced with a soulful Vandana by Shivranjani, followed by mesmerising performances by the various colleges of the University of Delhi. Classical music, solo acts, and a captivating dance performance by Layataal enchanted the attendees. The event successfully emphasised the power of cultural diversity and the unity of humanity.

JAZBA: THE DRAMATICS SOCIETY

JAZBA, The Dramatics Society of the University of Delhi, has always garnered acclaim for its stage and street plays. Each year, JAZBA prepares a multitude of productions which are performed at stage shows and competitions nationwide. With their commitment to excellence, JAZBA continues to push the boundaries of artistic expression, firmly holding their place within the theatre community.

JAZBA has participated in a number of events, such as the 'Jhalak Competition' at Jesus and Mary College, for instance. Their stage production 'Dakghar' was showcased at the 'Jashn-E-Theatre - Annual Theatre Fest' of Deshbandu College. They also excelled in the 'AD-MAD' competitions at PGDAV College and secured notable positions.

JAZBA's achievements include winning Second and Third Positions at the 'AD-MAD' competition held at Dyal Singh College and securing the Third Position in the Improv Competition at Sri Venkateshwara College.

The society continues to demonstrate dedication and talent while conveying powerful messages through their performances.

Illustration by Rupita Gupta, B.Com (Hons), Third Year

Illustration by Samar Khan,
B.A. (Hons) Philosophy, Second Year

Illustration by Harishreyas V,
B.Com (Hons), Second Year

FINE ARTS

Let us delve into the captivating world of artistic expression, showcasing the exceptional talents and masterpieces crafted by the artistic minds of Ramanujan College. From exquisite paintings and sculptures to awe-inspiring photography and digital art, this section explores the profound impact and limitless possibilities of fine arts within our college community.

Illustration by Sourabh Barala,
B.Sc.(H) Computer Science, Third year

Illustration by Reena Meena,
B.A (Hons) English, Third Year

BRUSHSTROKES

The Fine Arts Society

Illustration by Bipasha Ghosh, Eco. (Hons), Third Year

Illustration by Tannu Pathak, B.Com(Hons), Third Year

Illustration by Saffiya, B.Com (Hons), Third Year

Brushstrokes, The Art and Craft Society of Ramanujan College, nurtures budding artists by providing the space and necessary resources to explore diverse art media. From painting and sketching to pottery and sculpture, this diverse society fosters artistic growth through workshops, exhibitions, and interactive sessions. With access to essential equipments, Brushstrokes empowers students to unleash their creativity and develop their unique artistic voices. It stands out as a community that celebrates the power of art and promotes a love for creativity that knows no bounds.

Brushstrokes has organised various activities including workshops on refurbishing old articles, watercolour painting, sketching, calligraphy along with several painting competitions and sketchwalks. The society also conducted a special lecture session on 'The History of Western Art' providing students with the opportunity to learn various art forms and techniques to develop their artistic skills.

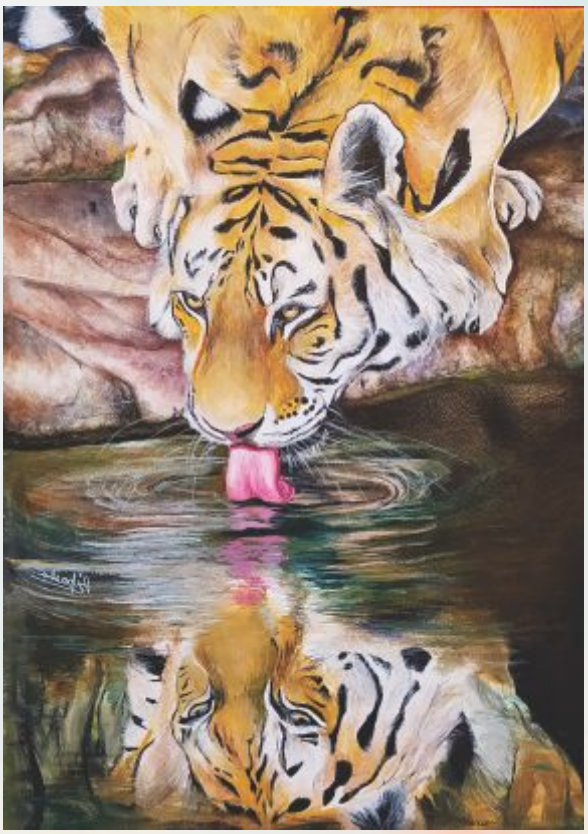

Illustration by Bipasha Ghosh, Eco. (Hons), Third Year

FIRST CUT

THE FILMMAKING AND PHOTOGRAPHY SOCIETY

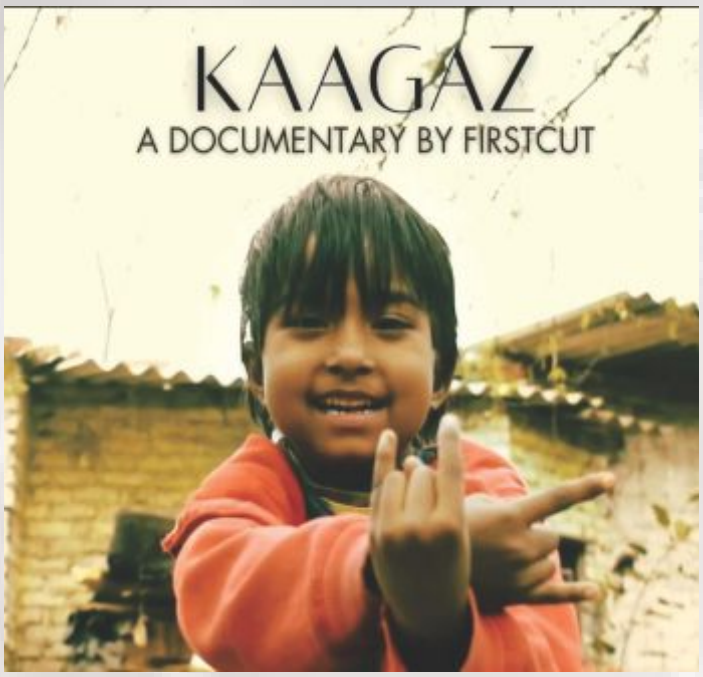

FirstCut, the Filmmaking and Photography Society of Ramanujan College is a collaboration of film and photography enthusiasts who have constantly put in diligent efforts to earn the society the repuation it holds at collegiate level; being one of the first and finest filmmaking societies in the Student Filmmaking and Photography Community of the University of Delhi.

FirstCut functions by organising regular photowalks, workshops, practice sessions and general meetings to ensure that the members are able to develop their skills to the highest possible level with the resources available as well as gain a deeper appreciation for these art forms.

After a three-year long hiatus caused by the Covid pandemic and its restrictions, FirstCut organised its annual film and photography festival, 'CINETURION' - wherein 25+ colleges from across the University of Delhi circuit participated in competitions like 'Lensation', 'Cut Frame' and 'Narrative'. The competitions were judged by esteemed artists of the fields. The event saw tremedous success.

ACHIEVEMENTS

During the 2022-2023 session, FirstCut worked on 10+ productions like 'Kama', 'Eden', 'Asar', 'Paakhand', 'Lakad Baggha', 'Qala' and documentaries like 'Kaagaz'. FirstCut also took part in a total of 40 competitions during this year, out of which it won 32, including the ones conducted by the prestigious institutes like Bits Pilani, IIT Delhi, IIT Bombay and SRCC.

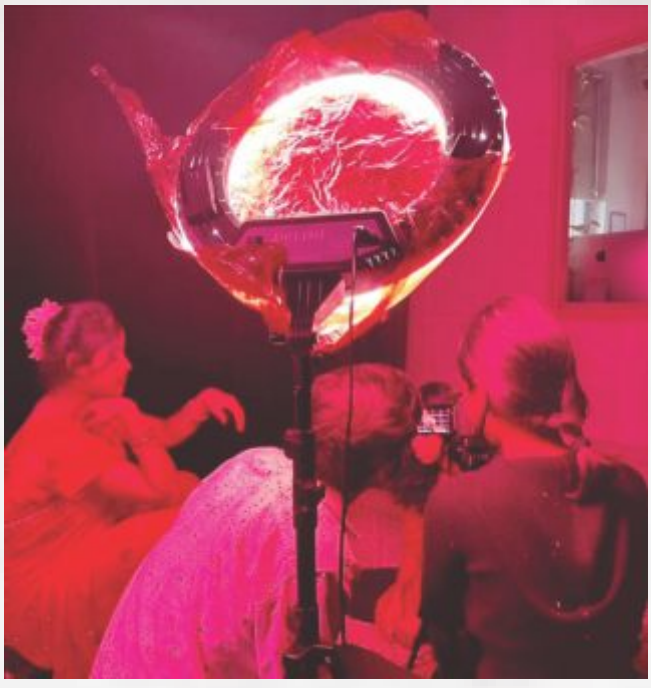

THE FASHION SOCIETY

PANACHE

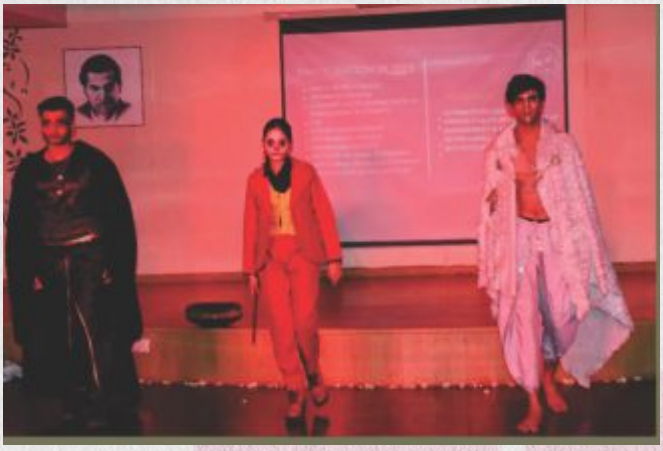

Panache, The Fashion Society, has been an integral part of Ramanujan College since its inception in 2013, with the objective of giving the students a platform to portray their talent in the field of fashion. This society is known for being the portal to the world of glamour for its students and is the perfect place for the students who wish to put their fashion acumen to productive use.

PRAMANA: THE QUIZ SOCIETY

Pramana, The Quiz Society is a student-led organisation established in the academic year 2017-18, with the primary aim of engaging, retaining, and enhancing the interest of students in academic and allied activities. The society conducts quiz competitions that serve as a potent tool to stimulate young minds and foster a range of beliefs and values among participants. Comprised of young intellectuals, Pramana members possess a wealth of knowledge, coupled with a quick wit and sharp intellect.

TARK: THE DEBATING AND CREATIVE WRITING SOCIETY

TARK, the Debating and Creative Writing Society aims to train the students for various debating formats such as Conventional debates, Parliamentary debates, Model United Nations, Youth Parliaments, Turncoat debates and Extempores. The society also organises various practice sessions for poetry and creative writing, which help the students to hone their skills for slam poetry performances and different creative writing styles.

NAAC VISIT

28th-29th April, 2022

Principal, Prof. S.P Aggarwal and NAAC Coordinator, Dr. Nirmalya Samanta with the NAAC Peer Visit Team - Prof. Niranjana Vanalli, Prof. Mukesh Dhunna and Dr. Prakash Daulatrao Patil.

Welcome of the NAAC Peer Team

The second cycle of NAAC assessment visit took place on 28th & 29th April, 2022. The college was accredited grade **'A++'** with a CGPA of **3.71**, one of the highest CGPA achieved by a college under the University of Delhi. The NAAC Peer Team comprised the Chairperson, Prof. Niranjana Vanalli, Member-Coordinator, Prof. Mukesh Dhunna and Member, Dr. Prakash Daulatrao Patil.

Lamp Lighting Ceremony by the NAAC Peer Team.

Felicitation of the NAAC Peer Team by the IQAC Director, Prof. K. Latha.

NAAC VISIT

The NAAC Peer Team exploring the college building.

Student and Admin interaction with the NAAC Peer Team.

NAAC grade accreditation certificate.

Exploring the library with the NAAC Peer Team.

PERFORMANCES BY THE CULTURAL SOCIETIES DURING THE NAAC VISIT

All the cultural societies exhibited their diverse talents with captivating performances. Shivranjani, the Music society, impressed the audience with a soul-stirring rendition of Ganesh Stuti based on Raag Kedar. Jazba, the Theatre Society, left everyone in fits of laughter with their satirical play. Panache, the Fashion Society, conveyed a powerful message about societal fears through their creative fashion show.

During the NAAC visit, Ramanujan College came alive with a variety of performances. Shivranjani's melodious music and Jazba's engaging play "The Proposal" left the audience spellbound. Panache's thought-provoking fashion show tackled societal fears with innovative sequences. The event showcased the college's vibrant cultural societies and received praise from both the audience as well as the NAAC peer team.

Ramanujan College's NAAC visit was acelebration of talent and creativity. The event was a testament to the college's commitment to fostering a rich cultural atmosphere and received accolades for its exceptional performances.

ALUMNI MEET

The much-awaited Alumni Meet at Ramanujan College, University of Delhi, held on 31st July 2022, was a heartwarming occasion that brought together former students from the batch of 2018-2021. The event served as a delightful reunion, allowing the alumni to reconnect with old friends, relive cherished memories, and reminisce about their college days. To mark this special gathering, a captivating cultural event was organised, showcasing the extraordinary talents of Ramanujan College's vibrant societies. The Alumni Meet left a lasting impression on all attendees, bringing about a sense of nostalgia and camaraderie among the college's esteemed alumni.

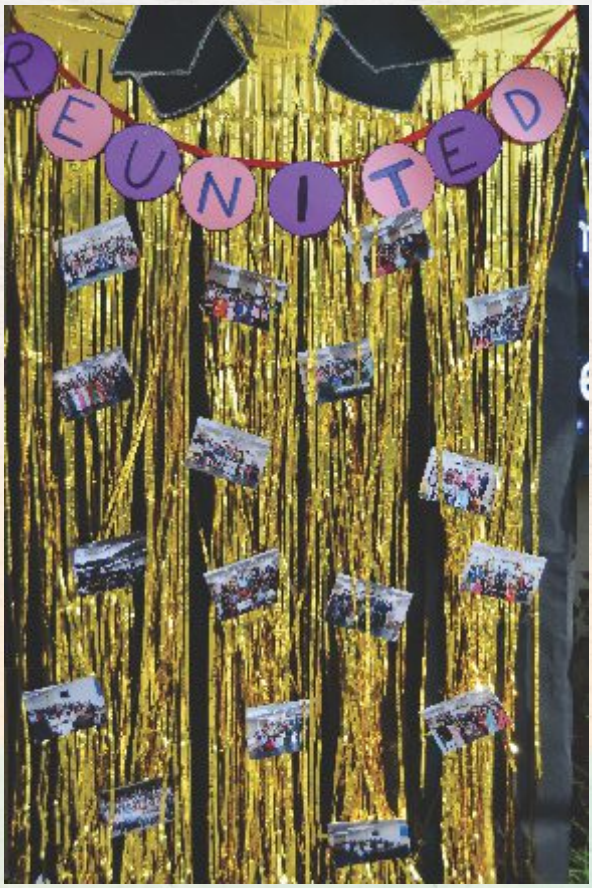

GLIMPSES FROM THE EVENT

31ST JULY, 2022

The Alumni Meet witnessed a dynamic cultural session featuring multiple societies. Shivranjani, the Music Society, gave a melodious start to the event with a soulful Saraswati Vandana performance. DNA, the Western Dance Society, and The Bhangra Regiment showcased energetic dance performances. Panache, the Fashion Society, conveyed an impactful social message through their inventive fashion presentation. The event was a delightful celebration of talent and creativity.

ALUMNI SPOTLIGHT

APARAJITA AGNIHOTRI
IPS (AIR 124)

The Editorial Team Members got the opportunity to interview IPS Officer- Ms Aparajita Agnihotri, Alumnus of Ramanujan College who secured an AIR 124 in the UPSC Examination 2022. Through the interview, she not only takes us through her life at Ramanujan College, but also gives us some valuable insights on her journey as an UPSC aspirant.

Editorial Team: Good afternoon, Ma'am! How are you?

Aparajita Ma'am: Hello everyone, I am good. Thank you so much for asking. How are you all?

Editorial Team: Good as well ma'am. Thank you. It's an honour to get this opportunity to interact with you. To begin with, we would love to hear about your own experiences and takeaways from our college.

Aparajita Ma'am: Sure. Talking about my experiences, I would like to begin with my batch. Let me tell you that my batch(2013-2016) was one of the most experimental batches in the University of Delhi. I remember we started the Debating society and my best experiences are with the people that I came across in that society. I met people from various cultural and social backgrounds. That actually grounds you in a way. There was no divide and we all were very well connected in the campus. Apart from that one thing that I can recall is 'Andadhwani'. It was held at the University level and the college was invited, wherein for the first time we conducted a survey for the society. We also had a few trips from the college to Rishikesh, Shimla and also a trek to the Hatu peak. Those trips were truly the highlights of my college life.

Editorial Team: That's really nice ma'am. Which course did you take up in college? Also, how did you like your curriculum back then?

Aparajita Ma'am: I pursued my graduation in Statistics honours. My batch was the FYUP (Four Year Undergraduate Programme) batch. FYUP was discontinued after a year but in my first year itself, it made me explore various other subjects apart from my statistics books for which I am really grateful. So, what happens is when you study books other than your course books, your knowledge is more well-rounded. You become more aware about acknowledging your privileges. So, it was a very holistic curriculum.

Editorial Team: Ma'am, what are your hobbies, do you like to read?

Aparajita Ma'am: Reading is something that I have not been able to be consistent with. There was already so much to read during my preparation that I could not take out time to pick anything else to read other than my course books. But I hope to get back to reading again. In general, my hobbies have been trekking and going to national parks. Apart from that, I like listening to very diverse kinds of music. Right now, there is a hype of BTS, that is not my forte, but I like to listen to music from all across the world like Israel and Iraq.

Editorial Team: That's really nice ma'am. Our next question to you is about the social lives of the students. How important do you think it is to have a social circle?

Aparajita Ma'am: I have been an extrovert throughout my graduation. I remember that I even hosted the annual fest -Josh twice. But you have to ensure that this nature doesn't become a hindrance in finding you a good and genuine set of friends. Having some real friends is better than having too many acquaintances. When the exam preparation started taking a toll on me, one thing that I made sure to do and did was to stay connected with my friends. It is a very small set of people, those who motivated me the most. Being with them kept me sane. So yes, a good social circle is really important who actually know and believe in you. They keep all the negative thoughts and worries away.

Editorial Team: Yes ma'am, we all should have such bunch of friends. Ma'am, have you had any professor who has been very influential?

Aparajita Ma'am: Yes, both Sachin Sir and Ashish Sir who used to teach me were always very supportive and approachable. I have been in awe of Latha Ma'am. She carries herself so well. Another teacher who has been a wonderful support was Ms Savita Jha. Savita Ma'am taught us history in first year. Whenever we went to her with any crazy idea, she was always upto it. She even spent her own money to make sure the events were well-conducted. I also remember Shruti ma'am from the English department. While preparing for the annual fest- Josh, she used to sit with us in the old classrooms of Deshbandhu and guide us on how everything should be done right from the hosting to the management. Last but not the least, Principal Sir, because he has always been very considerate about the needs and the demands of the students.

Editorial Team: Indeed. So, ma'am, how was your journey as an UPSC aspirant? Any tips for the future aspirants.

Aparajita Ma'am: My journey with this exam has been a very long and tedious one, took me seven years and six attempts. If I have to give you a few takeaways from my journey, you need to have a backup. Especially for the prelims it has become so dicey, they can ask you anything under the sun, fortunately or unfortunately it takes away the prime of your life. Hope for the best and prepare for the worst. So, backup is one very important suggestion. Since my father is already in the services,he knew how important it is to have a backup so he insisted me to write DU's entrances. I wrote three exams particularly, social work, environment studies and political science as it was my optional and as luck may have it, I cleared all three and I went with Environment studies because I have always been very interested in it. So, for UPSC, my takeaway is to have a backup, even if you are taking a break, join one of IGNOU's master courses. Your CV should not be empty or shaky. This exam has also made me realise that there is no substitute for hardwork. So hard work and smartwork is also very important.

Editorial Team: Ma'am, it took you six attempts, how can one stay motivated?

Aparajita Ma'am: I lost it several times. I had this solace that even if it's not UPSC, I'll still be content as a DU professor. Apart from this, I had parents and friends who did not make me lose hope. Every time I could not clear it, it was from a very small margin. That also gave me the motivation to do better the next time.

Editorial Team: Ma'am, how important it is to give back to the society?

Aparajita Ma'am: I think it is very important. I have learnt it from my parents. My mother used to teach underprivileged children. I think I picked it from there. Apart from this, I picked it from school scouts and guides of which I was a part. Later when I came to DU, I realised how important it is for one to understand how privileged they are. When giving back you have to understand that you receive back in multifold. So, all those kinds of pleasure are unmatched. It can be as simple as donating blood. In college, I participated in NSS camps. It makes you an aware citizen. As the youth of the country, you must be aware.

Editorial Team: That's right. So, ma'am as we wind up this interview, what advice would you have for a normal college student, just a regular student who is trying to make it?

Aparajita Ma'am: Just definitely have fun, because the time of bachelors will not return, so be active, build you CV and challenge yourself. Wherever you come from, whatever your opinions are, challenge them and try to become as liberal as possible. Be kind and selfless and have a lot of fun and be aware, this is the time for you to build your personality.

Editorial Team: Thank you so much ma'am for taking out time for us.

Aparajita Ma'am: My pleasure.

COLLEGE HIGHLIGHTS

Ramanujan College, University of Delhi stands out as a beacon of social responsibility and community engagement, fostering distinctive initiatives that have a profound impact on society. Through its socially focused approach, the college has managed to carve out a unique identity that sets it apart from its peers.

One of the key initiatives that makes Ramanujan College standout is its robust community outreach programs. The college has established strong ties with neighbouring underprivileged communities, addressing their needs and challenges through various educational and skill-building initiatives. From providing free tuition classes for local school children to organising health camps and vocational training workshops, the college has become a catalyst for positive change.

Another defining aspect of the socially focused approach of our college is its commitment to sustainability and environmental consciousness. The institution has embraced eco-friendly practices by implementing recycling programs, promoting renewable energy usage and creating green spaces on the campus. By instilling environmental awareness among its students, the college empowers the next generation to be responsible stewards of the planet.

Moreover, Ramanujan College places significant emphasis on promoting inclusivity and diversity. It actively supports marginalised students and fosters an environment where individuals from all walks of life can thrive. The college has set up support systems such as counselling services and mentorship programs to ensure that every student feels valued and supported throughout their academic journey. From organising fundraisers for charitable causes to volunteering at local NGOs, the students of Ramanujan College actively participate in creating positive change beyond the campus boundaries.

The socially focused initiatives of Ramanujan College have become a defining characteristic that sets it apart in the educational landscape. Its commitment to community engagement, environmental sustainability, inclusivity, and inspiring student-led endeavours have not only enhanced the college's reputation but also contributed significantly to the betterment of society. By nurturing socially responsible individuals, Ramanujan College continues to be a shining example of how the higher education institutions can make a lasting impact on the world.

Interview of the Principal, Ramanujan College

This interview is the result of an interaction of the Student Editorial Team Members- Pankhuri & Byapti with Prof. S.P. Aggarwal, the Principal of Ramanujan College.

Editorial team: Good morning, Sir. We feel privileged to have been given this opportunity to be interacting with you today. Thank you for sparing your valuable time.

Principal Sir: Thank you. It's always a pleasure to interact with the students.

Editorial team: Sir, Ramanujan college has been on a path of an unprecedented growth ever since the time of its establishment. Under your leadership, with the introduction of so many new courses and rapidly expanding infrastructure, the evening college transformed into a full-fledged day college in no time. As the head of such a esteemed institution, you must have come across a number of challenges. Can you please share with us your journey in the field of education?

Principal Sir: My journey as an educator has been a fulfilling one, driven by a passion for empowering students and fostering a positive learning environment. I started as a dedicated teacher, and over the years, I progressed into various leadership roles. Throughout this journey, I have been fortunate to witness the transformative power of education in shaping young minds and preparing them for the future. Each experience, from classroom teaching to administrative responsibilities, came with a lot of challenges. Thus, deepening my commitment to providing quality education to all.

Editorial team: Thank you for sharing this with us Sir. Talking about the Indian Education System, the National Education Policy 2020 has redefined the existing curriculum. Do you think that it will help the students to cater to the needs of the 21st century?

Principal Sir: The needs of the 21st century are perhaps very different from the time when we were growing up. The world was more limited in terms of opportunities and resources and the knowledge explosion was definitely not at the pace at which one can experience it these days. Now, the world requires you to be a global citizen. With the reduction in the curricular content to enhance essential learning and critical thinking by giving greater focus on experiential learning, I feel NEP 2020 is a big step in the right direction to promote relevance, equity, quality and strong foundational learning.

Editorial team: Right Sir. As a leader, you surely have a vision for all of us. Can you please share it with us and guide us how we students can help realise it?

Principal sir: My vision for each one of you is about maximising your potential. I wish to see my students equipped with a mature mind and heart, capable of critical thinking, innovation and experimentation that enable them to become leaders. My vision is to help the students build meaningful careers by strengthening their employability skills and groom the teachers to be leading academicians and excellent researchers.

Editorial team: Thank you Sir. Lastly, is there any message that you would like to convey to the students?

Principal Sir: As the world moves ahead in uncertain times with volatility as the new normal, I would like to encourage all my students to realise the power of adjustability, adaptability and being at peace with oneself. Be a responsible human being, sensitive towards nature and keep working towards the dream that you have always dreamt for yourself.

Editorial team: Thank you so much sir for such enlightening words and sparing your valuable time for this interaction.

Principal sir: My pleasure. All the best to everyone!

TEACHING LEARNING CENTRE (TLC)

The Teaching Learning Centre (TLC) is mandated by the Ministry of Education (MoE) to organise Faculty Development Programmes (FDPs), Faculty Orientation and Induction Programmes (FIPs), Discipline- Specific and Interdisciplinary Refresher Courses through conferences and workshops in both offline and online modes. These programmes are based on an in-depth subject knowledge, quantitative and qualitative research methodologies as well as an interdisciplinary approach, as envisaged in the National Education Policy (NEP) 2020.The TLC has been set up with the aim of "Reaching the Unreached" teachers in terms of regional diversity and geographically remote areas of the country.

It has successfully conducted more than hundred learner- centric programmes since October 2017 and trained over one lakh teachers across the country in various Discipline- Specific and Interdisciplinary programmes. **Within a year, between 1st July, 2022 to 30th June, 2023, the TLC has organised over a-hundred-and- thirty programmes while successfully having trained over thirty-five thousand teachers.**

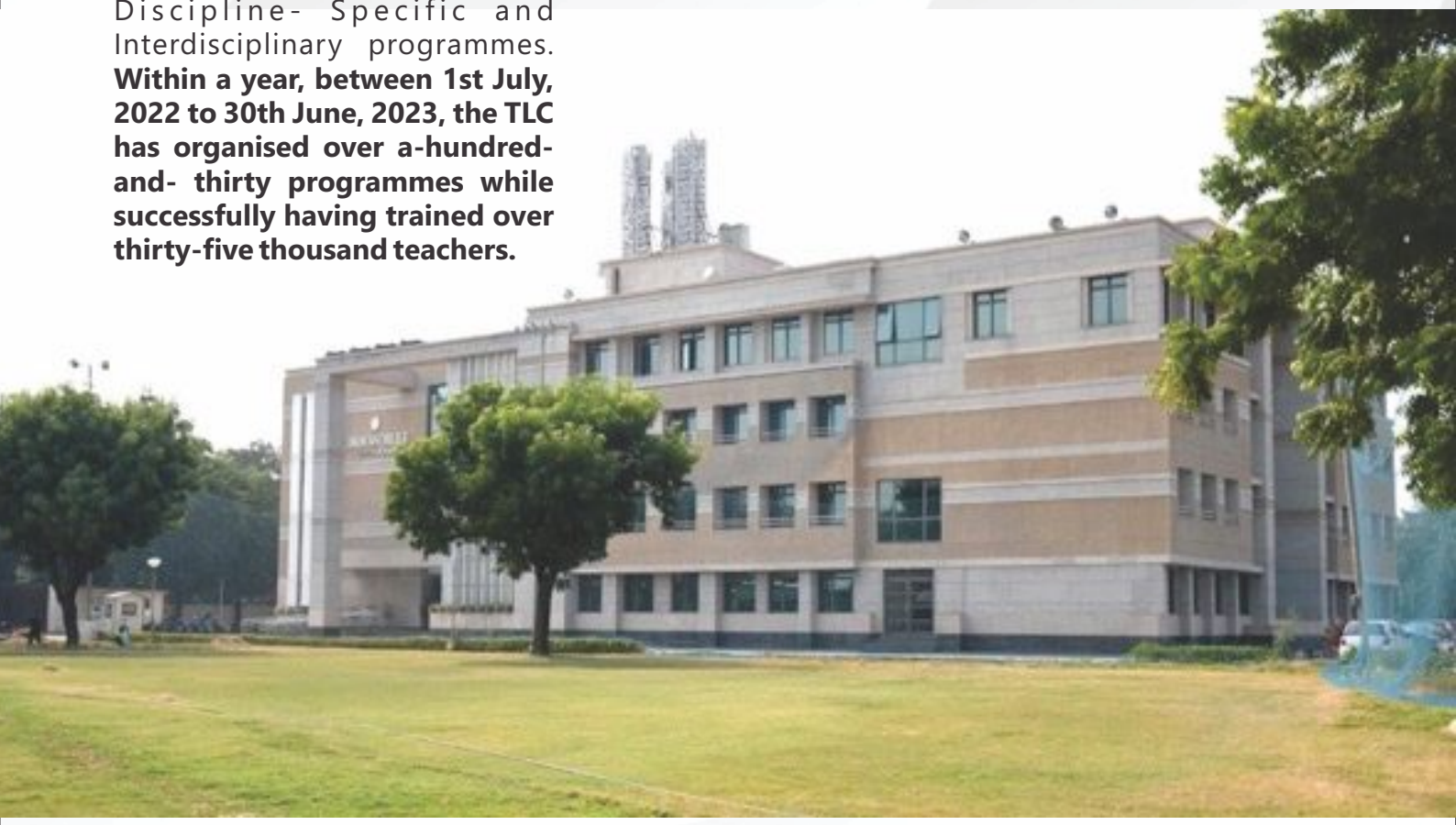

INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL (IQAC)

IQAC organised a refresher course, 'Re-Energising Research: Interdisciplinary and Transcultural Approaches to English Literature' from 1st to 14th August, 2021.

The cell also introduced an add-on course in English Studies, named 'Select Critical Approaches to Literature' for a month, from 20th October to 20th November, 2021.

The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of the college is functional in its role of improving and assuring quality in all academic and related activities of the college. In this context, the IQAC monitors academic performances and evaluation systems, augments the teaching-learning process, conducts examination, monitors feedback process, maintains academic coordination, promotes research among teachers and students and assures adequate infrastructural facilities.

The IQAC of the college organised a national-level conference on the theme of 'Quality Assurance in Higher Education' on 26th February, 2018 at the India International Centre, Delhi.

The cell conducted a workshop on 'Digital Humanities' on 8th September, 2021. IQAC organised another workshop on 'Implementation of Official Language', under the Rajbhasha Prakoshth, the official language cell of Delhi University.

ARTIFICIAL INTELLIGENCE & ROBOTICS CENTRE

Interview of Convenor Dr. Nikhil Kumar Rajput

Dr. Nikhil Rajput is an Assistant Professor of Computer Science, Ramanujan College. The Editorial team members- Pankhuri & Daniya, sat in a conversation with him to know more about the Research Development and Services Cell of our college.

Editorial team: Good afternoon, Sir. How are you doing today?

Nikhil Sir: I'm good. How about you all?

Editorial team: We are good as well sir. Thank you. Sir, you are the Coordinator of the National Resource Centre of the college as well as the Centre for Artificial Intelligence and Robotics, both of which are very integral not just to the college, but also to the larger society. We are very curious to know more about these cells. But to begin with, could you tell us a little about the Research Development and Services Cell of the college?

Nikhil Sir: Sure, The Research Development and Services Cell was formed in 2017 with an aim to promote research culture and developmental activities in the college. The main objective of this cell is to undertake technical research projects that can develop softwares and services for the betterment of the society.

Editorial team: Sir, The cell seems to have been working on multiple projects, Sir. Could you please elaborate a little on the projects undertaken by the cell so far?

Nikhil Sir: That's right. The cell has been actively working in various projects. The first project taken up by the cell was 'Automation of Ballot Counting for SBI Officers Election'. The cell has also developed an app for the college, named 'Ramanujan College App' which provides all the information related to the college. The app is also available on Google play store. During the pandemic, we also created an online teaching portal for the Teaching Learning Centre of our college. The Cell has also successfully completed a project in collaboration with "Reliable Data Pvt. Ltd.".

Editorial team: That's amazing. Sir, what are the projects that the cell is currently working on?

Nikhil Sir: The students of our lab are currently working on building a private 5G network in the campus. Blockchain Certification and building a Virtual Dissection System for the biology students are some of the other ongoing projects as well.

Editorial team: That's great, Sir! Coming to the Robotics and Artificial Lab. Sir, this sounds like a very interesting and increasingly important centre, could you please brief us on the aim and functioning of the lab?

Nikhil Sir: Sure. The Robotics and Artificial Lab aims to work on the emerging areas in the field of robotics,embedded systems and machine intelligence. The students under the centre are currently working on the star innovation project "Robotics in Healthcare" in which we are trying to reduce the costs of existing machines and increasing their efficiency.

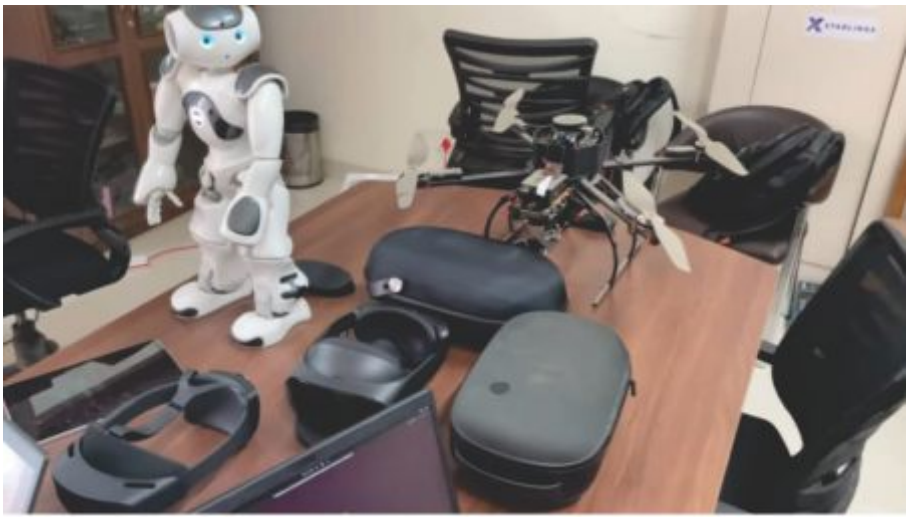

Interoperability Setup

The centre also had a meeting with Apollo Hospital to have a collaboration in this project. We are also working on the project "Automatic Irrigation Control Based on Soil Moisture" in collaboration with Centre for Social Innovation in which we are building a machine to automate the irrigation process in fields based on the volumetric water content in real time.

Editorial team: That's wonderful sir. As the world is seeing technological advancements by the days, Robotics and Artificial Intelligence seems to be playing an important role in these advancements. What significance, according to you, does Robotics and AI hold for the future, Sir?

Nikhil Sir: Nowadays, robots not only make human lives easier by taking care of some tedious and redundant tasks, but also have a great role to play in industries like Agriculture, Pharmacy and Disaster Management. Artificial intelligence also works hand in hand to automate tasks that are currently done by humans, freeing us up to focus on more creative and strategic work. I believe both Robotics and AI are here to stay and will help us become more efficient and productive.

Private Sovereign Cloud

Editorial team: So true, Sir. Lastly, is there any message from you for the students who would like to volunteer and be a part of this cell?

Nikhil Sir: Yes. The Research Development and Services Cell is open to students from all the courses who are dedicated, hardworking and have a zeal to learn. We also conduct various workshops for the students of both the technical as well as non-technical backgrounds to learn more about this field. I would like to encourage all the students to take part in such workshops.

Editorial team: Thank you so much sir for sparing your valuable time for this session.

Nikhil Sir: My pleasure.

Mr. Prakhar Wadhwa,
Convenor,
Placement and Career
Development Cell

PLACEMENT AND CAREER DEVELOPMENT CELL

The Placement Cell is an integral part of Ramanujan College. It functions to ensure the best placements for the students.

The Placement Cell provides assistance to students as well as enhances their ability to think outside the box by conducting webinars, seminars, workshops, Personality Development Programmes, and inviting Guest Lecturers. The students, hence, get ample opportunities to closely interact with professionals from different industries.

'AARAMBH', The Annual Job and Internship Fair organized by the Placement Cell, took place on 6th April, 2023. This event aimed to provide a platform for students to interact with various industries and reputed organisations for potential job and internship opportunities.

The Placement Cell works hard to invite a diverse range of companies and organisations to participate in the campus recruitment drives. These companies come from different sectors, offering a wide array of job roles and internship programmess to cater to the varying interests of the students.

Institution's Innovation Council (IIC)

The Institution's Innovation Council (IIC) is a centre sponsored by the Ministry of Education (MoE) which focuses on fostering the growth of entrepreneurship culture and start-ups in our institution.

The main motive behind the establishment of this skill-centre is to encourage, inspire and nurture young students by motivating them to work with new ideas and supporting them in transforming those ideas into businesses.

The centre conducts various innovation and entrepreneurship-related activities prescribed by the Central MIC in time-bound fashion. It identifies and rewards innovations and shares success stories.

IIC also organises periodic workshops, seminars as well as interactions with various entrepreneurs, investors, and professionals to create a mentor pool for student innovators.

The centre promotes networks with peers and national entrepreneurship development organisations. IIC has also created an Institution's Innovation portal to highlight innovative projects carried out by the institution's faculty and students.

NATIONAL OUTREACH PROGRAMME

The National Outreach Programme of Ramanujan College was constituted with an aim to reach out to the larger society and bring about a positive change in the lives of the people. Along with raising awareness, one of the major objectives of the outreach activities is to impart education among the underprivileged children. These activities are aimed and directed towards bridging the gap in services provided by the official and government sources and other non-profit organisations.

INITIATIVES TAKEN UNDER OUTREACH PROGRAMME

E-PADHAI

The Outreach Programme has come up with an initiative to bridge the gap for students who could not afford online mode of education called E-Padhai.

Under the programme, the college has initiated a project of building an electronic learning resource for the children which would include fun and interactive video-lessons and study material for all the classes as per the latest curriculum.

SELF-CARE SUNDAY

The main objective of this initiative is to generate awareness among students about mental health and to promote self-care and self- love.

COVID-19 DONATION DRIVE

The aim of this drive was to raise donation for the people in need during the pandemic. Within a period of 7 days, the college managed to raise a sum of Rs. 12,000.The raised amount was donated to the slums of Faridabad and Okhla, to help people afford food supplies, medicines and other basic amenities.

COOLIE CAMP ADOPTION PROJECT

The rural poor migrate to the city in search of a better livelihood, however, due to the costly demands of city life, these underprivileged end up forming groups and building makeshift houses in the suburbs which turn into slums due to the unmanaged and overlooked conditions of the area. The Vasant Vihar Coolie Camp is one such unmaintained area.

On 23rd October, 2016, this coolie camp was formally adopted by the College Principal, Prof. S.P. Aggarwal. A memorandum of understanding was signed by the college in collaboration with NGO Rupantaran.

In compliance with the agreement, the students of the college, particularly the Outreach members, provide teaching services to the children and women residents of the camp, while the NGO works on providing infrastructural facilities.

HEALTH AND HYGIENE WITH UNDERPRIVILEGED WOMEN

The talk was organised with the women of the Sudhar Coolie Camp, based near the College.

The women were informed about the diseases and problems which females face, however a major section of the society remains unaware about them. The Outreach members emphasised that the situation could be changed only by providing women a friendly environment, one in which they would feel comfortable enough to ask and present their issues.

BLINDFOLDED INTERACTION

The National Outreach Society of Ramanujan College conducted the Blindfolded Interaction in Volleyball Court on 11th November, 2023. The event was organised to welcome freshers of the 2022-2023 session and it aimed at promoting anonymous interactions between freshers and their seniors, in an effort to enable the newly-entered batch to kickstart their college experience with fun and familiarity. The society arranged multiple benches throughout the Volleyball Court and student volunteers from all courses were blindfolded and randomly paired. The session had resulted in a positive rapport between juniors and seniors.

PROJECT TAVASYAM

The Outreach Society took on another progressive initiative with Project Tavasyam. This initiative focused on a highly persistent, yet ignored issue in society- that of a man's mental health.

In a society wherein men are taught to conceal their emotions, Project Tavasyam aimed to do the complete opposite.

As a part of the project, bullet boards were placed in multiple places throughout the campus along with positive notes for men. All the men of the college were encouraged to go to the boards and express their feelings on sticky notes, dauntlessly.

The project saw participation from a huge number of men on campus, who found solace through this initiative of the society.

SCHOOL OF HAPPINESS

The School of Happiness is a dynamic society of the College, dedicated to spreading joy and fostering a positive atmosphere among students and staff. Through its various programs, the School of Happiness encourages students to prioritise their mental health and develop healthy habits that contribute to their overall well-being.

The society offers meditation sessions, yoga classes, and stress-management workshops, providing students with valuable tools to cope with the demands of college life. Additionally, the society organises interactive sessions where individuals can share their experiences and learn from one another, fostering a sense of belonging and support within the college community.

One of the unique aspects of the society is its emphasis on spreading happiness beyond the campus. The society actively engages in community-based outreach initiatives, while collaborating with various local organisations.

On 12th September, 2022, The School of Happiness organised a session on 'Personality Development' through Sahaja Yoga, 'Meditation for All' in the Ghalib Auditorium of the College.

The society also conducted a poetry competition followed by an interactive session under the 'Live Life Fully' moniker.

The School of Happiness, in collaboration with the Department of English and Equal Opportunity Cell, also organised 'Lovehap', an outreach program aimed at promoting happiness among the differently abled children of the Chetna Welfare Society.

JOSHxSEQUOIA

Enactus Convenor, Prof. K. Latha

Cultural Committee Convenor,
Prof. Madhu Kaushik

Principal, Prof. Dr.S.P.Aggarwal with the Chief Guest Prof. Ramesh Chandra Gaur , Director, NSD

Lighting of the lamp on Day 1 by Principal
Prof. S.P.Agarwal.

(L-R) Ms. Suchi Patti, Convenor, Student Union,
with Principal

JOSHxSEQUOIA (2022-2023), the annual fest of Ramanujan College conducted from 23rd March to 25th March was organised by the Cultural Committee in collaboration with Enactus under the supervision of Prof. K. Latha (Convenor, Enactus), and Prof. Madhu Kaushik (Convenor, Cultural Committee). The chief guests for the shows were Shri Professor (Dr.) Ramesh Chandra Gaur, Director of National School of Drama, Miss Sakshi Yadav, a renowned Classical music artist with her colleagues and our guest artists, Lalit Sisodiya and Balram Sisodiya, and a special performance by renowned Bollywood singer, Abhijeet Srivastav.

Following were the student members of the committee: Himani Pant (President), Khushi Dhiman (Vice-President), Dolly Marwaha & Sudhish Singh (General Secretaries), Ishmeet Singh (Joint Secretary), Saksham (Treasurer), Anshika Patial (Management Head), Farheen Khan (Sponsorship Head), Advika (Promotion Head), Anshpreet Singh, Anshita Manglia and Divisha Singh (Executive Members).

ORGANISING COMMITTEE, JOSHXSEQUIA

Cultural Committee President and Management Head with the convenor, Dr.Kaushik.

Ms. Himani Pant
President of the
Cultural Committee

Shivranjani and team

Abhijeet Srivastava performing on day 3

Cultural Committee and Enactus Society, Ramanujan College is organising its fest JOSH x SEQUOIA today

New Delhi, Focus News: Cultural Committee, Ramanujan College and Enactus Society, Ramanujan College is organising its fest JOSH x SEQUOIA from March 23-25,2023. Prof S.P. Aggarwal (Principal) Prof K. Latha (Convenor, Enactus) and Dr. Madhu Kaushik (Convenor, Cultural Committee) have come together to make this event possible after a long gap of 3 years. Inaugural programme will be on 23 March 2023 at 10 am, chief guest for the event will be Shri Prof. Ramesh Chandra Gaur (Director, National School of Drama). During these three days various programmes have been scheduled. Various societies of Ramanujan College will be performing and showcasing their talent. Apart from this various competitions will be organised: Cross-Words (Debate Competition), Online Film Making Screening Competition, On the Spot Photography Competition, Case Study Competition, Marketing Competition, Flamboyance Competition etc. Students from various colleges and universities have participated in large number. Attractive prizes and goodies will be given to the winners and the participants. On the last day a special event has been organised "Kingdom of Kids" for the underprivileged kids and finally the fest will wind up by a Special Performance by renowned Bollywood playback singer and writer Abhijeet Srivastava.

वार्षिकोत्सव आयोजित

नई दिल्ली (एसएनबी)। रामानुजन कॉलेज का वार्षिकोत्सव 'जोश' धूमधाम से मनाया गया। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि एनएसडी के निदेशक प्रो.रमेश गौर ने किया। प्राचार्य प्रो. एसपी अग्रवाल ,डा. के.लता और मधु कौशिक ने अतिथियों का स्वागत किया। सांस्कृतिक समिति, संयोजक डा.मधु कौशिक और प्रो. के. लता द्वारा मुख्य अतिथि एनएसडी के निदेशक प्रो.रमेश चंद्र गौर और विशेष अतिथि साक्षी यादव को शॉल और उपहार देकर सम्मानित किया गया।

Sensational Performance by Abhijeet Srivastava on the of the cultural festival JOSH x SEQUOIA of Ramanuja

New Delhi, Focus News: The final day of the 3-day cultural festival JOSH x SEQUOIA organised by the Cultural Committee of Ramanujan College and ENACTUS Ramanujan, started with a spirit of reminiscence of childhood and by using art. TARK, debating society organised Bilingual conventional debate competition on theme, 'Modern Understanding of Nationalism'. The chief guest of the event was

Newspaper publications of the fest

INTERNATIONAL YOGA DAY

The Department of Physical Education, Ramanujan College, under the guidance of Dr. Shikha Singh, Director, celebrated International Yoga Day through a yoga session conducted on the college grounds. Students, faculty members, and administrative staff participated in the same.

International Yoga Day being celebrated by Department of Physical Education

The Cultural Committee and the School of Happiness in collaboration with SKYRIA (activewear for women) celebrated the day with a session on Sahaj Yoga by Dr. Mithila. It was followed by a dance performance on Ganesh Vandana.

Another session on Yoga was taken by Ms. Nazneen Fardoz, who is a professional yoga instructor. During her session, she discussed and demonstrated the importance of different yoga asanas. Later, DNA-the dance society and PANACHE-the fashion society gave their performances in SKYRIA'S active wear. To make the event more engaging for students, yoga/dance competition was organised alongside some fitness challenges.

ENACTUS

Enactus Ramanujan is a team of 30 devoted students striving to build communities and design sustainable business plans for third-party beneficiaries. Established in 2017, Enactus Ramanujan has been diligently engaged in numerous projects like Project Parvaah, Project Anindita, and Project Shilp. Alongside these initiatives, the organisation has successfully organised various events and workshops, including a seminar with the CAT'21 achievers, in collaboration with Career Launcher, a donation drive for SK Children's Foundation as well as a webinar on 'Effectively Communicating Needs as a Student.'

Enactus Ramanujan has hosted multiple mental health awareness workshops, and the **Intra Enactus Competition '23**, among others. One of their standout events was **'Josh X Sequoia'** held on 23-25 March 2023.

Driven by a commitment to achieve the Sustainable Development Goals (SDGs), the organisation collaborates with various institutions to uplift underprivileged sections of society.

TATVA

Dr. Umesh Jha, Convenor, TATVA

TATVA: The Eco Club of Ramanujan College is determined to serve nature since its inception, which is the core motive of its formation as well. We at TATVA are always obliged to planet earth and whoever takes pledge to serve it, by taking any ecoconscious step. We try to make positive on-ground changes, and to that end, we run various initiatives which promote environmental goodwill. To accomplish our goals, we acknowledge and comply with the United Nations' sustainable development goals.

TATVA works on the principle motto of "Serve the Environment, Nurture the Nature". The idea behind this thought is that we have one planet, and we share equal responsibility for the future of this planet.

WWF India organised an amazing platform for students and learners all around to visit the fabulous 'Wings of Wonder' exhibition, showcasing the amazing world of raptors and what they inculcate in our ecosystem, and how we can help to preserve these now vulnerable beings.

In our clean-up drive, 12 People from TATVA participated, 2 people from outside were mobilised by TATVA and there were volunteers from the collaborating organisation 'There Is No Earth B'.

Dr. Tenzin Thakur with students

WOMEN DEVELOPMENT CELL (WDC)

Dr. Hem Lata
Convenor, WDC

Women empowerment and gender equality are among the most important requirements for the upliftment and progress of a nation. In the effort to make Ramanujan College a strong kernel of gender sensitisation, the Women Development Cell (WDC) was constituted in the November of 2016, under the able convenorship of Prof. Madhu Batta.The cell has both the faculty and students of the college as its members and works with the aim to create a gender-sensitised community within the campus as well as in the society. It has been involved in various academic, technical, medical, cultural as well as social events based on the upliftment of women. WDC also focuses on spreading the importance of gender equality in the society, through college students.

Following are some among the multiple events organised by The Women Development Cell-

- The cell also organised a movie-screening event of the film 'Suffragette' on 30th August
- It organised a seminar with Fife Organisation under their campaign 'AntiSwear Brigade', with the objective of educating the youth about the effects of using swear words, abusive language and their association with misogyny.
- It organised a campaign on breast cancer to support Breast Cancer Awareness Month on 31st October, 2022.
- The cell held its annual fest 'Shakti'. under which numerous inter-college competitions were devised.
- WDC also participated in the organisation of 'Onella 2.0 - Diwali Mela' which took place in the college campus on 19th October, 2022

EQUAL OPPORTUNITY CELL

Dr. Sudhanshu Mohan Kestwal, Convenor with Faculty and Students

The college's Equal Opportunity Cell is an extension of the Equal Opportunity Cell of the University of Delhi. It has been set up to cater to the requirements of the differently-abled students.

The college has constructed ramps, railings, accessible washrooms, braille-enabled sign boards and braille books for the students and faculty with physical disabilities. The cell works on the guidelines described in Scheme of Equal Opportunity Centre for College XII Plan (2012-2017) and takes special care of SC/ST/OBC and PWD students.

The EOC organised 'The Magic of Sharing- A Food Donation Drive' on 23rd July, 2022. For the donation drive, homemade aloo puri was prepared and hygienically packed. Old clothes and face masks were donated as well.

The Equal Opportunity Cell conducted a special talk with Dr. Mansoor Alam. He is considered as one of the first combination therapists who has bridged the gap between medical and rehabilitation professionals.

The EOC also conducted a poetry competition. The event was open for each student of the college as well the members of the society.

ANTHA PRERNA CELL

Dr. Kamlesh Kumar Raghuvanshi,
Director, Antha Prerna Cell

Antha Prerna Cell
Department of Computer Science
Ramanujan College
University of Delhi, Delhi

Dr. Arun Agarwal,
Assistant Director, Antha Prerna Cell

The Antha Prerna Cell-Engineering Ideas to Reality, was inaugurated on 18th January 2019, under the aegis of the Department of Computer Science, Ramanujan College. The Cell aims to bridge the gap between industry and academia by incorporating a sound theoretical basis with practical, hands-on experience.

Antha Prerna Cell, in collaboration with Department of Vocational Studies and Swadeshi Startup, hosted an event titled 'Role of Institutions in India's Path to a Five Trillion Economy: Entrepreneurship Skill Development Among Students' at Ghalib Auditorium. The event featured keynote speaker, Mr. Sujit Banerjee who emphasised the importance of education in nurturing an entrepreneurial mindset and practical skill development. The success stories of students showcased innovative ventures, fueling enthusiasm among attendees. With interactive workshops and expert lectures, the event motivated and empowered students to contribute actively to India's economic growth as innovative entrepreneurs.

Antha Prerna Cell (APC) also conducted a transformative three-month 'Online Research Internship on Data Science using Python.' The programme incorporated theoretical knowledge with hands-on experience in data analysis, visualisation, and machine learning with Python. Under the guidance of mentors, students showcased their dedication by completing practical assignments and real-life projects, setting a strong foundation for their future endeavors in the dynamic field of Data Science and Python programming. Led by a group of dedicated students, the internship focused on essential skills and practical experience.

The flexible online format allowed participants to learn at their own pace while engaging in interactive sessions with instructors and peers. The event's success was evident through students' dedication, as they completed real-life projects, gaining valuable skills and passion for data-driven technologies.

ENVIRONMENTAL INITIATIVES

Ms. Neha Yadav, on a campus tour with students, explaining Green Initiatives.

Dr. Moirangthem Jiban Singh explaining about Bio-Compost.

Save Soil Campaign in collaboration with Isha Foundation

Dr. Akanksha Mishra and Mr. Gaurav explaining about Vatika.

Ramanujan College has made remarkable strides in championing environmental conservation and sustainability in recent years. One of the standout initiatives is the Green Food Waste Recycling Machine, affectionately known as EcoMan. This cutting-edge machine efficiently converts green waste and food waste into nutrient-rich manure, which is then utilised to nurture the college's parks and green areas.

To address the issue of solid waste, Ramanujan College has installed a 200 KLD Solid Waste Management Plant (STP). This state-of-the-art facility effectively transforms toilet waste into reusable water, which can be used for various purposes, thus promoting responsible water management within the college premises.

The college's focus on water conservation does not stop there. A water tank with a capacity of three lakh liters has been set up to convert hard water into soft, drinkable water. This automatic plant ensures a steady supply of clean water throughout the campus.

Another ingenious initiative is the rainwater harvesting system. A massive tank with a capacity of 5 lakh liters collects rainwater from the college building and pathways. This collected water is stored and recycled, providing a valuable resource for use during dry spells and reducing the college's dependence on external water sources.

The college has also made significant strides in renewable energy. With the installation of solar panels on rooftops, the college generates an impressive 140 kW of electricity.

In the realm of waste management, the college has been proactive in its approach. An efficient waste recycling system, including paper recycling and e-waste management has been implemented. This responsible disposal of waste is carried out in collaboration with certified recycling companies, ensuring that no waste is improperly discarded.

Ramanujan College in collaboration with Isha Foundation embakred on a month-long project, from June to July of 2022, of painting the exterior of its boundary walls (150 metres approx.) as part of the 'Save Soil' global campaign launched by Sadhguru. Around 60 volunteers from the Isha Foundation and from the college participated in the project. The event was conducted under the supervision of Dr. Nirmalya Samanta; Department of English, Dr. Tenzin Thakur; Department of Environmental Studies, Mr. Nitish and Ms. Adwiti from Isha Foundation.

SPORTS

The Department of Physical Education and Sports emphasises on constantly striving for excellence and fosters an environment for holistic development of the students. The college also has a well-equipped gymnasium available for the use of staff and students alike. Specialised coaching is available for various sports like athletics, boxing, weight-lifting, cricket, and the like.

Students are encouraged to participate in Inter-college, Inter-university, State, National,and International tournaments. Regular self- defense (Tae-Kwon-do) and yoga classes boost confidence and well-being. Inter-departmental and friendly matches, along with the Annual Athletic Meet, create a lively sporting atmosphere.

The Department utilises technology, such as recording and cameras, to assess and enhance students' playing skills, nurturing their potential. Sports at Ramanujan College are a vital component of holistic student growth.

(L-R) Dr. Shikha Singh, Director, Department of Physical Education and Sports with award-winning international weightlifter, Kunjarani Devi on Annual Sports Day, 2023

ANNUAL SPORTS DAY

Ramanujan College, Delhi University, joyously revived its cherished tradition of the Annual Sports Day on February 16, 2023, following a two-year hiatus necessitated by the far-reaching impact of the Covid pandemic.

The day began with a felicitation ceremony, honoring Colonel N.S Yadav, Lieutenant Colonel S.K Dhaiya, and Principal, Professor S.P. Aggarwal. NCC students showcased their skills and dedication under the guidance of CTO, SW Dr. Shikha Singh and CTO, SD Mr. Chandan Kumar Sharma.

The Department of Applied Psychology emerged as winners in the march past competition, followed by the release of tri-colored balloons and a torch lighting ceremony. Inspiring speeches by the Principal and Guests of Honour highlighted the power of sports.

Captivating demonstrations of various sports, inter-college competitions, and fun activities entertained the audience. The grand closing ceremony, featuring Chief Guest Ms. Kunjarani Devi, celebrated the sporting achievements of our students. With over seven hundred participants, the event left a lasting impact, inspiring sportsmanship and holistic development.

Glimpses of the Event

LIBRARY

"The library is the core of every educational institution, akin to a well-functioning heart that keeps the body healthy and vibrant", as stated by Dr. S. R. Ranganathan. The Ramanujan College Library is a vital academic resource for students as well as the faculty. With RFID technology and KOHA open-source software, it offers a plethora of resources, including books, journals, magazines, newspapers, and access to various online material. Fully air-conditioned, IT-enabled, and under CCTV surveillance, the library has separate reading rooms for faculty and students.

The library organised a book fair on 18th October and 19th October, 2022 as well asa workshop for its staff to learn the KOHA software from 8th February to 10th February, 2023. The invited speaker was Mr. Mukesh Kumar, Library and Information Officer, Election Commission of India, Government of India.

MEDIA LAB

The Media Lab at Ramanujan College, University of Delhi, is a cutting-edge facility that empowers students to explore and engage with media technologies. It provides a creative and innovative environment for students to experiment, learn, and develop media- related skills. With state-of-the-art equipment and expert guidance, the Media Lab facilitates hands-on learning and fosters creativity in various media disciplines.

The state-of-the-art media lab was made available to SRCC for recording theironline programmes uploaded to the ARPIT Portal.

NEEV

The Civil Services Society

Dr. Aparajita Mazumdar, Convenor, Neev

NEEV, the Civil Services Society of Ramanujan College, has a noble mission to support aspiring candidates preparing for the Civil Service Examination (CSE). They provide a conducive environment where young CSE aspirants can receive guidance, study materials, workshops, lectures, and interactive sessions to chase their dream of serving the nation.

On 15th January, 2023, NEEV organised a webinar on **Indian Army Day**, honouring thesacrifices of our soldiers. Brig. MPS Bajwa, an acclaimed hero, served as the guest speaker,and the event paid heartfelt tribute to the brave soldiers. On 5th April, 2023, NEEVconducted a workshop on **'Answer Writing and Notes Making for UPSC CSE.'** Mr. SiddharthKumar from Prepp IAS shared valuable insights on practical writing, note-making, and exampreparation techniques. Another workshop on **'Preparation Strategies for UPSC CSE'** washeld on 15th February, 2023, with guest speakers Mr. Lakshay Anand (IFS Officer) and Mr.Shashank Sharma (NEXT IAS Academy faculty). They discussed the exam pattern, syllabus,and shared their personal experiences, motivating and guiding the students.

Through their efforts, NEEV aims to shape the future leaders of the nation and contribute tothe civil service arena.

NATIONAL SERVICE SCHEME (NSS)

Dr. Alok Ranjan Pandey,
Convenor,
National Service Scheme

The National Service Scheme (NSS) unit of Ramanujan College provides a platform to the students for community work and developing a sense of involvement in the tasks of nation building. It also focuses on providing opportunities to the underprivileged in the field of health and education.

The NSS Unit of Ramanujan College, under Azadi Ka Amrit Mahotsav organised a '**Fit India Freedom Cycle Rally**' on 3rd June, 2022 to promote bicycle riding among the students in order to have a healthier life and greener earth. Owing to the importance that social interaction holds in human life, the cell organised a session under the talk series '**Sanlaap : A Discourse**' on 11th June 2022. The Guest Speaker for the event was Akshat Aayush who secured an All India Rank 106 in the Civil Services Examination 2021.

The cell organised **a three day online Yoga workshop** from 19th June, 2022 to 21st June, 2022 to bring the practice of yoga and exercise into the daily routine of the students. An online webinar was conducted on 6th July, 2022 in collaboration with the **Federation of Indian Animal Protection** to spread awareness about animal husbandry and animal cruelty.

The NSS Unit of Ramanujan College took an active part in the Symposium of the **Role of Media in Fostering Constructive Public Discourse** organised by the Office of Public Affairs of the Bahá'í of India in collaboration with Ramanujan College, University Of Delhi. The event took place on 26th July 2022 in the Education Centre, Bahá'í House of Worship, Lotus Temple. The guest speakers of the event were **Prof. Sanjay Dwivedi, Director General, Indian Institute of Mass Communication (IIMC), New Delhi and Prof. Pramod Kumar, Dean Students Welfare and Course Director,Urdu Journalism, IIMC**.

NSS organised a **Cleanliness Drive** at Humayun's Tomb on 14th August, 2022. A total of 34 volunteers worked for around 3 hours in order to make this drive successful. A **slum visit to Bengali Basti** was undertaken on 11th September, 2022 so that the students could interact with the local people and try to understand their problems related to education, healthcare and hygiene.

The NSS Unit of Ramanujan College organised a **"Plog Run and Cleanliness Drive" on 13th October, 2022 under Fit India Freedom Run 3.0 and Clean India 2.0** with the theme of **Azadi ke 75 Saal, "Fitness Rahe Bemisaal"**. The volunteers gathered in the campus of the college, equipped with brooms, sanitisers, gloves and garbage bags toclean a total area of 4 km around the college campus.

The cell also organised a **Fund-raising Flag Day Donation Drive** from 10th December, 2022 to 12 December, 2022 on the account of Armed Forces. The collected amount was sent to the Armed Forces under Flag day Donation Drive.

ARMED FORCES FLAG DAY
FUND DONATION DRIVE
DONATION

3/5

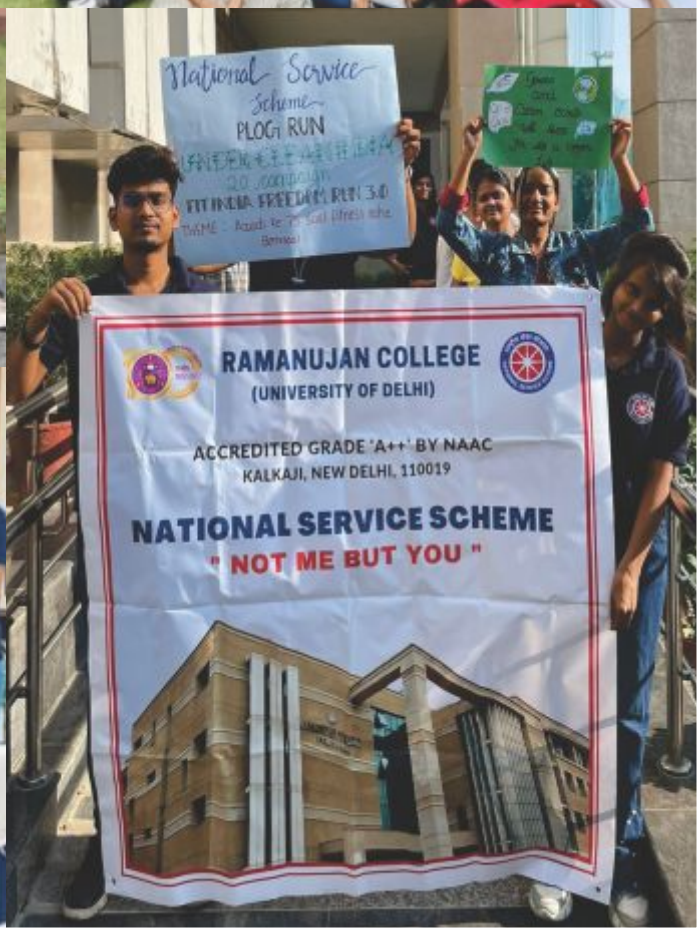

National Service Scheme
PLOGI RUN
FIT INDIA FREEDOM RUN 3.0
RAMANUJAN COLLEGE
(UNIVERSITY OF DELHI)
ACCREDITED GRADE 'A++' BY NAAC
KALKAJI, NEW DELHI, 110019
NATIONAL SERVICE SCHEME
" NOT ME BUT YOU "

YUVA CHAPTER

Dr. Kanwal Jeet Singh
Convenor,
YUVA Chapter

Yuva Chapter is the student wing of Young Indians, an integral part of the Confederation of Indian Industry (CII). Ramanujan Yuva Chapter, established in 2018 provides its members an opportunity to interact and network with successful entrepreneurs and professionals from diverse backgrounds.

Ms. Isha Gangwani
Coordinator,
YUVA Chapter

The YUVA Chapter of Ramanujan College played an active role in organising Model G20 on 15th April, 2023 along with four other YUVA Chapters of Delhi and international students from G20 nations from World Organisation of Students and Youth. Model G20 2023 was a one-of-its-kind initiative which was designed to replicate the workings of the G20, an international forum consisting of 20 of the world's largest economies. The conference was centred around the theme "Lifestyle for Environment" provided an opportunity for delegates to discuss innovative solutions and policies that promote sustainable lifestyles and protect the environment.

Prof. S.P. Aggarwal at Model G20

On 13th April, 2023, Ramanujan Yuva Chapter organised a seminar in collaboration with BNPS International, which helps students in pursuing a career abroad. The focus was on the admission process, exchange programs, scholarships, and career options.

NATIONAL CADET CORPS (NCC)

The National Cadet Corps (NCC) of India, established in 1948, is a voluntary youth organisation that shapes the nation's future leaders. Under the Ministry of Defence, the NCC instills leadership, discipline, and patriotism in young individuals. With the motto "Unity and Discipline," it has greatly contributed to the personal and professional growth of students across the country.

The NCC consists of three branches – Army, Navy, and Air Force, providing cadets with basic military training. However, it goes beyond that, encouraging them to participate in social activities such as tree plantation, blood donation drives, and disaster relief operations. This multifaceted approach prepares young Indians for potential careers in the armed forces while instilling character, comradeship, discipline, a secular outlook, a spirit of adventure, and ideals of selfless service.

Ramanujan's NCC, introduced in October 2022, serves as an excellent platform for students. With the guidance of Principal Prof. S.P. Aggarwal and the care of Dr. Shikha Singh and Mr. Chandan Kumar Sharma, Ramanujan's NCC (Army Wing) enrolled fifty-four cadets in its first batch. The selection process involved rigorous physical fitness tests, mental fortitude assessments, and evaluations of leadership skills.

The NCC organises various events to inspire and enlighten its cadets. Interactive sessions with distinguished individuals like Colonel Neeraj Sood Shaurya Chakra and JUO Minerva Jaishy provide valuable insights, boosting the cadets' confidence and aspirations. Collaboration with the Sports Department for orientation and sports days showcases the cadets' endurance and dedication.

Participating in events at other institutions strengthens the cadets' competitive spirit and resilience. The NCC's first rank ceremony and farewell for senior cadets provide an opportunity to celebrate their contributions.

Looking ahead, Ramanujan's NCC will continue empowering college students, guiding them to make courageous decisions. The upcoming Combined Annual Training Camp and Annual Training Camp will further develop the cadets' wholesome qualities.

In conclusion, Ramanujan's NCC inspires students to consider careers in the Indian Armed Forces while imparting valuable life skills. It illuminates the minds of students and cadets, revealing unseen aspects of the country and fostering a sense of pride and responsibility in future generations of India.

PROF. MADHU BHATTA'S ARTWORK

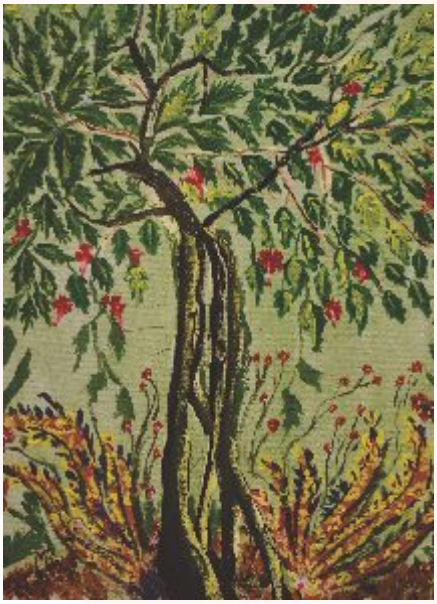

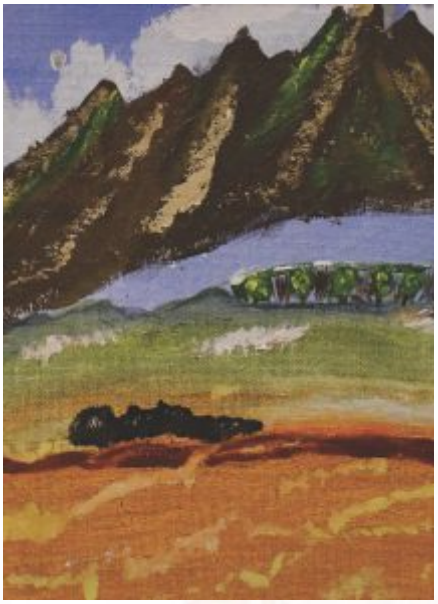

POSTAGE STAMP EXHIBITION ON MARTYRS' DAY

Exhibition of Stamps on Gandhi designed by Mr. Sankha Samanta, one of the country's most prolific stamp artists, on the event of Martyrs' Day, 2023, inaugurated by the Chairman, Dr. Jigar Inamdar

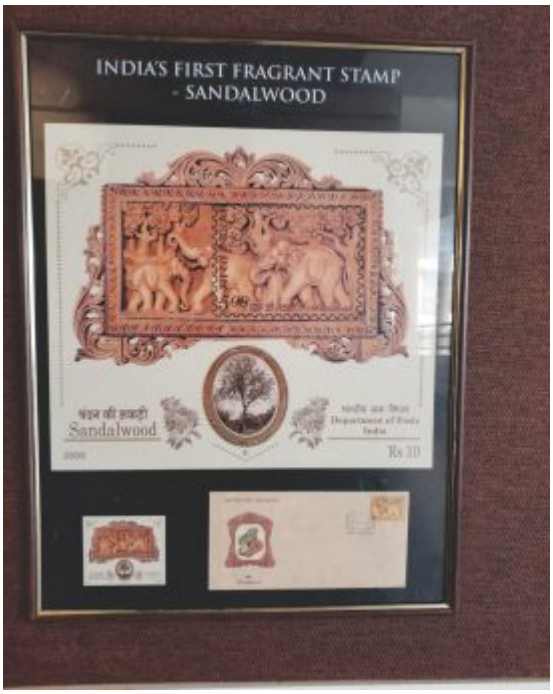

THE NEWSPAPER FEATURES

Ramanujan College frequently makes headlines in newspapers, gaining recognition for its remarkable achievements, innovative initiatives, and impactful contributions to society.

Painting Exhibition at Ramanujan College

New Delhi, The Internal Quality Assurance Cell along with the Department of English, Ramanujan College, University of Delhi put up an unique exhibition of paintings Dr. Madhu Batta in the college foyer. The exhibition showcased the artistic talent of Dr. Madhu Batta who is an Associate Professor in the Department of English in the college but is also a poet and an amateur artist. Dr. Bhatta has no formal training in art but her painting were vibrant with colour and passion. The chief guest on the occasion, Mr. Sankha Samanta a fine artist and a renowned stamp designer appreciated the paintings in the manner in which the artist had expressed herself in a most intimate and intense way. Devoid of any pretensions, the 25 painting on display were an authentic and heartfelt expression of the unalloyed joy that the artist felt in the beauty of nature. The paintings were supported by some self composed poems of the artist that added depth to the display. Being a Sahaja Yoga practitioner, Dr. Batta felt that only because of the workings of spiritual and the Divine, she could paint, that too without any prior learning or training. Having spent a considerable time in the beaches of Bahamas and hills of Nainital, she believes that it is essence of the beauty, tranquility and serenity in nature which she attempted to encapsu in her art. Dr. S.P Aggarwal, the Princ of the College felt that such showcasin talent of a colleague was unique suggested that a component of appreciation should be an integral par college life. He proposed the setting u the Ramanujan College School of F Arts with the objective of crea awareness and providing training tow both the visual and performing Following all the Covid 19 protoco large number of faculty members, b teaching and non teaching, viewed exhibition and congratulated Dr. Ma Batta for this enriching experience.

of Ramanujan College felicitated for publishing in Scopus and Web of Science indexed Journals

research papers in these accredited journals within a span of one year after the announcement of this scheme. For this commendable achievement of the faculty members, the IQAC organized a formal Felicitation Ceremony in the college premises on 8th July 2021 in which the researchers were awarded cash prize along with a certificate and a memento.

Dr. T. K. Mishra, Vice Principal, Ramanujan College congratulated all the 22 faculty members for bringing the fame for the college by their quality publications. The award winners included Dr. Anjali Prashad and Ms. Isha Gupta from Department of Economics; Dr. Ashish Kumar Shukla, Dr. Sachin Tomar, Dr. Abhay Pratap Pandey and Dr. Abhishek from Department of Statistics; Dr. Megha Agarwal, Dr. Samit Naggal, Dr. Deepakshi Sharma, Dr. Rajesh Singh and Dr. Virendra Kumar from Department of Mathematics, Dr. D. N. Tiwari and Ms. Divya Bhanot from Department of Applied Psychology, Dr. Kamlesh Kumar Raghuvanshi, Dr. Nikhil Rajput, Dr. Amit Kumar Singh, Ms. Sheetal Singh, Mr. Vipin Rathi, Mr. Arun Agarwal and Mr. Subodh Kumar from Department of Computer Science; and Dr. Vibhash Kumar and Ms.

Highlights

INTERNATIONAL WEBINAR ON RELEVANCE OF GURU BANI IN CONTEMPORARY WORLD

New Delhi, Focus News, Centre for Human Rights Studies in collaboration with the Department of Punjabi, Ramanujan College, University of Delhi organised an international Webinar on the occasion of Guru Nanak Jayanti on November 30, 2020. The Webinar was organised on the theme "Relevance of Guru Nanak Bani in Contemporary World," with Focus News as its Media Partner. The Webinar was presided over by Prof. Rawail Singh, Department of Punjabi, University of Delhi; Ms. Kamalpreet Kaur, Freelance Journalist and Writer; and Dr. Gurinder Singh Mann, Director, Global Institute of Sikh Studies, New York (USA).

The Webinar began with the welcome note by Dr. S.P. Aggarwal, Principal, Ramanujan College. In his address, Dr. Aggarwal mentioned the need to revive the historical thought and philosophy of Guru Nanak. He emphasized that the thought process of Guru Nanak can bridge the ideas of that time period with the present day life long learners.

कोरोना के समय में मस्तिष्क को संतुलित रखने का दिया मंत्र

■ वेबिनार का किया आयोजन

नई दिल्ली, 4 मई (नवोदय टाइम्स) : कोरोना काल में निराशा की भावना से निजात के लिए रामानुजन कॉलेज के एनएसएस द्वारा कोरोना संकट के समय मानसिक संतुलन कैसे बिठाएं विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। इसमें डीयू सहित कई विदेशी छात्रों ने शामिल होकर अपनी समस्या के समाधान से लाभान्वित हुए। इस वेबिनार में मुख्य वक्ता मनोवैज्ञानिक और माइंड रिलैक्सेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम के कोच डॉ शुभम ने मानसिक तनाव के कारण, समाधान, प्रभावों और इससे दूर रहने के तरीकों के बारे में विस्तार से अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि हम छोटी-छोटी बातों को जैसे - खुश रहकर, म्यूजिक से समय पर ध्यान, अपने पसंदीदा कार्य कर, किताबें पढ़कर अपने अंदर उत्पन्न हो रही नकारात्मकता को खत्म कर अपने जीवन को सकारात्मक बना सकते हैं। उन्होंने जैसे विचार वैसा व्यवहार को चरितार्थ करते हुए सकारात्मक रहने पर जोर देने की सलाह दी।

कॉलेज प्रिंसिपल प्रो. एसपी अग्रवाल ने कई महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला। जैसे आजकल कहां क्या चल रहा है, इस पर ध्यान न दें बल्कि अपना और अपने परिजनों का ध्यान रखें। समय से और स्वच्छ भोजन खाएं। अंत में एन. एस. एस. के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. आलोक रंजन पांडेय ने सभी का धन्यवाद देते हुए कहा कि कोरोना से लड़ाई हम मानसिक रूप से अच्छी तरह कर सकते हैं।

मनी लॉन्ड्रिंग मामला: शिवेंद्र सिंह की अंतरिम जमानत याचिका खारिज

डीयू ने ऑनलाइन कक्षाएं 16 मई तक स्थगित की

Highlights

An Emphatic Journey of Transformation: From Traditional to Tech Based Learning

Dr. S.P. Aggarwal
Principal
Ramanujan College and Director, Teaching Learning Centre, Ramanujan College

Dr. Vibhash Kumar
Assistant Professor Ramanujan College and Assistant Director, Teaching Learning Centre, Ramanujan College

We will remember the pandemic of 2020 as a year that brought miseries in the life of people pervasively. It will also be known as a year that challenged the status-quo and shattered all traditional conventions across. History then will see this year as a year of contrast and mixed emotions. The academic community, like all other communities and sectors, experienced the shock of their lives. The time to consult, review, and devise new pedagogies was not there. The acquired knowledge to tackle the mayhem lied with a few. It had to be the responsibility of those few to deliver at the crunch time. The Teaching Learning Centre (TLC), Ramanujan College, working under the aegis of the coveted scheme of Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching (PMMMNMTT) under the Ministry of Education (erstwhile MHRD) knew all along that this was the time to fill the boots and justify the creation of such centres of education.

When the academic community of the country were finding themselves amidst a storm, we at TLC were devising ways to reach out to the maximum number of teachers and equip them with the desired knowhow to propel them to the challenging path ahead. The journey started with conceiving a plan to train teachers wanted to learn the new paradigms. In the process, our team received numerous queries, some teachers even lacked the necessary computer skills, and we employed handholding. Essential information, like creating accounts, confirming registrations through e-mails, logging into the platform with personalised information, submitting quizzes and assignments, were provided to the educators of all ages and levels. More than anything else, this gave us a lot of satisfaction that we were headed in the right direction.

A small handholding and a necessary information technology (IT) knowhow to the educators today will help them in creating marked differences tomorrow. This pandemic did not leave any choice for academics, but our experience suggests that this has been a great learning experience for them. We decided to roll out diverse programmes that will aid the teachers in justifying their roles during the crisis. We had realised that the learning experience of organising online programmes was immense and the value addition at par with all the residential programmes. The participant's feedbacks suggest that they were hugely benefitted by attending training programmes in online mode. With the wherewithal to conduct online training programmes, we have shown the path to the academic community that the teaching-learning process can be initiated and mastered in an online mode with the required technological support. The world is now advocating about the blended methodology of teaching-learning, and we have shown that how a teacher can effectively put to use the technology and not be weary of the train more than 60,000 beneficiaries. This number, when compared with the traditional residential programmes of TLC, Ramanujan College in the past three years (trained teachers from November 2017- March 2020 = 2061) showed an exponential rise at a comparatively much lesser financial burden. This comparison is not just in numbers; the feedback that we have received from the participants has been full of appreciations. TLC, Ramanujan College, also has presented a model of training teachers with equal emphasis on the service motive. We have decided that all the video resources generated will be free for any learner on our 'Ramanujan College' YouTube channel. As we write down this piece of information, we have 5.23 million views on our YouTube channel, marking a strong academic presence.

The honourable prime ministers' vision under the Atmanirbhar Bharat programme helped us a great deal in promoting online education in the country. Our country, with the motto of self-reliance, intends to impart quality education to all. The National Education Policy also talks a great deal of transforming future challenges into opportunities that can be achieved by developing a robust education system. In this wake, we at TLC, Ramanujan College, are working incessantly to make this vision a reality by reaching out to educators who will act as agents of self-reliant India. The majority of our programmes focused on the online teaching-learning environment, few programmes focused on research tools, and some programmes were specifically on creating MOOCs, taking forward the

FOCUS NEWS

Inaugural Session - Two weeks Interdisciplinary National Refresher Course on "New Paradigms in Commerce and Management"15th September , 2021

New Delhi, Focus News: The Teaching Learning Centre (Ministry of Education) , Ramanujan College in collaboration with the Indian Accounting Association, NCR Chapter launched a Two weeks National Interdisciplinary Refresher Course on 'New Paradigms in Commerce and Management' through virtual platform from 15 th -28 th September, 2021 at 3:00 pm (15 th September, 2021) . The course had registrations of around 200 participants, which includes academicians, researchers and faculty members from all over India. The Chief Guest of the Inaugural session Prof.I.M.Pandey, Former Dean, IIM, Ahmedabad, Former Professor, Department of Commerce, DSE, University of Delhi, Former Vice President & Dean, School of Management, AIT, Thailand, was welcomed by Prof. S.P. Aggarwal, Principal Ramanujan College and Dr J.L. Gupta, Programme Director, Member University Court and Finance Committee, University of Delhi. Dr J.L. Gupta along with Dr Rekha Dayal (Programme Convenor) introduced the topic to the audience highlighting the relevance of the Course for teachers and researchers. Dr J.L.Gupta discussed in brief the different aspects to be covered in the Refresher Course. Prof.S.P.Aggarwal in his address stated the different innovative programmes undertaken by TLC Ramanujan College and Ramanujan College, University of Delhi. Prof. Madhu Vij, Programme Advisor, Former Faculty, Faculty of Management Studies, University of Delhi in her discourse gave a preview of the essence of the Course. Chief Guest of the Inaugural session Prof.I.M.Pandey highlighted the true meaning of the word Paradigm.He suggested that a change is required in the structure of the HEIs and the mindset of the educators along with the administrators.

Special Guest-Prof. Jauhri Lal Gupta, Former Vice Chancellor GGU Central University, Principal Shri Ram College of Commerce (SRCC) DU, Professor, MDI Gurugram enlisted the steps which need to be undertaken to cope with the changing nature of the work in different sectors of the economy. Guest of Honor-Prof. Alok Kumar Chakrawal, Vice-Chancellor, Guru Ghasidas University, Bilaspur, Chhattisgarh, graced the occasion and discussed how mentorship, care and teaching must never be compromised by an educator.The session concluded with a vote of thanks proposed by Organising Secretary Dr. Anjali Gupta.

New Delhi, Sunday 25 June 2023 11

Ramanujan College in collaboration with SKYRIA celebrated International Yoga Day

New Delhi, Focus News: Ramanujan College in collaboration with SKYRIA (activewear for women) celebrated International yoga day. Event was organised by Cultural Committee of College and School of Happiness. Celebration commenced with lightning of lamp by the Professors and the Guests. After which Prof. Madhu Kaushik and Prof. Madhu Batta welcomed and addressed the audience.

First part of the event included session on Sahaj Yoga by Dr. Mithila. She was first felicitated by Prof. K. Latha followed by her session. Students and faculty participated in this and learned the meaning of it and

a dance performance on Ganesh Vandana. After which, another session on Yoga was taken by Ms. Nazneen Fardoz, who is a professional yoga instructor. She was felicitated by Prof. Madhu Kaushik. During her session, she discussed and demonstrated the importance of different yoga asanas. Many students came forward to be a part of it.

Later, DNA-the dance society and PANACHE-the fashion society gave their performances in SKYRIA'S activewear which was a delightful and entertaining. To make the event more engaging for students, yoga/dance competition was organised alongside some fitness challenges were also

WEBINAR ON " THE ART OF ENTREPRENEURSHIP"

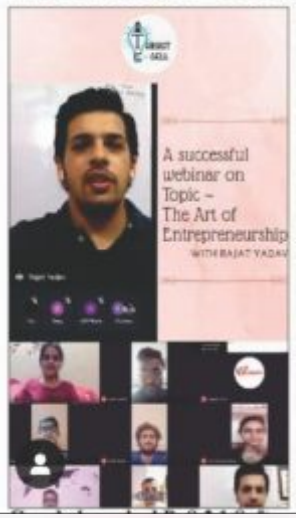

New Delhi, Thrust: The Entrepreneurship Cell of Ramanujan College, Delhi University organised a webinar on "The Art Of Entrepreneurship". An astonishing number of registrations were received for the session and around 100 participants attended the session. Kunal Sharma director of the cell delivered the welcoming speech to set the tone of the event, he greeted the audience and prepared the stage for the Guest Speaker Mr. Rajat Yadav, founder of India's First Virtual Incubation Centre and founder and CEO of zaitech technologies private Ltd , was invited as the guest speaker and enlightened budding entrepreneurs by sharing his journey and experience. Mr. Yadav is an alumnus of one of the most prestigious institutions IIT Madras. After completing his civil engineering he chose the unbeaten path of entrepreneurship and provided us with the insights of his journey. His expertise and knowledge in the area of entrepreneurship added a great value to the business sense of all. He discussed everything about startups and the challenges faced by entrepreneurs. He definitely helped increase the chances of startup success of these budding entrepreneurs. He provided the budding and future entrepreneurs with the required guidance and path breaking ideas to lead their way through. His journey of success and hardships from having failed startups to finally succeeding would surely open the future prospects of many. After that he addressed to the room of questions by our audience in a commendable manner. The session turned out to be really interactive and lasted for an hour. His startup Z2P is one of India's largest micro-lending companies. He is also the founder of India's first virtual incubator for entrepreneurship that will be launching soon. He is motivation and inspiration for many students interested in entrepreneurship. The session proved out to be very insightful and knowledgeable. The webinar ended with everyone switching on their videos and extending their vote of thanks to our speaker. The Event was a great success and a real roller coaster of learning and was only successful under the guidance of Dr. S.P. Aggarwal, Principal of Ramanujan College. A special vote of thanks to the convener of the cell Dr. Rajiv Nayan who made the event possible.

THE NEWSPAPER FEATURES

Highlights

Sensational Performance by Abhijeet Srivastava on the final day of the cultural festival JOSH x SEQUOIA of Ramanujan College

New Delhi, Focus News: The final day of the 3-day cultural festival JOSH x SEQUOIA organised by the Cultural Committee of Ramanujan College and ENACTUS Ramanujan, started with a spirit of reminiscence of childhood and optimism. ENACTUS Ramanujan planned a series of events – Kingdom of Kids and a workshop-cum-speaker session under Project Parvah. The Kingdom of Kids was designed as a fun activity for the children of the Tara and Prajna Foundation (NGO). The extension programme involved fun-filled activities like musical chair, dumb charades which the children enjoyed thoroughly. The students spent quality time with the children. Under the flagship - 'Project Parvaah', an art therapy workshop was conducted by counselling psychologist, Kritika Makkar. The workshop gave students an opportunity to experience the journey of self-expression by using art. TARK, debating society organised Bilingual conventional debate competition on theme, 'Modern Understanding of Nationalism'. The chief guest of the event was Dilip Pandey, the chief whip, Delhi Assembly, celebrated author and national spokesperson of AAP. He recited an inspiring piece of poetry and gave welcome speech to the students.

IGDTU and Maitreyi College were announced to be the winners of Panache's fashion competition 'Flamboyance' achieving 1st and 2nd position respectively. While the participants from IGDTU and Hindu College were awarded prizes for the Best Female Model and Best Male Model respectively.

In the afternoon, the stage dazzled with orchestrated band performances. The audience was moved by the groovy beats and guitar. The lead bands, Shivranjini & Aurum performed melodious & famous songs like 'Zara Sa' by K.K., 'Numb' by Linkin Park and many memorable rock classics from the 'Rock On' album.

Finally, the whole festival was engrossed with an intoxicating performance by our special guest artist Abhijeet Srivastava, known for his songs, 'chaashni' (Bharat) and 'aap se milkar' (Aandhadhun). The live performance turned into visual feat with mesmerising lights. The artist captivated the attending mass with his catchy, popular hit songs, making the event even more memorable.

Ramanujan college in collaboration with Bahai House of Worship organized a cultural event named VASUDHAIV KUTUMBUKAM

New Delhi, Focus News: Ramanujan college in collaboration with Bahai House of Worship organized a cultural event named VASUDHAIV KUTUMBUKAM. It is a Sanskrit phrase found in Hindu texts such as the Maha Upanishad, which means "The World Is One Family" on 31 march 2023 at 10:30 am at Bahai House of Worship, Lotus temple, New Delhi, Auditorium 1. Prof. S.P. Agarwal, principal Ramanujan College motivated the cultural committee to organize this event. It commenced with melodious Vandana for seeking blessings and grace of almighty. It was sung by Shivranjani, Music Society of Ramanujan College. It was indeed a beautiful and melodious composition written by the Associate Professor of the Department of Hindi- Dr. Madhu Kaushik.

The anchors of the event Miss Himani, President Cultural Committee, and Mr. Sudhish, President of First Cut did anchoring for the event. Nilofar was invited on behalf of the public information Bahai workshop to speak about the bond with Ramanujan college. She has shared some details about their vision and mission focusing on that for them everyone is equal. She welcomed everyone and then the event finally started. After this Dr. J.N. Chaudhary was invited on stage to say a few words to address the audience. He spoke about the importance of music and dance to our lives and how it plays a very important role in our mental and physical well-being. Dr. Madhu Kaushik was invited afterward and with the right words, she said that the G20 theme Vasudhaiv Kutumbukam has been taken. She explained how it is important for us and congratulated everyone for being part of it. Various colleges of the University of Delhi have participated in this with their cultural societies and dance forms of different Indian states have been performed like Kuchipudi, kathak, Kathakali, Bharatanatyam, and Odissi. Students from Janki Devi Memorial College, PGDAV College, Hindu College, and Ramanujan College have presented beautiful musical choirs and everyone was all praised for those performances. Shastriya Sangeet, different types of ragas, and Devotional tunes were performed. Ayush, Dolly, Khushi, Nishtha, and Abhishek did an amazing job with the support work for the event.

Following these students of famous garus performed tabla performance and sarod performance. Everyone was awestruck and it was amazing. Students also performed a single musical performance. The amazing day came to an end with the last performance by the Bhangra Regiment, Bhangra Society of Ramanujan College.

डीयू : रामानुजन कालेज ने वार्षिक उत्सव मनाया

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 25 मार्च।

कोरोना काल के बाद पहली बार दिल्ली विश्वविद्यालय का रामानुजन कालेज ने अपने वार्षिक उत्सव - 'जोश' का आयोजन किया। तीन वर्ष बाद हुए इस उत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि एनएसडी के निदेशक प्रोफेसर रमेश गौर ने किया। इस मौके पर प्राचार्य प्रोफेसर एसपी अग्रवाल के अलावा शिक्षाविद् डाक्टर के लता और मधु कौशिक (सांस्कृतिक समिति, संयोजक) ने भी विचार रखे। रमेश चंद्र गौर अपने वक्तव्य में भारत की संपन्न संस्कृति के महत्व से सबको अवगत कराया। उनका कहना था कि यह हमारी बदकिस्मती है की यह हस्तलीपियां जिस भाषा में लिखी गई है उस भाषा को आज की पीढ़ी नहीं जानती और न हम जानने की कोशिश करते है और न ही साधन है।

FOCUS NEWS

Day Two Ramanujan College cultural festival - Josh x Sequoia

THE NEWSPAPER FEATURES

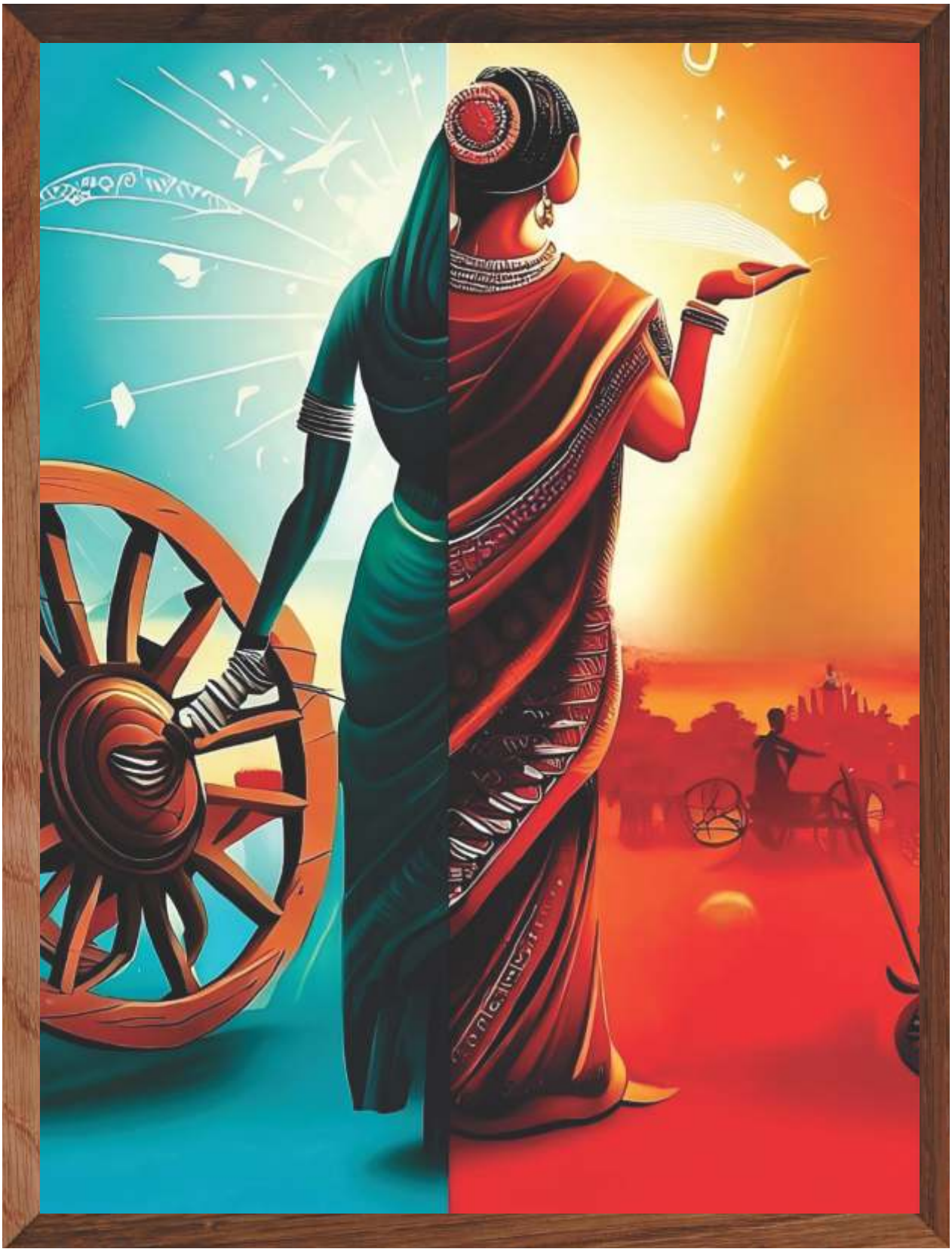

Illustrated by Samar Khan, Second Year B.A.(Hons) Philosophy

Painting by Prof. Madhu Batta

विश्वगुरु भारत

Photograph by Ayan Hamid, Second Year, B.Sc.(H) Statistics

Ramanujan College

(Re-accredited Grade A++ by NAAC)

CR Park Main Road, Block H, Kalkaji, New Delhi-110019
Tel:26430192 | Fax: 26421826
Email: ramanujancollege2010@gmail.com
Website: https://ramanujancollege.ac.in/

Production: Sudha Printing Press, New Delhi Tel.: 011-41685621